सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHI/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 145, नई दिल्ली, रविवार 03 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आदत किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती, अति होने पर हमेशा कष्टदायक होती है।

03 विधानसभा को ई विधानसभा बनाने का कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ
06 नीति से अभ्यास तक: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पांच वर्ष
08 झारखंड के सरायकेला जिले में पुनः ऐमोनियम नाइट्रेट बरामद

खबर का असर

पातडां पंजाब दोनों ड्राईवर भाइयों को मिला इंसाफ

परिवहन विशेष न्यूज

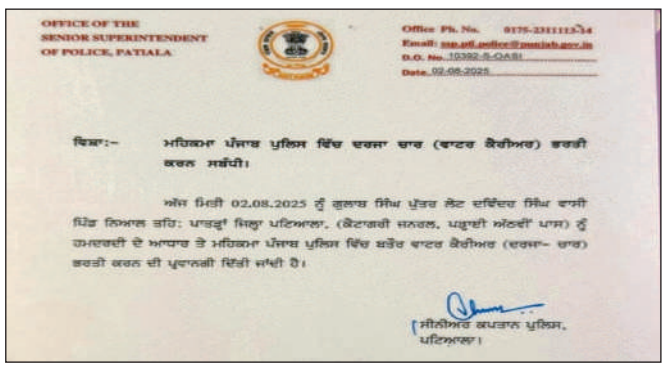

पातडां पंजाब दोनों ड्राईवर भाइयों को इंसाफ मिला, सरकार और प्रशासन झुका, दोनों बच्चों को दर्ज़ा चार में नौकरी परिवार को 4-4 लाख रुपए का मुआवजा व पंजाब सरकार द्वारा 50-50 लाख रुपए देने की प्रक्रिया जल्द पूरी करने की उम्मीद। परंतु हम इसे बहुत अच्छा नहीं बोल सकते क्योंकि इसके लिए बहुत लंबा और दर्दनाक संघर्ष लड़ना पड़ा, परंतु परिवार के लिए इतना जरूरी था। आज हम कम से कम उन दोनों भाइयों की आत्मा के समक्ष शर्मिंदा नहीं हैं कि उनके पार्थिव शरीर को रोककर इंसाफ नहीं लिया।

राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति

दिनांक 30 जुलाई एवं 1 अगस्त के परिवहन विशेष समचार पत्र में प्रकाशित खबरें

कॉटेज एंपोरियम के कर्मचारी वेतन के इंतजार में, आख़िर कब मिलेगा उन्हें वेतन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। एक ऐसा संस्थान जिसके कारण देश के लाखों कलाकारों को रोजगार मिला और हजारों लोगों को नोकरी मिली उनके परिवार पले बच्चों का भविष्य संवारने में सहायता मिली यह देन थी काँग्रेस सरकार की क्योंकि हमारे देश मे ऐसे कलाकार जिनकी कलाकारी को देश ने राष्ट्रीय पुरुष्कार देकर सम्मानित किया और उनके द्वारा बनाये गये प्रोडक्ट को कोटज के द्वारा देश विदेश में भेजा गया इस कार्य से कांग्रेस की देश के प्रति देश भक्ति नजर आती है। काँग्रेस के राज में युवाओं को नोकरियों की कमी नही थी। काँग्रेस ने बहोत से ऐसे संस्थान बनाये जिनमे देश लाखों युवाओं को राजगार मिला।

परन्तु 2014 के बाद वो सभी संस्थान धीरे धीरे बंद होते गये और लोग बेरोजगार होते गये। उसी श्रृंखला में कई पीएसयू भी बंद किये जा रहे हैं। जबकि सरकार की जिम्मेदारी थी उनको आपातकाल में सहायता करने की क्योंकि इन पीएसयू से देश को विदेशी मुद्रा मिलती है। जिससे देश आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।

परन्तु मोदी सरकार ने जितने भी संस्थान कोंग्रेस ने खड़े किये उनको बर्बाद करने की मुहिम चलाई हुई है मोदी सरकार ना तो देश हित मे है और ना ही देश के नागरिकों के हित मे जैसा कि आजकल आप वर्तमान सरकार के बारे में सुन व देख रहे होंगे।

खैर सीसीआइसी को सरकार ने दो वर्ष पूर्व आर्थिक सहायता प्रदान करने का वादा किया था जोकि आजतक पुरा नही किया गया। जबकि केन्द्र सरकार ने 2022 व 23 में करीब 22000 करोड़ रुपये देश के हैंडीक्राफ्ट व हैंडलूम को बढ़ावा देने के लिये मंजूरी दी थी फिर 23-24 में भी 25000 करोड़ की मंजूरी दी मगर वस्त्र मंत्रालय ने कॉटेज को केवल 500 करोड़ की आर्थिक सहायता तक प्रदान नही की जिसके कारण आज यहां के कर्मचारी व कॉटेज से जुड़े वो सभी कलाकार जिनके द्वारा बनाई गई नायाब वस्तुएं यहां बिक्री के लिये लाई जाती हैं अपना जीवन यापन बहोत ही कठिनाई से कर रहे हैं।

मेरा देश के प्रिंट मीडिया डिजिटल मीडिया शोशल मीडिया सभी से निवेदन है कि हमारी आवाज बने और देश की सरकार के कानों तक हमारी आवाज पहुंचाये अधिक जानकारी के लिये सीसीआइसी ऑफ इण्डिया जवाहर व्यापार भवन जनपथ कनॉट प्लेस नई दिल्ली पर जाकर कर्मचारियों से जानकारी ले सकते हैं। और दिये गये लिंक पर कोटज की जानकारी प्राप्त करें।

यह कटिंग पिछले वर्ष की है।

'कॉटेज इंपोरियम के कर्मचारियों का वेतन भुगतान जल्द'

विस, नई दिल्ली: जनपथ एरिया में सेंट्रल कॉटेज इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन (CCIC) इंपोरियम के कर्मचारियों के वेतन-भत्ते मिलने में देरी के मुद्दे पर टेक्सटाइल्स मिनिस्ट्री की नजर है और अगले कुछ महीनों में पूरा बकाया क्लियर करने का प्रयास हो रहा है। मिनिस्ट्री के एक सीनियर अधिकारी ने यह बात कही। टेक्सटाइल्स मिनिस्ट्री के तहत आने वाले CCIC के कर्मचारियों का कहना है कि उनकी 5 महीनों की सैलरी बकाया है और उन्हें मेडिकल अलाउंस, ओवरटाइम और दूसरे भत्ते भी नहीं मिल रहे हैं। कर्मचारियों का दावा है कि इस मामले में वे मंत्रालय से कई बार गुहार लगा चुके हैं, लेकिन कोविड महामारी से जुड़ी दिक्कतों का हवाला देकर उनकी शिकायत दरकिनार कर दी गई।

मिनिस्ट्री के एक सीनियर अधिकारी ने भरोसा दिया

राष्ट्रीय राजमार्गों पर टोल प्लाज़ा के द्वारा हो रही अवैध वसूली एवं भ्रष्टाचार के विरुद्ध चेतावनी : डॉ. यादव

परिवहन विशेष न्यूज

पटना। देशभर के राष्ट्रीय राजमार्गों पर स्थित एनएचएआई (राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण) के अधीन टोल प्लाज़ा इन दिनों भ्रष्टाचार और अवैध वसूली का अड्डा बन चुके हैं। ट्रक मालिकों, चालकों, वाहन उपभोक्ताओं और आम यात्रियों से अवैध तरीके से डबल टोल, फास्टैग के बावजूद नकद वसूली, और रसीद रहित लेनदेन जैसे गंभीर अपराध रोजाना हो रहे हैं।

विशेषतः ओडिशा, झारखण्ड, बिहार, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, राजस्थान, तमिलनाडु आदि राज्यों में बड़ी संख्या में ऐसे टोल बूथ कार्यरत हैं जिनकी अनुबंध अवधि समाप्त हो चुकी है, फिर भी टोल की वसूली जारी है — जो सीधे-सीधे जनता के साथ धोखाधड़ी है।

मुख्य समस्याएं:

फास्टैग लगे वाहनों से भी बहाने बना नकद सह दोहरी वसूली व सुनवाई शून्य।

टोल बूथों के बीस किलोमीटर दायरे वाले स्थानीय छूट के लिए भी स्थानीय अधिकारीयों द्वारा वसुली जारी।

एक ही दिशा में कई बार टोल वसूलना पूर्णतः अमर्यादित व असंवेधानिक।

टोल राशि की मनमानी दरें, बिना स्पष्ट सूचना बोर्ड के व इन सुचना पट्ट में विसनगतियाँ सामान्य रूप से देखि जाती है।

ट्रक चालकों से दुर्व्यवहार, मारपीट, धमकी व असम्मान निरंतर जारी व आम बात।

निर्माणाधीन, जर्जर व दुर्घटनाओं को आमंत्रण देने वाली सड़कों पर भी बेशर्मी से टोल वसूली जारी है।

प्रमाण और मीडिया रिपोर्टें:

मार्च 2025 में NHAI ने स्वयं स्वीकार किया कि 14 से अधिक टोल एजेंसियों को अनुबंध उल्लंघन और धोखाधड़ी के चलते ब्लैकलिस्ट किया गया है।

केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु और यूपी के उच्च न्यायालयों ने कई टोल बूथों पर वसूली को असंवैधानिक ठहराया है इसके पश्चात भी एन एच ए आई की प्रतिक्रिया शून्य है।

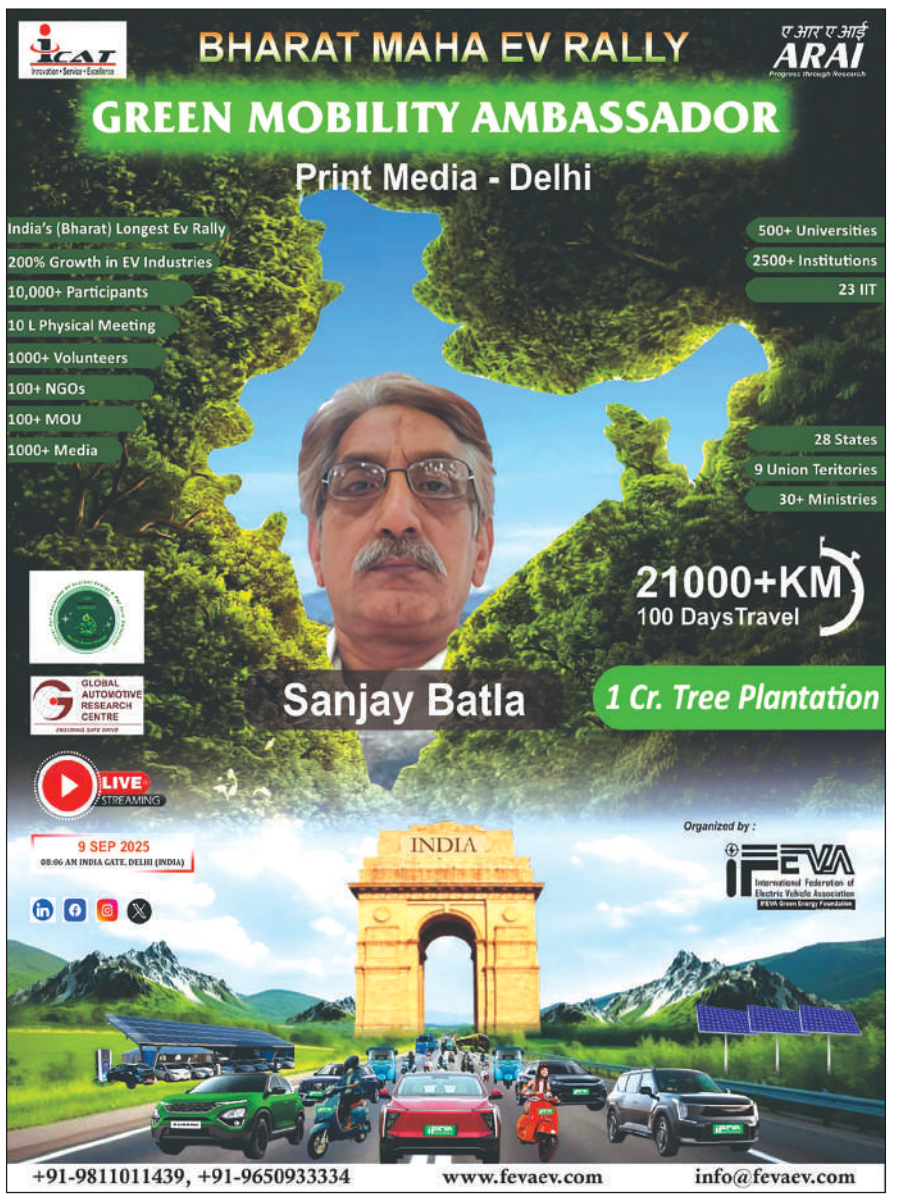

हमारी मांगें:

1. एनएचएआई के सभी टोल बूथों की स्वतंत्र ऑडिट जांच कराई जाए एंव 60% टोल वसुली दर (टोल फी) कम किये जाएं

2. फास्टैग प्रणाली को सार्थकता सह पूरी तरह डिजिटल व पारदर्शी बनाया जाए।

3. जिन टोल प्लाज़ा की लागतों की वसूली हो चुकी है, उन टोल बूथों को तत्काल हटाया जाए, जिनकी संख्या दर्जनों में है।

4. सभी टोल पर सीसीटीवी फुटेज की उपलब्धता सार्वजनिक की जाए।

5. ट्रक चालकों, ट्रक मालिकों और यात्रियों की शिकायतों हेतु क्रियाशील हेल्पलाइन और पोर्टल अनिवार्य किया जाए जो इनकी जवाबदेही तय करें।

6. टोल पर्ची के सीमाओं तक के सारे दुर्घटनाओं, जान माल की जिम्मेदारी एन एच ए आई द्वारा वहन किये जाएँ (इंस्यूर्ड सीमा) के तहत।

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा – ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी

डॉ. राजकुमार यादव, राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा है कि "यदि सरकार और एनएचएआई शीघ्र सुधारात्मक कदम नहीं उठाते, तो देशव्यापी सड़क बंद और आंदोलन छेड़ा जाएगा। हम किसी भी कीमत पर ट्रक चालकों, ट्रक मालिकों, ट्रांसपोर्टरों और सड़क यात्रियों का शोषण नहीं होने देंगे। इन सभी के हित में संघर्ष के लिए हम प्रतिबद्ध है"

डॉ. राजकुमार यादव
राष्ट्रीय अध्यक्ष – "उफ्तत्सा" राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा – ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी

दिल्ली में 2 से 31 अगस्त तक ट्रैफिक प्रतिबंध, इन रास्तों पर जानें से बचें; पुलिस ने जारी की एडवाइजरी

दिल्ली में अरुण जेटली स्टेडियम में दिल्ली प्रीमियर लीग 2025 के मैचों के कारण 2 जुलाई से 31 अगस्त तक ट्रैफिक प्रतिबंध रहेगा। बहादुर शाह जफर मार्ग और जेएलएन मार्ग पर डायवर्जन होगा। यात्रियों को सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने और वैकल्पिक मार्गों की तलाश करने की सलाह दी गई है। पार्किंग केवल लेबल वाली गाड़ियों के लिए ही उपलब्ध होगी।

नई दिल्ली। अरुण जेटली स्टेडियम में होने वाले दिल्ली प्रीमियर लीग 2025 के तहत होने वाले मैचों के मद्देनजर दो जुलाई से लेकर से 31 अगस्त तक दोपहर दो बजे से रात 12 बजे तक ट्रैफिक पर प्रतिबंध रहेगा। इस कारण यात्रियों को यात्रा के दौरान परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर बहादुर शाह जफर मार्ग और जेएलएन मार्ग से यात्रा करने से यात्रियों को बचने की सलाह दी है। प्रीमियर लीग के कारण स्टेडियम के पास सामान्य पार्किंग की व्यवस्था नहीं है। लोगों को ज्यादा से ज्यादा सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करने की सलाह दी गई है।

डायवर्जन और प्रतिबंध

बहादुर शाह जफर मार्ग और जेएलएन मार्ग पर मार्ग ट्रैफिक डायवर्जन और प्रतिबंध रहेगा।

दरियागंज से बहादुर शाह जफर मार्ग और गुरु नानक चौक से आसफ अली रोड तक किसी भी भारी गाड़ी और बस का सड़क पर चलने की अनुमति नहीं होगी।

राजघाट से दिल्ली गेट होते हुए, कमला मार्केट, जेएलएन मार्ग (दोनों कैरिज वे)

तुर्कमान गेट से दिल्ली गेट तक आसफ अली रोड पर

दिल्ली गेट से राम चरण अग्रवाल चौक तक, बहादुर शाह जफर मार्ग (दोनों कैरिज वे)

मैच के दिन दोपहर 12 बजे से लेकर रात 12 बजे इस सड़क का इस्तेमाल करने से बचने की सलाह दी गई है, क्योंकि मैच के कारण आसपास भारी भीड़ जुटने की आशंका है।

यहां से करें प्रवेश

गेट संख्या 1 से गेट संख्या 8 तक बहादुर शाह जफर मार्ग की तरफ से प्रवेश किया जा सकेगा।

गेट संख्या 10 से 15 तक अंबेडकर स्टेडियम बस टर्मिनल के बगल से जेएलएन मार्ग से प्रवेश किया जा सकता है।

गेट संख्या 16 से 18 तक बहादुर शाह जफर मार्ग की तरफ से जाया जा सकता है।

यहां रहेगी पार्किंग की व्यवस्था

माता सुंदरी रोड, राजघाट पावर हाउस रोड और वेलोड्रोम रोड पर निश्शुल्क पार्किंग की व्यवस्था है।

स्टेडियम के पास आम जनता के लिए कोई पार्किंग नहीं है। केवल लेबल लगे सीमित गाड़ियों के लिए पार्किंग है।

बहादुर शाह ज़फर मार्ग व जेएलएन मार्ग से बचें

स्टेडियम के पास सामान्य पार्किंग नहीं है

चुने गए गेट का उपयोग करें व लेबल पार्किंग नियमों का पालन करें

असुविधा से बचने के लिए यात्रा की योजना पहले से बनाएं।

शालीग्राम

शालीग्राम एक प्रकार का जीवाश्म पत्थर है, जिसका प्रयोग परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में भगवान विष्णु जी का आह्वान करने के लिए किया जाता है। शालीग्राम आमतौर पर पवित्र नदी की तली या किनारों से एकत्र किया जाता है। शिव भक्त पूजा करने के लिए शिव लिंग के रूप में लगभग गोल या अंडाकार शालिग्राम का उपयोग करते हैं।

वैष्णव (हिन्दू) पवित्र नदी गंडकी में पाया जाने वाला एक गोलाकार, आमतौर पर काले रंग के एमोनोइड जीवाश्म को भगवान विष्णु के प्रतिनिधि के रूप में उपयोग करते हैं। शालीग्राम को प्रायः 'शिला' कहा जाता है। शिला शालिग्राम का छोटा नाम है जिसका अर्थ ₹पत्थर₹ होता है।

शालीग्राम भगवान विष्णु का ही एक प्रसिद्ध नाम है। इस नाम की उत्पत्ति के सबूत नेपाल के एक दूरदराज़ के गाँव से मिलते है जहां विष्णु को शालीग्रामम्के नाम से भी जाना जाता है। हिंदू धर्म में शालीग्राम को सालग्राम के रूप में जाना जाता है।

शालीग्राम का सम्बन्ध सालग्राम नामक गाँव से भी है जो गंडक नामक नदी के किनारे पर स्थित है तथा यहां से ये पवित्र पत्थर भी मिलता है।

पद्मपुराण के अनुसार गण्डकी अर्थात नारायणी नदी के एक प्रदेश में शालिग्राम स्थल नाम का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है; वहाँ से निकलनेवाले पत्थर को शालिग्राम कहते हैं। शालिग्राम शिला के स्पर्शमात्र से करोड़ों जन्मों के पाप का नाश हो जाता है। फिर यदि उसका पूजन किया जाय, तब तो उसके फल के विषय में कहना ही क्या है; वह भगवान के समीप पहुँचाने वाला है।

बहुत जन्मों के पुण्य से यदि कभी गोष्पद के चिह्न से युक्त श्रीकृष्ण शिला प्राप्त हो जाय तो उसी के पूजन से मनुष्य के पुनर्जन्म की समाप्ति हो जाती है।

पहले शालिग्राम-शिला की परीक्षा करनी चाहिये; यदि वह काली और चिकनी हो तो उत्तम है। यदि उसकी कालिमा कुछ कम हो तो वह मध्यम श्रेणी की मानी गयी है। और यदि उसमें दूसरे किसी रंग का सम्मिश्रण हो

तो वह मिश्रित फल प्रदान करने वाली होती है। जैसे सदा काठ के भीतर छिपी हुई आग मन्थन करने से प्रकट होती है, उसी प्रकार भगवान विष्णु सर्वत्र व्याप्त होने पर भी शालिग्राम शिला में विशेष रूप से अभिव्यक्त होते हैं।

जो प्रतिदिन द्वारका की शिला-गोमती चक्र से युक्त बारह शालिग्राम मूर्तियों का पूजन करता है, वह वैकुण्ठ लोक में प्रतिष्ठित होता है।

जो मनुष्य शालिग्राम-शिला के भीतर गुफ़ा का दर्शन करता है, उसके पितर तृप्त होकर कल्प के अन्ततक स्वर्ग में निवास करते हैं।

जहाँ द्वारकापुरी की शिला- अर्थात गोमती चक्र रहता है, वह स्थान वैकुण्ठ लोक माना जाता है; वहाँ मृत्यु को प्राप्त हुआ मनुष्य विष्णुधाम में जाता है।

जो शालग्राम-शिला की क़ीमत लगाता है, जो बेचता है, जो विक्रय का अनुमोदन करता है तथा जो उसकी परीक्षा करके मूल्य का समर्थन करता है, वे सब नरक में पड़ते हैं। इसलिये शालिग्राम शिला और गोमती चक्र की ख़रीद-बिक्री छोड़ देनी चाहिये।

शालिग्राम-स्थल से प्रकट हुए भगवान शालिग्राम और द्वारका से प्रकट हुए गोमती चक्र- इन दोनों देवताओं का जहाँ समागम होता है, वहाँ मोक्ष मिलने में तनिक भी सन्देह नहीं है।

द्वारका से प्रकट हुए गोमती चक्र से युक्त, अनेकों चक्रों से चिह्नित तथा चक्रासन-शिला के समान आकार वाले भगवान शालिग्राम साक्षात चित्स्वरूप निरंजन परमात्मा ही हैं। ओंकार रूप तथा नित्यानन्द स्वरूप शालिग्राम को नमस्कार है।

शालिग्राम स्वरूप जिस शालिग्राम-शिला में द्वार-स्थान पर परस्पर सटे हुए दो चक्र हों, जो शुक्ल वर्ण की रेखा से अंकित और शोभा सम्पन्न दिखायी देती हों, उसे भगवान श्री गदाधर का स्वरूप समझना चाहिये।

संकर्षण मूर्ति में दो सटे हुए चक्र होते हैं, लाल रेखा होती है और उसका पूर्वभाग कुछ मोटा होता है।

प्रद्युम्न के स्वरूप में कुछ-कुछ पीलापन होता है और उसमें चक्र का चिह्न सूक्ष्म रहता है।

अनिरुद्ध की मूर्ति गोल होती है और उसके भीतरी भाग में गहरा एवं चौड़ा छेद होता है; इसके सिवा, वह द्वार भाग में नील वर्ण और तीन रेखाओं से युक्त भी होती है।

भगवान नारायण श्याम वर्ण के होते हैं, उनके मध्य भाग में गदा के आकार की रेखा होती है और उनका नाभि-कमल बहुत ऊँचा होता है।

भगवान नृसिंह की मूर्ति में चक्र का स्थूल चिह्न रहता है, उनका वर्ण कपिल होता है तथा वे तीन या पाँच बिन्दुओं से युक्त होते हैं। ब्रह्मचारी के लिये उन्हीं का पूजन विहित है। वे भक्तों की रक्षा करनेवाले हैं।

जिस शालिग्राम-शिला में दो चक्र के चिह्न विषम भाव से स्थित हों, तीन लिंग हों तथा तीन रेखाएँ दिखायी देती हों; वह वाराह भगवान का स्वरूप है, उसका वर्ण नील तथा आकार स्थूल होता है। भगवान वाराह भी सबकी रक्षा करने वाले हैं।

कच्छप की मूर्ति श्याम वर्ण की होती है। उसका आकार पानी की भँवर के समान गोल होता है। उसमें यत्र-तत्र बिन्दुओं के चिह्न देखे जाते हैं तथा उसका पृष्ठ-भाग श्वेत रंग का होता है।

श्रीधर की मूर्ति में पाँच रेखाएँ होती हैं, वनमाली के स्वरूप में गदा का चिह्न होता है।

गोल आकृति, मध्यभाग में चक्र का चिह्न तथा नीलवर्ण, यह वामन मूर्ति की पहचान है।

जिसमें नाना प्रकार की अनेकों मूर्तियों तथा सर्प-शरीर के चिह्न होते हैं, वह भगवान अनन्त की प्रतिमा है।

दामोदर की मूर्ति स्थूलकाय एवं नीलवर्ण की होती है। उसके मध्य भाग में चक्र का चिह्न होता है। भगवान दामोदर नील चिह्न से युक्त होकर संकर्षण के द्वारा जगत की रक्षा करते हैं।

जिसका वर्ण लाल है, तथा जो लम्बी-लम्बी रेखा, छिद्र, एक चक्र और कमल आदि से युक्त एवं स्थूल है, उस शालिग्राम को ब्रह्मा की मूर्ति समझनी चाहिये।

जिसमें बृहत छिद्र, स्थूल चक्र का चिह्न और कृष्ण वर्ण हो, वह श्रीकृष्ण का स्वरूप है। वह बिन्दुयुक्त और बिन्दुशून्य दोनों ही प्रकार का देखा जाता है।

हयग्रीव मूर्ति अंकुश के समान आकार वाली और पाँच रेखाओं से युक्त होती है।

भगवान वैकुण्ठ कौस्तुभ मणि धारण किये रहते हैं। उनकी मूर्ति बड़ी निर्मल दिखायी देती है। वह एक चक्र से चिह्नित और श्याम वर्ण की होती है।

मत्स्य भगवान की मूर्ति बृहत कमल के आकार की होती है। उसका रंग श्वेत होता है तथा उसमें हार की रेखा देखी जाती है।

जिस शालिग्राम का वर्ण श्याम हो, जिसके दक्षिण भाग में एक रेखा दिखायी देती हो तथा जो तीन चक्रों के चिह्न से युक्त हो, वह भगवान श्री रामचन्द्रजी का स्वरूप है, वे भगवान सबकी रक्षा करनेवाले हैं।

द्वारकापुरी में स्थित शालिग्राम स्वरूप भगवान गदाधर। भगवान गदाधर एक चक्र से चिह्नित देखे जाते हैं।

लक्ष्मीनारायण दो चक्रों से, त्रिविक्रम तीन से, चतुर्व्यूह चार से, वासुदेव पाँच से, प्रद्युम्न छः से, संकर्षण सात से, पुरुषोत्तम आठ से, नवव्यूह नव से, दशावतार दस से, अनिरुद्ध ग्यारह से और द्वादशात्मा बारह चक्रों से युक्त होकर जगत की रक्षा करते हैं। इससे अधिक चक्र चिह्न धारण करने वाले भगवान का नाम अनन्त है।

शिवपुराण के अनुसार, भगवान विष्णु ने खुद ही गंडकी नदी में अपना वास बताया था और कहा था कि गंडकी नदी के तट पर मेरा (भगवान विष्णु का) वास होगा। नदी में रहने वाले करोड़ों कीड़े अपने तीखे दांतों से काट-काटकर उस पाषाण में मेरे चक्र का चिह्न बनाएंगे और इसी कारण इस पत्थर को मेरा रूप मान कर उसकी पूजा की जाएगी।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार शालिग्राम शिला में विष्णु का निवास होता है। इस संबंध में अनेक पौराणिक कथाएं आज भी प्रचलित हैं। इन्हीं कथाओं में से एक के अनुसार जब भगवान शिव जालंधर नामक असुर से युद्ध नहीं जीत पा रहे थे तो भगवान विष्णु ने उनकी मदद की थी।

कथाओं में कहा गया है कि जब तक असुर जालंधर की पत्नी वृंदा 'तुलसी' अपने सतीत्व को बचाए रखती तब तक जालंधर को कोई पराजीत नहीं कर सकता था। ऐसे में भगवान विष्णु ने जालंधर का रूप धारण करके वृंदा के सतीत्व को नष्ट करने में सफल हो गए। जब वृंदा को इस बात का अहसास हुआ तबतक काफी देर हो चुकी थी।

इससे दुखी वृंदा ने भगवान विष्णु को कीड़े-मकोड़े बनकर जीवन व्यतीत करने का शाप दे डाला। फलस्वरूप कालांतर में शालिग्राम पत्थर का निर्माण हुआ, जो हिंदू धर्म में आराध्य हैं। पुरानी दंतकथाओं के अनुसार मुक्तिक्षेत्र वह स्थान है जहां पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। यहीं पर भगवान विष्णु शालिग्राम पत्थर में निवास करते हैं।

अन्य कथाओं में वृंदा, शंखचूड़ राक्षस की पत्नी थी लेकिन भगवान विष्णु को पति रूप में पाने के लिए उपासना तन मन से किया करती थी। भगवान विष्णु उसके मन की बात जानते थे, इसलिये छल से उसके पति शंखचूड़ रुप में बनने का अभिनय किया तो वृन्दा रुष्ट हो गई और उन्होंने विष्णु को शाप दिया कि वे पत्थर बन जाएं

क्योंकि आपने छल से मेरे पति का रूप धरा है। भगवान विष्णु ने तुलसी का श्राप स्वीकार कर लिया और कहा कि तुम धरती पर गंडकी नदी तथा तुलसी के पौधे के रूप में रहोगी। तदनोपरांत वृंदा उस शरीर को त्याग स्वयं गंडकी नदी में बदल गई तथा पत्थर बने भगवान विष्णु को अपने हृदय में धारण कर लिया।

धर्म ग्रंथों के अनुसार, एक समय पर तुलसी ने भगवान विष्णों को अपने पति के रूप में पाने के लिए कई सालों तक तपस्या की थीं, जिसके फलस्वरूप भगवान ने उसे विवाह का वरदान दिया था। जिसे देवप्रबोधिनी एकादशी पर पूरा किया जाता है। देवप्रबोधिनी एकादशी के दिन शालिग्राम शिला तथा तुलसी के पौधा का विवाह करवाने की परंपरा है।

"आजकल का खाना पेट भर रहा है लेकिन ताकत नहीं दे रहा जानिए 5 वजहें क्यों आपकी इम्युनिटी हर दिन कमज़ोर हो रही है"

शुरुआत – एक ताज़ा सच्चाई

क्या आपने कभी महसूस किया है कि आप तीन टाइम खाना खा रहे हैं, लेकिन फिर भी थकान, आलस्य, या बार-बार बीमार पड़ना पीछा नहीं छोड़ते? आपका पेट भरा होता है, लेकिन शरीर में वो पुरानी वाली ताजगी, ताकत और immunity महसूस नहीं होती। असल में, आजकल का खाना सिर्फ पेट भर रहा है – शरीर को पोषण नहीं दे रहा।

इस पोस्ट में हम जानेंगे 5 ऐसी वजहें, जिनकी वजह से हमारा खानपान हमें बीमार बना रहा है — और immunity हर दिन silently कम हो रही है।

1. खाना तो है लेकिन nutrition नहीं। आज के दौर में हर चीज़ जल्दी चाहिए – खाना भी।

Instant noodles, ready-to-eat packets, frozen paratha, chips, cold drinks – ये सब पेट को भर देते हैं, पर शरीर को क्या देते हैं? इनमें से ज्यादातर चीज़ों में होता है:

Zero fibre
Excess salt & sugar
Preservatives
Artificial flavours

नतीजाः शरीर को vitamins, minerals और enzymes नहीं मिलते — जिससे immunity धीमी हो जाती है।

समाधानः

* दिन में कम से कम एक बार ताज़ा, घर का बना, सब्ज़ी-दाल वाला खाना खाएं।

*हर हफ्ते कम से कम 2 बार seasonal फल ज़रूर लें।

2. खाने का टाइम नहीं, mood के हिसाब से खाते हैं आजकल ज्यादातर लोग routine से नहीं, craving से खाते हैं — जब मन हुआ, कुछ भी खा लिया। कभी सुबह का नाश्ता छोड़ दिया, तो कभी रात में भारी खाना खा लिया। इससे हमारी digestive cycle disturb होती है, जिससे खाना सही से absorb नहीं होता। जब खाना properly digest नहीं होता, तो उससे मिलने वाला पोषण भी कम हो जाता है – और immunity गिरती है।

समाधानः

* खाने का एक fix routine रखें (सुबह, दोपहर, शाम)।

*रात का खाना हल्का और 2 घंटे पहले खाएं।

3. पैक्ड फूड और फ्रिज की चीज़ें – धीरे-धीरे जहर जैसी। आज की रफ्तार में fresh खाना बनाना हर बार possible नहीं होता। ऐसे में हम पैक्ड juice, curd, bread, या frozen tiffin पर निर्भर हो जाते हैं। लेकिन ध्यान रहेः ₹Processed food मतलब preservatives₹ और preservatives का मतलब – gut health पर attack। Gut यानी आंतों की सेहत ही immunity की जड़ है। जब आंतें खराब होंगी, तो शरीर viruses और bacteria से नहीं लड़ पाएगा।

समाधानः

*हर दिन कुछ न कुछ ताज़ा बनाकर खाएं – भले ही simple क्यों न हो।

* दही, अचार, नींबू जैसे natural probiotics को शामिल करें।

4. ,थक कर खा लेना और खाना खाकर थक जाना – दोनों गलत। कई लोग इतना थक जाते हैं कि खाना बस mechanically खा लेते हैं — टीवी देखते हुए, फोन चलाते हुए, या बिना चबाए। इससे body को signals नहीं मिलते कि वो digestion शुरू करे। नतीजाः खाना heavy लगता है, सुस्ती आती है, और nutrients absorb नहीं हो पाते।

समाधानः

*Mindful eating शुरू करें – खाते समय phone-TV से दूरी।

*हर निवाला ठीक से चबाएं – 25–30 बार।

* खाना खाकर सीधे लेटने की आदत न बनाएं।

5. शरीर पानी से चलता है, लेकिन हम soft drink से चलाते हैं। Water is the real immunity booster – और हम उसे सबसे ज़्यादा नजरअंदाज करते हैं। पानी की जगह soft drinks, चाय, कॉफी या energy drinks पीना एक common mistake है। इससे body dehydrated रहती है, और toxin flush नहीं हो पाते। जब शरीर के अंदर गंदगी जमा होगी, तो immunity कैसे बढ़ेगी?

समाधानः

* दिन में 2.5 से 3 लीटर पानी पिएं (गुनगुना पानी हो तो और बेहतर)।

* हर सुबह खाली पेट 1 गिलास पानी पीने की आदत डालें।

नतीजा – सिर्फ खाना काफी नहीं, सही खाना ज़रूरी है

आजकल की ज़िन्दगी में time नहीं है, लेकिन बीमारी आने पर hospital जाने का time बन ही जाता है।

अगर हम रोज़ थोड़ा ध्यान रखें –

क्या खा रहे हैं
कब खा रहे हैं
कैसे खा रहे हैं

तो हमारा शरीर और immunity दोनों बेहतर काम करेंगे।

आख़िरी बात – एक सवाल आपसेः क्या आप भी सिर्फ पेट भरने वाले खाने पर जी रहे हैं?

या अब time आ गया है कि immunity के लिए खाना चुनें, ना कि सिर्फ स्वाद के लिए?

धर्म, परंपरा और समाज के नाम पर स्त्रियों पर थोपी गई कुप्रथाएँ

भारतीय इतिहास और समाज में गहरे तक जड़ें जमाए हुए हैं। ये कुप्रथाएँ समय, स्थान और सामाजिक संरचना के अनुसार भिन्न रही हैं, लेकिन इनका मूल उद्देश्य अक्सर पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था को बनाए रखना रहा है।

नीचे इन कुप्रथाओं का एक समेकित लेखा-जोखा प्रस्तुत है,

जो ऐतिहासिक और समकालीन दृष्टिकोण से इनके प्रभाव और परिवर्तन को दर्शाता हैः

1. सती प्रथा विवरणः

सती प्रथा में विधवा स्त्री को अपने पति की मृत्यु के बाद उनकी चिता पर जलने के लिए मजबूर किया जाता था। इसे समाज में ₹पवित्रता₹ और ₹पति-भक्ति₹ का प्रतीक माना जाता था।

ऐतिहासिक संदर्भः यह प्रथा विशेष रूप से राजपूत और उच्च जातियों में प्रचलित थी। इसे धर्म और परंपरा के नाम पर उचित ठहराया जाता था, हालाँकि यह स्वैच्छिक से अधिक सामाजिक दबाव का परिणाम थी।

वर्तमान स्थितिः 19वीं सदी में राजा राममोहन राय और ब्रिटिश प्रशासन के प्रयासों से 1829 में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा। हालाँकि, कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में 20वीं सदी तक इसके छिटपुट मामले सामने आए, जैसे 1987 का रूप कँवर मामला।

प्रभावः इस प्रथा ने स्त्रियों की स्वतंत्रता और जीवन के अधिकार को छीना, और विधवाओं को सामाजिक तौर पर हाशिए पर धकेल दिया।

2. बाल विवाह विवरणः

कम उम्र में, विशेषकर किशोरावस्था से पहले, लड़कियों की शादी कर दी जाती थी। इसे परिवार की इज्जत और सामाजिक स्थिरता से जोड़ा जाता था।

ऐतिहासिक संदर्भः यह प्रथा हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों में प्रचलित थी। मनुस्मृति जैसे ग्रंथों में कन्या के विवाह के लिए कम उम्र को आदर्श बताया गया।

वर्तमान स्थितिः 1929 में शारदा अधिनियम और बाद में स्वतंत्र भारत में बाल विवाह निषेध अधिनियम (2006) ने इसे गैरकानूनी बनाया। फिर भी, ग्रामीण क्षेत्रों और कुछ समुदायों में यह प्रथा अब भी मौजूद है। यूनिसेफ के अनुसार, भारत में 27% महिलाएँ (20-24 वर्ष की आयु) 15 वर्ष की आयु से पहले विवाहित हो चुकी थीं (2015-2020 डेटा)।

प्रभावः शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर नकारात्मक प्रभाव। कम उम्र में गर्भावस्था से मातृ मृत्यु दर में वृद्धि।

3. विधवा जीवन और पुनर्विवाह पर प्रतिबंधविवरणः

विधवाओं को सामाजिक रूप से बहिष्कृत कर दिया जाता था। उन्हें सादा जीवन जीने, रंग-बिरंगे कपड़े न पहनने, और सामाजिक उत्सवों से दूर रहने की अपेक्षा की जाती थी।

ऐतिहासिक संदर्भः हिंदू धर्म में विधवा को ₹अपशकुन₹ माना जाता था। पुनर्विवाह को सामाजिक और धार्मिक रूप से अस्वीकार्य माना जाता था।

वर्तमान स्थितिः ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे सुधारकों ने 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम को बढ़ावा दिया। आज यह प्रथा कम हो रही है, लेकिन कुछ रूढ़िवादी समुदायों में विधवाएँ अभी भी सामाजिक बहिष्कार का सामना करती हैं।

प्रभावः विधवाओं का सामाजिक और आर्थिक हाशियाकरण, मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव।

4. दहेज प्रथा विवरणः

विवाह के समय वधू पक्ष को वर पक्ष को धन, संपत्ति या उपहार देने की प्रथा। इसे सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ा गया।

ऐतिहासिक संदर्भः प्राचीन काल में दहेज स्वैच्छिक था, लेकिन मध्यकाल से यह अनिवार्य और दमनकारी बन गया।

वर्तमान स्थितिः दहेज निषेध अधिनियम (1961) के बावजूद, यह प्रथा शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में प्रचलित है। दहेज उत्पीड़न के कारण प्रतिवर्ष हजारों महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार होती हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के अनुसार, 2021 में दहेज से संबंधित 6,589 मामले दर्ज किए गए।

प्रभावः आर्थिक बोझ, घरेलू हिंसा, और कुछ मामलों में दहेज हत्या।

5. पर्दा प्रथा विवरणः स्त्रियों को चेहरा ढकने और सार्वजनिक स्थानों पर पुरुषों से दूरी बनाए रखने के लिए मजबूर किया जाता था। इसे इज्जत और शुद्धता से जोड़ा गया।

ऐतिहासिक संदर्भः यह प्रथा विशेष रूप से मुस्लिम और उच्च जाति हिंदू परिवारों में प्रचलित थी, जो मध्यकाल में और गहरी हुई।

वर्तमान स्थितिः शहरीकरण और शिक्षा के कारण पर्दा प्रथा कम हुई है, लेकिन कुछ क्षेत्रों और समुदायों में यह अब भी मौजूद है।

प्रभावः सामाजिक गतिशीलता और स्वतंत्रता में कमी, आत्मविश्वास पर नकारात्मक प्रभाव।

6. भ्रूण हत्या और कन्या भेदभावविवरणः

लिंग निर्धारण तकनीकों के दुरुपयोग से गर्भ में कन्या भ्रूण की हत्या। इसे परिवार की आर्थिक स्थिति और ₹वंश₹ की अवधारणा से जोड़ा गया।

ऐतिहासिक संदर्भः 20वीं सदी में अल्ट्रासाउंड तकनीक के आगमन ने इस प्रथा को बढ़ाया। 1994 में प्री-नेटल डायग्नोस्टिक टेक्निक्स (PNDT) अधिनियम लागू हुआ।

वर्तमान स्थितिः लिंगानुपात में सुधार हुआ है (2020 में 940 महिलाएँ प्रति 1000 पुरुष), लेकिन हरियाणा, पंजाब जैसे राज्यों में यह अभी भी एक समस्या है।

प्रभावः लिंगानुपात में असंतुलन, सामाजिक अस्थिरता, और महिलाओं के प्रति भेदभाव।

7. देवदासी प्रथा विवरणः

युवा लड़कियों को मंदिरों में ₹देवता की सेवा₹ के नाम पर समर्पित कर दिया जाता था, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर उनका यौन शोषण होता था।

ऐतिहासिक संदर्भः दक्षिण भारत में यह प्रथा मध्यकाल में प्रचलित थी। इसे धार्मिक और सामाजिक स्वीकृति प्राप्त थी।

वर्तमान स्थितिः 1988 में देवदासी प्रथा पर प्रतिबंध लगा, लेकिन कुछ क्षेत्रों में यह गुप्त रूप से चल रही है।

प्रभावः यौन शोषण, सामाजिक बहिष्कार, और मानवाधिकारों का उल्लंघन।

8. नारी शिक्षा और स्वतंत्रता पर प्रतिबंधविवरणः

स्त्रियों को शिक्षा, नौकरी, और स्वतंत्र निर्णय लेने से वंचित रखा जाता था। इसे ₹पारिवारिक सम्मान₹ और ₹स्त्री धर्म₹ से जोड़ा गया।

ऐतिहासिक संदर्भः प्राचीन काल में कुछ स्त्रियाँ (जैसे गार्गी, मैत्रेयी) शिक्षित थीं, लेकिन मध्यकाल में यह अवसर सीमित हो गया।

वर्तमान स्थितिः शिक्षा और रोजगार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, लेकिन ग्रामीण और रूढ़िवादी क्षेत्रों में अभी भी बाधाएँ हैं।

प्रभावः आर्थिक निर्भरता, सामाजिक असमानता, और आत्मनिर्भरता की कमी।सुधार के प्रयास और वर्तमान चुनौतियाँ सुधारक और आंदोलनः राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, सावित्रीबाई फुले, और आधुनिक नारीवादी आंदोलनों ने इन कुप्रथाओं को चुनौती दी।कानूनी कदमः भारतीय संविधान (अनुच्छेद 14, 15) और विभिन्न अधिनियमों (जैसे दहेज निषेध अधिनियम, PNDT अधिनियम) ने समानता को बढ़ावा दिया।

चुनौतियाँः सामाजिक जड़ता, ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी, और पुरुषसत्तात्मक मानसिकता अभी भी बाधाएँ हैं।

निष्कर्ष

धर्म, परंपरा और समाज के नाम पर थोपी गई कुप्रथाएँ स्त्रियों के अधिकारों और स्वतंत्रता का हनन करती रही हैं।

हालाँकि, शिक्षा, कानूनी सुधार, और सामाजिक जागरूकता ने इन प्रथाओं को कम करने में मदद की है, लेकिन पूर्ण उन्मूलन के लिए निरंतर प्रयास और सामाजिक मानसिकता में बदलाव आवश्यक है।

यूरोप में महिलाओं के शोषण की प्रथाएँ ऐतिहासिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक संदर्भों में विविध रही हैं। मध्यकाल से आधुनिक युग तक, धर्म, परंपरा, और सामाजिक मान्यताओं के नाम पर महिलाओं के खिलाफ कई कुप्रथाएँ प्रचलित थीं, जिनमें से कुछ आज भी विभिन्न रूपों में मौजूद हैं। नीचे यूरोप में महिला शोषण की प्रमुख प्रथाओं का एक समेकित लेखा-जोखा प्रस्तुत हैः

1. मध्यकालीन और प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में

कुप्रथाएँडायन-शिकार (Witch Hunts):विवरणः 15वीं से 18वीं सदी के बीच, यूरोप में हजारों महिलाओं को ₹डायन₹ होने के आरोप में यातना दी गई और मार डाला गया। इसे धार्मिक विश्वासों और सामाजिक भय से जोड़ा गया, विशेषकर कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट चर्चों द्वारा।

ऐतिहासिक संदर्भः यह प्रथा जर्मनी, फ्रांस, स्कॉटलैंड, और स्विट्जरलैंड जैसे देशों में प्रचलित थी। अनुमानित रूप से 40,000-60,000 लोग (जिनमें 75-80% महिलाएँ थीं) इस दौरान मारे गए।

प्रभावः महिलाओं को सामाजिक और धार्मिक रूप से दबाया गया, और उनकी स्वतंत्रता और बौद्धिकता को संदेह की नजर से देखा गया।

वर्तमान स्थितिः यह प्रथा अब समाप्त हो चुकी है, लेकिन इसका ऐतिहासिक प्रभाव लैंगिक भेदभाव की जड़ों को समझने में महत्वपूर्ण है।

प्राइमा नोक्टिस (Prima Nocta):विवरणः मध्यकाल में कुछ क्षेत्रों में सामंती प्रभुओं द्वारा नवविवाहित महिलाओं के साथ पहली रात बिताने का कथित अधिकार। हालाँकि, इसके व्यापक अस्तित्व पर इतिहासकारों में मतभेद हैं।

ऐतिहासिक संदर्भः यह प्रथा स्कॉटलैंड और अन्य यूरोपीय क्षेत्रों में किंवदंती के रूप में प्रचलित थी, लेकिन इसका वास्तविक प्रमाण सीमित है।

प्रभावः यह सामंती व्यवस्था में महिलाओं की यौन स्वायत्तता के हनन का प्रतीक थी।

2. जबरन विवाह और पितृसत्तात्मक नियंत्रणविवरणः यूरोप में मध्यकाल से 19वीं सदी तक, महिलाओं को परिवार की इच्छा या आर्थिक/राजनीतिक गठबंधनों के लिए जबरन विवाह करने के लिए मजबूर किया जाता था। दहेज प्रथा भी प्रचलित थी।

ऐतिहासिक संदर्भः विशेषकर उच्च वर्गों में, महिलाओं की सहमति के बिना विवाह तय किए जाते थे। विधवाओं को भी पुनर्विवाह के लिए सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ता था।

वर्तमान स्थितिः जबरन विवाह अब यूरोप में गैरकानूनी है, लेकिन कुछ प्रवासी समुदायों में यह प्रथा अभी भी देखी जाती है। यूरोपीय संघ (ईयू) ने 2022 में जबरन विवाह के खिलाफ कानून को और सख्त करने का प्रस्ताव रखा।

प्रभावः महिलाओं की स्वतंत्रता और व्यक्तिगत पसंद पर प्रतिबंध, जिसने उनके सामाजिक और आर्थिक हाशियाकरण को बढ़ावा दिया।

3. महिलाओं का खतना (Female Genital Mutilation - FGM)विवरणः कुछ यूरोपीय देशों में, विशेषकर प्रवासी समुदायों (मुख्यतः अफ्रीकी और मध्य पूर्वी) में, महिलाओं और लड़कियों के जननांगों को धार्मिक या सांस्कृतिक परंपराओं के नाम पर काटने की प्रथा देखी जाती है।

ऐतिहासिक संदर्भः यह प्रथा यूरोप में स्वदेशी नहीं थी, लेकिन 20वीं सदी में प्रवास के साथ यह कुछ समुदायों में प्रचलित हुई। यूनिसेफ के अनुसार, यूरोप सहित 92 देशों में यह प्रथा मौजूद है।

वर्तमान स्थितिः यूरोप में FGM गैरकानूनी है, और कई देशों (जैसे यूके, फ्रांस, स्वीडन) ने इसके खिलाफ सख्त कानून बनाए हैं। फिर भी, प्रवासी समुदायों में यह गुप्त रूप से होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, यह प्रथा शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से हानिकारक है।

प्रभावः गंभीर स्वास्थ्य जोखिम, मानसिक आघात, और सामाजिक बहिष्कार।

4. यौन हिंसा और उत्पीड़नविवरणः यूरोप में महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा और कार्यस्थल पर उत्पीड़न व्यापक रहा है। इसे सामाजिक मान्यताओं और लैंगिक असमानता से जोड़ा जाता है।

ऐतिहासिक संदर्भः मध्यकाल में बलात्कार को अक्सर संपत्ति के खिलाफ अपराध माना जाता था, न कि महिला के अधिकारों का उल्लंघन। 20वीं सदी तक यौन हिंसा के खिलाफ कानून कमजोर थे।

वर्तमान स्थितिःयूरोप में बलात्कार की परिभाषा पर अभी भी एकरूपता नहीं है। ईयू के कुछ देश (जैसे स्वीडन, बेल्जियम) सहमति के अभाव को बलात्कार का आधार मानते हैं, जबकि फ्रांस, जर्मनी जैसे देश इसका विरोध करते हैं।स्वीडन में रेप के मामले प्रति लाख 46 की दर से दर्ज होते हैं, जो यूरोप में सबसे अधिक है। फ्रांस में प्रतिवर्ष लगभग 25,000 रेप के मामले दर्ज होते हैं।'द लैंसेट' के एक अध्ययन (2025) के अनुसार, यूरोप सहित विश्व भर में हर पाँच में से एक महिला ने 15 वर्ष की आयु तक यौन हिंसा का सामना किया है।

प्रभावः मानसिक आघात, सामाजिक कलंक, और लैंगिक असमानता में वृद्धि।

5. मानव तस्करी और यौन शोषणविवरणः यूरोप में महिलाओं और लड़कियों को वेश्यावृत्ति और जबरन श्रम के लिए तस्करी की जाती है। इसे आर्थिक असमानता और संगठित अपराध से जोड़ा जाता है।

ऐतिहासिक संदर्भः 19वीं और 20वीं सदी में औपनिवेशिक और औद्योगिक युग में मानव तस्करी बढ़ी। आज यह पूर्वी यूरोप और दक्षिण-पूर्व एशिया से पश्चिमी यूरोप की ओर होती है।

वर्तमान स्थितिः संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, यूरोप मानव तस्करी का एक प्रमुख गंतव्य है। पूर्वी यूरोप और कुछ लैटिन अमेरिकी देशों की महिलाएँ पश्चिमी यूरोप में यौन शोषण के लिए तस्करी की जाती हैं। नीदरलैंड और जर्मनी जैसे देशों में वेश्यावृत्ति को वैध बनाने से तस्करी के मामलों में जटिलता बढ़ी है।

प्रभावः मानवाधिकारों का उल्लंघन, शारीरिक और मानसिक शोषण, और सामाजिक बहिष्कार।

6. घरेलू हिंसाविवरणः यूरोप में घरेलू हिंसा महिलाओं के खिलाफ एक प्रमुख समस्या रही है, जिसे अक्सर ₹निजी मामला₹ मानकर नजरअंदाज किया जाता था।

ऐतिहासिक संदर्भः 19वीं सदी तक, कई यूरोपीय देशों में पति को पत्नी पर शारीरिक हिंसा का ₹अधिकार₹ माना जाता था।

वर्तमान स्थितिः यूरोपीय संघ के आँकड़ों के अनुसार, हर तीन में से एक महिला अपने जीवनकाल में शारीरिक या यौन हिंसा का शिकार होती है। यूके में 2023 तक 15,084 रेप के मामले दर्ज हुए। कई देशों में घरेलू हिंसा के खिलाफ कानून सख्त हुए हैं, लेकिन सामाजिक जागरूकता और कानून लागू करने में कमी है।

प्रभावः शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव, आर्थिक निर्भरता, और सामाजिक अलगाव।

7. आर्थिक और सामाजिक भेदभावविवरणः महिलाओं को शिक्षा, संपत्ति के अधिकार, और रोजगार के अवसरों से वंचित रखा गया। इसे पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना से जोड़ा जाता है।

ऐतिहासिक संदर्भः 19वीं सदी तक, यूरोप के अधिकांश देशों में महिलाओं को संपत्ति रखने या स्वतंत्र रूप से काम करने का अधिकार नहीं था। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन में 1870 तक विवाहित महिलाओं की संपत्ति पर पति का नियंत्रण रहता था।

वर्तमान स्थितिः आज यूरोप में लैंगिक समानता के लिए कई कानून हैं, लेकिन वेतन असमानता (gender pay gap) अभी भी मौजूद है। 2023 में ईयू में महिलाएँ औसतन पुरुषों से 13% कम कमाती थीं। कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के मामले भी आम हैं।

प्रभावः आर्थिक निर्भरता, सामाजिक असमानता, और आत्मविश्वास की कमी।सुधार और वर्तमान चुनौतियाँसुधार के प्रयासः19वीं और 20वीं सदी में नारीवादी आंदोलनों (जैसे Suffrage Movement) ने महिलाओं के मताधिकार, शिक्षा, और संपत्ति के अधिकारों को सुनिश्चित किया।ईयू ने 2022 में महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकने के लिए एक व्यापक कानून का प्रस्ताव रखा, जिसमें बलात्कार, FGM, और ऑनलाइन उत्पीड़न शामिल हैं।#MeToo आंदोलन ने यौन उत्पीड़न के खिलाफ जागरूकता बढ़ाई।

चुनौतियाँःसामाजिक मानसिकता में बदलाव की कमी, विशेषकर रूढ़िवादी और प्रवासी समुदायों में।कानूनों का प्रभावी कार्यान्वयन और बलात्कार जैसे मामलों में दोषसिद्धि दर कम होना।ऑनलाइन यौन शोषण और साइबर उत्पीड़न की बढ़ती समस्या।निष्कर्षयूरोप में महिला शोषण की प्रथाएँ मध्यकालीन धार्मिक और सामंती व्यवस्थाओं से लेकर आधुनिक युग की सामाजिक असमानताओं तक फैली हुई हैं। डायन-शिकार और प्राइमा नोक्टिस जैसी प्रथाएँ अब इतिहास का हिस्सा हैं, लेकिन यौन हिंसा, मानव तस्करी, और FGM जैसी समस्याएँ आज भी मौजूद हैं। कानूनी और सामाजिक सुधारों ने स्थिति में सुधार किया है, लेकिन पूर्ण लैंगिक समानता के लिए निरंतर प्रयास और जागरूकता आवश्यक है।

विधानसभा को ई विधानसभा बनाने का कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ, 3 अगस्त को होगा उद्घाटन

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली सचिवालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि दिल्ली विधानसभा को ई-विधान बनाने का कार्य इतने कम समय में सफलतापूर्वक किया गया है। इसमें केंद्र सरकार ने आर्थिक सहयोग प्रदान किया, जिसके लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

उन्होंने बताया कि इस सत्र में दिल्ली स्कूल एजुकेशन ट्रांसपेरेंसी इन फिक्सेशन एंड रेगुलेशन ऑफ फीस-2025 बिल को चर्चा के लिए सदन में रखा जाएगा। यह बिल शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता और फीस नियंत्रण को लेकर महत्वपूर्ण कदम है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सचिवालय दिल्ली सचिवालय में ई-फाइलिंग और ई-साइन प्रणाली को लागू कर दिया गया है। अब अधिकांश फाइलें डिजिटल माध्यम से संचालित की जा रही हैं, जिससे कामकाज में पारदर्शिता और गति आई है।

रेखा गुप्ता ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी सरकार गंभीर है। इसी क्रम में दिल्ली विधानसभा परिसर में 500 किलोवाट क्षमता का सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है, जिससे विधानसभा भवन की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति सौर स्रोत से हो सकेगी। इस सौर संयंत्र और ई-विधान एप्लिकेशन (पेपरलेस विधानसभा प्रणाली) का उद्घाटन तीन अगस्त को केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल के हाथों किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली विधानसभा को सौर ऊर्जा से संचालित करने के लिए 500 किलोवाट सौर ऊर्जा संयंत्र यहां लगाया गया है। उन्होंने कहा कि दिल्ली विकास की ओर बढ़ रही है। इसके लिए बड़े-छोटे सभी फैसले किए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली तेज़ी से डिजिटल और हरित विकास की दिशा में अग्रसर है। चाहे वह प्रशासनिक पारदर्शिता हो या सतत ऊर्जा उपयोग - दिल्ली सरकार हर पहलू पर ठोस निर्णय ले रही है।

श्रीहनुमानजी महाराज का स्मरण सदैव ही मंगलकारी होता है : महंत आचार्य रामदेव चतुर्वेदी

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। बांके बिहारी कॉलोनी स्थित ठा. श्रीकौशल किशोर राम मन्दिर में अखिल भारतीय श्रीराम मित्र मंडल के द्वारा पंच दिवसीय श्रीहनुमान कथा का आयोजन अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ प्रारंभ हुआ।सर्वप्रथम श्रीहनुमानजी महाराज के चित्रपट के समक्ष वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य दीप प्रज्ज्वलित करके उनका पूजन अर्चन किया गया।साथ ही उनकी आरती की गई।तत्पश्चात व्यासपीठ से ठा. श्रीकौशल किशोर राम मन्दिर के महंत आचार्य रामदेव चतुर्वेदी ने अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा श्रीहनुमानजी की महिमा बताते हुए कहा कि मंगल को जन्मे श्रीहनुमानजी महाराज का स्मरण सदैव ही मंगलकारी होता है। कलयुग में हनुमानजी की उपासना सबसे उत्तम फल प्रदान करने वाली है। वे शीघ्र प्रसन्न होने वाले देव हैं। भगवान श्रीराम के कार्य सिद्ध करने वाले हनुमान जी साक्षात रुद्रावतार और संकट मोचन हैं।उनका चिंतन, मनन, श्रवण करने से मनुष्य का लोक-परलोक सुधर जाता है। श्रीरामदूत हनुमानजी महाराज को भगवान शिव का ग्यारहवां रुद्रावतार माना गया है और उनकी उपासना व्यक्ति के जीवन में सफलता प्राप्त करने की कुंजी है।

श्रद्धेय आचार्य रामदेव चतुर्वेदी ने कहा कि माता जानकी के आशीर्वाद से श्रीहनुमानजी महाराज सप्त चिरंजीवियों में से एक हैं, जो सशरीर आज भी पृथ्वी पर विद्यमान हैं।वर्तमान में पृथ्वी पर जहां भी श्रीराम कथा होती है, वहां पवनपुत्र रुद्रावतार श्रीहनुमानजी उपस्थित रहते हैं।हनुमानजी महाराज उन्हीं पर कृपा बरसाते हैं, जिनका हृदय शुद्ध तथा विचार पवित्र हों।

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, महोत्सव के संयोजक आचार्य लवदेव चतुर्वेदी,आचार्य कुशदेव चतुर्वेदी, श्रीमती कुंजलता चतुर्वेदी, श्रीमती प्रिया चतुर्वेदी, संगीताचार्य शंभू शरण, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि की उपस्थिति विशेष रही।

दलित विरोधी भाजपा कभी भी दलित समाज के लोगों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं करती है- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। भाजपा का दलित विरोधी चेहरा एक बार फिर उजागर हो गया। दिल्ली नगर निगम की सत्ता में बैठी भाजपा ने विशेष और तदर्थ कमेटियों में दलित समाज से आने वाले पार्षदों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं दिया है। शुक्रवार को एमसीडी में आम आदमी पार्टी के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने दलित विरोधी भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि ''आप'' ने एमसीडी की कमेटियों में 10 दलित पार्षदों को चेयरमैन और डिप्टी चेयरमैन बनाया है, ताकि वो अपने समाज की आवाज उठा सकें। वहीं, भाजपा ने महज दो-तीन को ही मौका दिया है। एक बार फिर साबित हो गया है कि भाजपा कभी भी दलित समाज के लोगों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं करती है।

अंकुश नारंग ने कहा कि आम आदमी पार्टी ने हमेशा दलित समाज के हितों की रक्षा के लिए उन्हें पर्याप्त प्रतिनिधित्व देती रही है ताकि वह अपने समाज की आवाज बन सकें। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए पार्टी ने दलित समाज के पार्षदों को विशेष और तदर्थ कमेटियों में चेयरमैन और डिप्टी चेयरमैन बनने का मौका दिया है। ''आप'' ने एमसीडी की विशेष और तदर्थ कमेटी के अंदर पांच दलित पार्षदों को चेयरमैन के लिए नोमिनेट किया है। जबकि भाजपा ने मजबूरी में एससी कमेटी में एक दलित पार्षद को चेयरमैन बनाया है। अगर भाजपा की मजबूरी नहीं होती तो एससी कमेटी का चेयरमैन भी दलित पार्षद को नहीं बनाती।

एमसीडी में दलित कर्मचारियों को पक्का करने की बात हो या दलित शिक्षकों के प्रमोशन की बात हो, या अब एमसीडी में एससी कमेटी में भी एक बार फिर भाजपा का दलित विरोधी चेहरा सामने आया है। ₹आम आदमी पार्टी₹ ने विशेष और तदर्थ कमेटियों में पांच दलित चेयरमैन को जगह दी है। ताकि वह अपने समाज के अधिकारों की आवाज उठा सके। वहीं भाजपा ने सिर्फ एक एससी कमेटी में चेयरमैन को जगह दी है वह भी भाजपा की मजबूरी थी क्योंकि एससी कमेटी में सिर्फ दलित ही चेयरमैन बन सकता है वरना वह उस दलित को भी चेयरमैन पद के लिए नॉमिनेट ही नहीं करते।

उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी ने एमसीडी की विभिन्न कमेटियों में कुल 10 दलितों को चेयरमैन और डिप्टी चेयरमैन बनाने का मौका दिया है। जबकि भाजपा ने कुल दो-तीन दलित पार्षदों को ही मौका दिया है। इससे एक बार फिर साफ हो गया है कि भाजपा दलित विरोधी पार्टी है। भाजपा कभी भी दलित समाज को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित नहीं करती है। वहीं, आम आदमी पार्टी ने दलितों के अधिकार को सुरक्षित और सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया है ताकि ये अपने समाज की आवाज उठा सकें।

तनिष्क ने तनिष्क डायमंड्स एक्सपर्टाइज़ सेंटर का अनावरण कर विश्वास और विरासत के 30 वर्षों का जश्न मनाया

मुख्य संवाददाता

दिल्ली : टाटा समूह के भारत के सबसे बड़े आभूषण रिटेल ब्रांड तनिष्क ने दिल्ली-एनसीआर में एक भव्य समारोह में विश्वास और पारदर्शिता के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता के 30 गौरवशाली वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया। इस उपलब्धि को चिह्नित करते हुए, तनिष्क ने तनिष्क डायमंड्स एक्सपर्टाइज़ सेंटर के शुभारंभ के माध्यम से उद्योग में पहली, पारदर्शी इन-स्टोर हीरा मूल्यांकन प्रक्रिया शुरू की है। डी बीयर्स समूह के साथ साझेदारी में, यह पहल ग्राहकों को प्रकाश प्रदर्शन, उत्पत्ति, समावेशन और प्रामाणिकता का आकलन करने वाले पाँच उन्नत उपकरणों का उपयोग करके वास्तविक समय में आश्वासन प्रदान करती है। इन जानकारियों को सीधे खरीदार के हाथों में देकर, तनिष्क अनुभव को निष्क्रिय खरीदारी से सूचित निर्णय लेने की ओर ले जाता है। लाइटस्कोप जैसे उपकरण, जो हीरे के प्रकाश प्रदर्शन को मापते हैं और उसे दृष्टिगत रूप से प्रदर्शित करते हैं और सिंथडिटेक्ट, जो प्राकृतिक हीरों को प्रयोगशाला में उगाए गए हीरों जैसे सिंथेटिक विकल्पों से अलग करता है, एक सरल, दृश्य प्रारूप में वैज्ञानिक स्पष्टता प्रदान करते हैं।

हर साल, तनिष्क लगभग 12 लाख पहली बार खरीदारों को आकर्षित करता है, जिनमें से लगभग 4 लाख ग्राहक जड़ाऊ रत्न के साथ अपनी यात्रा शुरू करना चुनते हैं, जो पीढ़ियों के बीच ब्रांड की बढ़ती लोकप्रियता की पुष्टि करता है। यह ब्रांड 1996 से दिल्ली के आभूषण परिदृश्य का एक प्रिय हिस्सा रहा है, जिसने पीढ़ियों के बीच गहरे संबंधों को पोषित किया है। ब्रांड ने दिल्ली में 7.5 लाख से अधिक परिवारों का विश्वास अर्जित किया है, जो क्षेत्र के आभूषण बाजार में इसकी गहरी विरासत और नेतृत्व को दर्शाता है।

शाम का समापन एक शानदार रैंप शो के साथ हुआ, जिसमें पारंपरिक शिल्प कौशल की समृद्ध विरासत से लेकर साहसिक, भविष्योन्मुखी डिजाइनों तक, तनिष्क की वर्षों की यात्रा को दर्शाया गया। प्रत्येक खंड ने तनिष्क के प्राकृतिक हीरों के संग्रह के विकास को जीवंत कर दिया, न केवल चमक, बल्कि हर आभूषण के पीछे छिपी जटिलता को भी प्रदर्शित किया। रनवे पर तीन दशकों की चमक का एक दृश्य उत्सव प्रस्तुत करने वाली कृतियाँ प्रदर्शित की गईं, जो तनिष्क की डिज़ाइन उत्कृष्टता के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता और ग्राहकों के साथ उसके गहरे जुड़ाव का प्रमाण थीं। सबसे प्रमुख प्रदर्शनों में से एक था, दुर्लभतम रत्नों और हीरों से तैयार किया गया इथरियल वंडर्स संग्रह, जो परंपरा और आधुनिकता का एक शानदार संगम है, और विश्व स्तर पर प्रशंसित रेडियंस इन रिदम संग्रह, जो शिल्प कौशल का एक उत्कृष्ट नमूना है। उच्च गुणवत्ता वाले प्राकृतिक हीरों, विचारशील डिज़ाइन भाषा और नवीन सेटिंग शैलियों से युक्त, रेडियंस इन रिदम ने पेरिस कॉउचर वीक में विश्व मंच पर अपनी शुरुआत की, जिसने तनिष्क की बढ़ती वैश्विक डिज़ाइन महत्वाकांक्षा और प्राकृतिक हीरों के क्षेत्र में नेतृत्व को रेखांकित किया।

इस अवसर पर, टाइटन कंपनी लिमिटेड के तनिष्क के सीईओ, अजय चावला ने कहा, ₹दिल्ली में तीन दशक पूरे होने पर, हम उन ग्राहकों का सम्मान करते हैं जो तनिष्क की यात्रा के केंद्र में रहे हैं। हमारा ध्यान हमेशा तनिष्क महिलाओं की बदलती ज़रूरतों का अनुमान लगाने पर रहा है।

बिजली कौंधी कवि ने सोचा धूप छलांग रही होगी- गिरेन्द्रसिंह भदौरिया ''प्राण''

परिवहन विशेष न्यूज

श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति इंदौर द्वारा गोस्वामी तुलसीदास व मुंशी प्रेमचन्द की जयंती के अवसर पर शिवाजी भवन में आयोजित कवि सम्मेलन में अन्त तक भिन्न-भिन्न रसों की ऐसी धुआंधार बरसात हुई कि समागार के हर श्रोता ने जी भरकर उसमें रसावगाहन किया जो जहाँ जम गया वह वहाँ से गया ही नहीं। फूहड़ता से दूर ऐसे कवि सम्मेलन कम ही सुनने को मिलते हैं। यह शुद्ध साहित्यिक कवि सम्मेलन था। मंच पर गम्भीर कविताएं हुईं तो बीच-बीच में स्तरीय हास्य की फुलझड़ियां भी खूब चलीं वे श्रोताओं की ध्यान मुद्रा को चैतन्य करती रहीं, अद्भुत कविताओं पर उठी करतल ध्वनियों की गड़गड़ाहट व वाहवाही श्रोताओं को आनन्द और कवियों को सामूहिक उपहार दे रही थी। मंच पर सभी रस बरस रहे थे। मानस मर्मज्ञ राष्ट्रीय कवि सत्यनारायण सत्तन जी की अध्यक्षता और प्रखर कवि गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण" के कुशल संचालन में ठीक चार बजे गोस्वामी तुलसीदास दास जी का पूजन व मुंशी प्रेमचन्द के चित्र पर माल्यार्पण कर कवयित्री अर्चना अंजुम की सरस्वती वन्दना से और विनय-पत्रिका की रचना राम स्तुति के सामूहिक पाठ से कवि सम्मेलन के श्री गणेश के पश्चात उदीयमान कवयित्री वाणी जोशी ने अपनी कविताओं से कवि सम्मेलन का आगाज किया व कवियों से निवेदन किया- 'विनती नव कलम धारक से बारंबार है। कविता को बचा लो कविता से संसार है।' संचालक के आह्वान पर इन्दौर के काका हाथरसी के नाम से ख्यात कवि प्रदीप नवीन ने हास्य की अपनी फुलझड़ियों से सभा को खूब गुदगुदाया। 'चढ़ ही रहे थे ट्रेन में और जेब कट गई,वैसे ही राशि कम थी और ज्यादा घट गई।' उपमेय और उपमानों की सुरीली छटा बिखेरते हुए डॉ सुरेखा भारती ने- 'जैसे जलती जेठ दुपहरी ऐसे सावन जलता है, जैसे जले रात में दीपक ऐसे जीवन जलता है।' गीत सुनाकर श्रोता समाज को अपने गीतों में बाँध लिया था। ऊर्जा सम्पन्न ओज के गम्भीर कवि पं. रामचन्द्र अवस्थी ने कवि सम्मेलन की धारा को कुछ इस प्रकार मोड़ दिया। उन्होंने - 'सड़क बनाता है वह बोलो किस फिनेट में चलता है। वस्त्र बनाता है जो वह खुद बिना कफन के जलता है। अन्न उगाता है जो उसकी नियत सिर्फ भूखों मरना, दिल पर रख कर हाथ कहो तुम ऐसे में फिर क्या करना ?' इस 'आग' शीर्षक की लम्बी रचना सुनाकर कवि सम्मेलन को राष्ट्र आराधना का उत्सव बना दिया। उनकी रचनाएँ कविता की गुणवत्ता का भी बखान कर रही थीं। रतलाम से पधारे हास्य व्यंग्य

के कवि धमचक मुलथानी ने मीठी और नमकीनी रचनाओं को इस कुछ तरह परोसा "भारत में पत्नियों ने सदियों से गजब ढाया है। तुलसीदास और मूर्ख कालिदास को पत्नियों ने ही महाकवि बनाया है।" उनके हास्य की इस परोसदारी से श्रोताओं के पेटों पर हँस-हँस कर बल पड़ रहे थे। इसके पश्चात सीहोर की पहचान लिए देश की ख्यातनाम कवयित्री अर्चना अंजुम ने अपनी रेशमी आवाज से गीतों और ग़ज़लों की गंगा में उपस्थित काव्य रसिकों को इस तरह अवगाहन कराया कि- 'तुलसी ने छन्द दोहे गाये हैं। राम ख़ुद उनके पास आये हैं। सीख पत्नी से पाई थी अंजुम, फिर दो दुनिया में जगमगाये हैं।' माँ वामुंडा की नगरी देवास से पधारे राष्ट्रीय चेतना के चितेरे कवि देवकृष्ण व्यास ने अपनी कविताओं का ऐसा सम्मोहन बिखेरा कि समूचा सभागृह उनके नियंत्रण में आ गया। उन्होंने 'ना सुबह लिखूं,ना शाम लिखूंगा। और न चारों धाम लिखूंगा। मुझको दे दो कोरा कागज। उस पर केवल राम लिखूंगा।' सुनाकर सुधी श्रोताओं को साधुवाद देने के लिए विवश कर दिया। जब कवयित्री मनीषा व्यास ने अपनी रचनाएं पढ़ीं तो वातावरण भक्तिमय हो गया उन्होंने 'राम के चरण जब वन ये पड़ने लगे, कानन में मृग सिंह साथ चलने लगे। ऋषियों ने विधि वत हवन जब किया तो इस जग के सारे पुण्य निखरने लगे।' कवयित्री व्यास ने सभी को मन्त्र मुग्ध कर दिया। संचालन कर रहे कवि गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण" को श्री सत्तन जी ने आहूत किया उन्होंने गोस्वामी तुलसीदास जी और मुंशी प्रेमचन्द के कृतित्व और व्यक्तित्व पर बोलते हुए बादल को धन्यवाद किया और जब उस पर रचना पढ़ी तब लग रहा था कि रस छन्द व अलंकार शब्द के स्फोटवाद को सार्थक कर रहे हों। उनकी शुरुआत कुछ ऐसी थी 'लो निरभ्र आकाश आज काजल में बदल गया साथी। मानो सागर उठा उड़ा बादल में बदल गया साथी।।' सुनकर श्रोताओं की श्रुतिथकन मिट गई। श्रोताओं से मिलतीं तालियों और वाह-वाही से मिलता हुआ सम्मान उनकी रचनाओं और उनकी प्रस्तुति को पुरस्कृत कर रहा था इस ऐतिहासिक कवि सम्मेलन को सफलता के शिखर पर स्थापित करते हुए राष्ट्रनिष्ठ और सर्वरस सिद्ध वरेण्य कवि सत्यनारायण सत्तन ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में गोस्वामी तुलसीदास को १४ घंटे गाए जाने वाला व करोड़ों लोगों को रोजगार देने वाला दुनिया का इकलौता व सर्वश्रेष्ठ कवि निरूपित किया। गोस्वामी जी की कई रचनाओं को व्याख्यायित करते हुए उन्होंने अपनी बहुआयामी रचनाओं से कार्यक्रम को अविस्मरणीय बना दिया। अन्त में समिति के मन्त्री डॉ पुष्पेन्द्र दुबे ने सभी का आभार माना। इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास और मुंशी प्रेमचन्द जी स्मरण काव्य का यज्ञ सम्पन्न हुआ।

प्रबंध मंत्री
अरविन्द ओझा
श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति इन्दौर

प्राइमलेज़ ने पेश की क्रांतिकारी जर्मन Q-स्विच्ड Nd:YAG टेक्नोलॉजी; त्वचा उपचारों की विस्तृत श्रेणी के लिए एक नया बदलाव

मुख्य संवाददाता

दिल्ली : प्राइमलेज़ ने जर्मन डर्मेटोलॉजिकल लेज़र तकनीक की अग्रणी कंपनी हायपरटेक लेज़र सिस्टम्स (एचएलएस) के साथ साझेदारी की है और अत्याधुनिक बायएक्सिसQS (नॅनो) तथा बायएक्सिसपिको – Q स्विच्ड Nd:YAG तकनीक पेश की है, जो सौंदर्य और चिकित्सकीय त्वचाविज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रगति मानी जा रही है। यह आधुनिक लेज़र सिस्टम त्वचा संबंधी उपचारों की प्रभावशीलता और सुरक्षा को बेहतर बनाने वाले कई नए फ़ीचर्स से युक्त है।

Q स्विच्ड Nd:YAG टेक्नोलॉजी को सभी प्रकार की त्वचा के लिए डिज़ाइन किया गया है और यह त्वचा उपचारों की विस्तृत श्रेणी को संभव बनाती है। चाहे बात डर्मल या एपिडर्मल पिग्मेंटेशन से जुड़ी समस्याओं की हो या बहुरंगी टैटू को प्रभावी ढंग से हटाने की, यह सिस्टम असाधारण बहुपयोगिता और परिणाम देने की क्षमता रखता है।

प्रसिद्ध त्वचा रोग विशेषज्ञ और लेज़र तकनीक के विशेषज्ञ डॉ. अनुराग तिवारी ने इस नवोन्मेषी तकनीक को लेकर अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, "बायएक्सिसQS (नॅनो) को हमारी क्लिनिकल प्रैक्टिस में शामिल करना, प्रभावी और सुरक्षित उपचार प्रदान करने की हमारी क्षमता में एक बड़ी प्रगति है। यह उन्नत लेज़र प्रणाली, न सिर्फ उपचार के परिणामों को बेहतर बनाती है, बल्कि मरीज़ों के लिए आरामदायक अनुभव भी सुनिश्चित करती है। Q स्विच्ड तकनीक टैटू रिमूवल में अत्यंत प्रभावी है, जो विभिन्न रंगों के टैटू पिग्मेंट्स को सटीक रूप से लक्ष्य कर उन्हें विघटित कर देती है। स्किन रीजुवेनेशन या लेज़र टोनिंग इसका एक और प्रमुख उपयोग है, जिसमें यह लेज़र त्वचा की असमान रंगत को कम करते हुए त्वचा को चमकदार बनाता है और कोलेजन उत्पादन को उत्तेजित करके त्वचा की बनावट और रंगत में सुधार करता है। इसके अतिरिक्त, यह तकनीक मेलाज्मा, पोस्ट-एक्ने पिग्मेंटेशन, जन्म से मौजूद निशान और सूजन के बाद होने वाले पिग्मेंटेशन के उपचार में भी उपयोग की जाती है। हम विभिन्न त्वचा प्रकारों और समस्याओं के अनुसार उपचार को अनुकूलित कर सकते हैं, जिससे मरीज़ों को सर्वोत्तम परिणाम मिल सकें।"

जर्मनी के प्रख्यात विशेषज्ञ डॉ. फेडर मेयोरोव, पीएचडी, जो मेडिकल लेज़र सिस्टम के विकास में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव रखते हैं, ने इस उन्नत तकनीक के महत्व पर ज़ोर देते हुए कहा, "इस लेज़र सिस्टम की सटीकता और प्रभावशीलता इसे वैश्विक बाज़ार में अग्रणी बनाती है। दुनिया के 50 से अधिक देशों में त्वचा रोग विशेषज्ञों और प्लास्टिक सर्जनों द्वारा इसका उपयोग किया जाना इस बात का प्रमाण है कि यह तकनीक बेहतरीन क्लिनिकल परिणाम देने में पूरी तरह सक्षम है।"

प्रदर्शन और सुरक्षा से जुड़ी मानकों का सख्ती से पालन करते हुए इस तकनीक को आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों की कठोर आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जिससे यह भारत भर के त्वचा रोग क्लीनिकों के लिए एक आदर्श विकल्प बन जाती है।

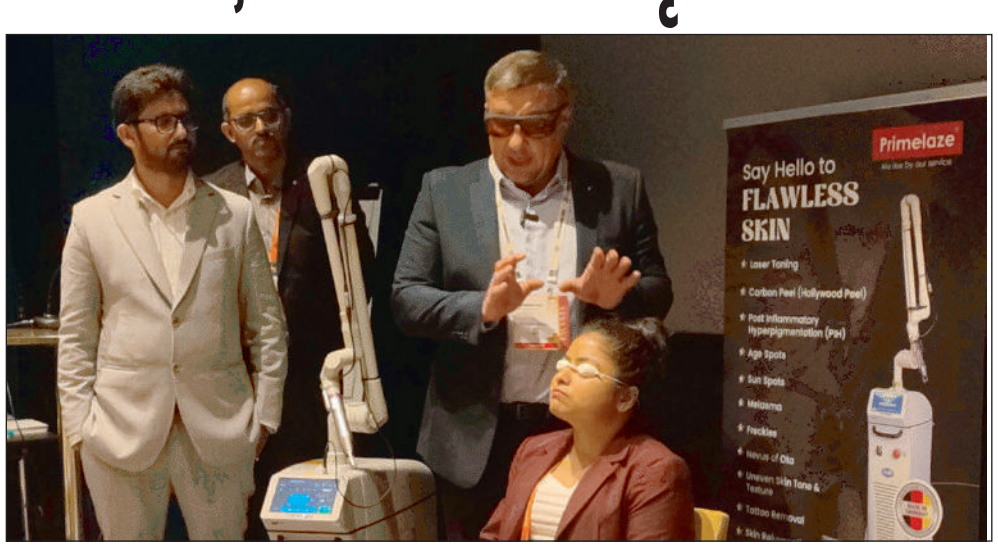

प्राइमलेज़ के निदेशक अर्जुन शर्मा ने कहा, "हम भारतीय सौंदर्य एवं त्वचा चिकित्सा विशेषज्ञों को विश्वस्तरीय तकनीक और उत्पाद उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारा उद्देश्य है कि हम त्वचा रोग विशेषज्ञों को सशक्त बनाएं और उन्नत तकनीक के माध्यम से रोगियों को बेहतर देखभाल प्रदान करें। यह उन्नत लेज़र विभिन्न प्रकार की पिग्मेंटेशन समस्याओं के इलाज में अत्यंत प्रभावी है, जिनमें मेलाज़्मा, सनस्पॉट्स और एज स्पॉट्स शामिल हैं। यह एपिडर्मल और डर्मल दोनों प्रकार की पिग्मेंटेशन को लक्षित कर सकता है, जिससे यह झाइयों, लेन्टिजाइन्स (काले धब्बे) और जन्म से मौजूद निशानों जैसी स्थितियों के उपचार के लिए उपयुक्त साबित होता है।"

प्राइमलेज़ प्राइवेट लिमिटेड के बारे में:

प्राइमलेज़ भारत की अग्रणी त्वचा-चिकित्सा समाधान प्रदाता कंपनी है, जो मेडिकल विशेषज्ञों को उन्नत वैश्विक तकनीक और सेवाएं प्रदान करने पर केंद्रित है। वर्ष 2016 में स्थापित इस कंपनी ने अल्प समय में बाज़ार में अग्रणी स्थान प्राप्त किया है। तकनीक और ग्राहक सेवा में 30 वर्षों से अधिक के अनुभव के साथ, सह-संस्थापक धिनेश आर और अर्जुन शर्मा ने प्राइमलेज़ को कम समय में अग्रणी स्थान दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। 2000 से अधिक डॉक्टरों के नैदानिक परीक्षण और समर्थन के आधार पर, प्राइमलेज़ भारत भर में अपने विस्तार को जारी रखते हुए अत्याधुनिक सौंदर्य तकनीक और त्वचा स्वास्थ्य से जुड़े ऐसे उत्पाद उपलब्ध करा रहा है, जो मरीज़ों को असरदार और भरोसेमंद इलाज का अनुभव देते हैं।

कर्मचारियों का दर्द पावर कारपोरेशन नहीं सुनता

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ। जून 17 को उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन निविदा/संविदा कर्मचारी संघ लखनऊ द्वारा अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड शक्ति भवन लखनऊ को अवगत कराया गया था कि दिनांक 23 मई 2025 को संगठन पदाधिकारियों व पावर कार्पोरेशन प्रबंधन के बीच हुई वार्ता बैठक में बनी सहमति के बावजूद भी संगठन द्वारा 20 मई 2025 से 72 घंटे के किए गए कार्य बहिष्कार में हटाए गए 59 कर्मचारियों को कार्य पर वापस नहीं लिया गया।

संगठन द्वारा अवगत कराया गया था कि जहां एक तरफ पावर कार्पोरेशन प्रबंधन द्वारा कर्मचारियों कि अधिक संख्या दिखाकर 45% अनुभवी व मेहनतकश आउटसोर्स कर्मचारियों को छटनी के नाम पर कार्य से हटा दिया गया वहीं दूसरी तरफ अधिकारियों

द्वारा अपने निजी हितलाभ हेतु अनुभवहीन व नये कर्मचारियों को कार्य पर तैनात किया जा रहा है।

संगठन द्वारा अवगत कराया गया था कि पावर कार्पोरेशन प्रबंधन द्वारा परिचालन व अनुरक्षण कार्य में लगे कर्मचारियों कि अधिक संख्या दिखा कर परिचालन व अनुरक्षण का कार्य कर रहे अनुभवी कर्मचारियों कि छंटनी कर दी गई वहीं दूसरी तरफ अधिकारियों का निजी कार्य करने वाले कर्मचारियों का नाम अनुरक्षण व परिचालन कार्य में दिखाकर उन्हें दोहरा लाभ दिलाया जा रहा है जिससे जहां एक तरफ शेष बचे व परिचालन एवं अनुरक्षण का कार्य करने वाले कर्मचारियों पर कार्य का अधिक भार पड़ने से जहां एक तरफ कर्मचारियों कि दुर्घटनाएं हो रही है वहीं दूसरी तरफ विभाग का कार्य प्रभावित हो रहा है।

जिसको ध्यान में रखकर अध्यक्ष उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड शक्ति भवन लखनऊ द्वारा MD मध्यांचल रिया केजरीवाल को उक्त समस्याओं का परीक्षण कर समुचित निदानात्मक कार्यवाही करते हुए दिनांक 27 जून 2025 तक अवगत कराने का निर्देश दिया गया था किन्तु आज तक उक्त समस्याओं का समाधान नहीं किया गया। जिससे कर्मचारियों में भारी आक्रोश व्याप्त है जो किसी भी समय आन्दोलन का रुप धारण कर सकता है।

करह आश्रम में धूमधाम से सम्पन्न हुआ गोस्वामी तुलसी जयंती और श्रीकरह बिहारी सरकार संत रामदास महाराज का जन्मोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। दावानल कुंड क्षेत्र स्थित करह आश्रम में गोस्वामी तुलसी जयंती, श्रीकरह बिहारी सरकार संत रामदास महाराज का जन्मोत्सव एवं झूलन महोत्सव अत्यंत श्रद्धा व धूमधाम के साथ संपन्न हुआ।महोत्सव का शुभारंभ संत गोस्वामी तुलसीदास महाराज व करह बिहारी सरकार रामदास महाराज की प्रतिमाओं का संतों व विद्वानों ने वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन एवं माल्यार्पण करके किया।

इस अवसर पर आयोजित सन्त-विद्वत सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए महंत जगन्नाथ दास शास्त्री एवं महंत प्रीतम दास महाराज ने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास महाराज भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त थे।उन्होंने अपना जन्म होते ही सर्वप्रथम भगवान श्रीराम का नाम उच्चारण किया था।इसीलिए उनका प्रारम्भिक नाम रामबोला था।

संत रामकृपालु दास चित्रकूटी एवं महंत राम कल्याण दास भक्तमाली ने कहा कि प्रख्यात संत रामदास महाराज

करह बिहारी सरकार प्राचीन संत परम्परा के संवाहक संत थे।उन जैसी पुण्यात्माओं का अब युग ही समाप्त हो गया है।

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं महंत आचार्य रामदेव चतुर्वेदी ने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास महाराज कलयुग पावनावतार थे।उन्हें महर्षि वाल्मीकि का अवतार माना गया है ऐसा माना जाता है,कि उन्हें भगवान श्रीराम व भगवान शिव के साक्षात दर्शन हुए थे।

करह आश्रम के प्रबंधक बड़े भगतजी एवं आचार्य राम अवतार भगतजी ने कहा कि गोस्वामी तुलसीदास महाराज द्वारा रचित ग्रंथ श्रीराम चरित मानस एक ऐसा ग्रंथ है,जिसकी समूचे विश्व में अत्यधिक मांग है।क्योंकि इसमें लोक कल्याण के विभिन्न पहलू समाहित हैं।इसीलिए इसके अनुवाद विभिन्न भाषाओं में हुए हैं।

महोत्सव में महंत दीनदास महाराज, राम कुमार त्रिपाठी, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, प्राचार्य अनिल शास्त्री, भागवताचार्य विवेक शास्त्री आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।संचालन संत सेवानंद ब्रह्मचारी ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन बड़े भगतजी ने किया।महोत्सव का समापन संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।

ब्रज रस शैली के प्रवर्तक हैं चित्रकार द्वारिका आनंद

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

ब्रज रस शैली के प्रवर्तक व अंतरराष्ट्रीय ख्याति के प्रख्यात चित्रकार द्वारिका आनंद इन दिनों अपनी चित्रकला के द्वारा समूचे विश्व में अत्यधिक ख्याति अर्जित कर रहे हैं।इनकी चित्रकला के विषय हैं - भगवान श्रीकृष्ण और उनसे संबंधित विषय। साथ ही वे अन्य धार्मिक विषयों से संबंधित अत्यन्त नयनाभिराम व चित्ताकर्षक चित्रकारी भी कर रहे हैं।भगवान श्रीकृष्ण न केवल उनके आराध्य अपितु उनके जीवन के प्रेरणा स्रोत भी हैं। वे पूर्णत: भगवान श्रीकृष्ण के रंग में रचे बसे हैं।वे भगवान श्रीकृष्ण के माध्यम से पिछले लगभग 40 वर्षों से चित्रकला की साधना में रत हैं।इनकी चित्रकला में श्रीकृष्ण के अनेक मनमोहक रुप देखने को मिलते हैं। उनकी चित्रकारी में भगवान श्रीकृष्ण कभी बांसुरी बजाते नज़र आते हैं, तो कभी गाय चराते हुए।कभी वे माखन चोरी करते दिखाई देते हैं,तो कभी ब्रज गोपीकाओं के साथ रास रचाते हुए।कभी वे राधा के साथ क्रीड़ा कर रहे होते हैं,तो कभी मीरा के प्रभु बनकर उनके पीछे खड़े दिखाई देते हैं।यही उनकी चित्रकला की विशेषता है। वे ब्रजराज भगवान श्रीकृष्ण व उनके विभिन्न लीला प्रसंगों का चित्रांकन ब्रज की पारंपरिक चित्र शैली में कर रहे हैं।उन्होंने तमाम "पोर्ट्रेट" भी बनाए हुए हैं।जो कि विदेशों तक गए हैं।

मुरैना (मध्यप्रदेश) के गोपालपुरा ग्राम में 05 जनवरी, सन् 1969 को जन्मे चित्रकार द्वारिका आनंद किसी अज्ञात दैवीय प्रेरणा से अपनी मात्र 10 वर्ष की अल्पायु में ही सदैव के लिए अपना घर-परिवार छोड़कर वृन्दावन आ गए थे।वे फिर यहीं के होकर रह गए।यहां उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण को ही अपना गुरु मानते हुए आड़ी-तिरछी रेखाएं खींचते हुए चित्रकला की साधना प्रारंभ की।बहुत ही कम समय में वे इस क्षेत्र में निष्णात हो गए। प्रख्यात चित्रकार द्वारिका आनंद जो चित्र बनाते हैं वो अत्यन्त श्रम साध्य, समय साध्य व अर्थ साध्य हुआ करते हैं।इसके लिए सर्व प्रथम कैनवास पर रेखा-चित्र बनाया जाता है।रेखा-चित्र के जिन भागों को उभरना होता है, उन पर "एंब्रोसिंग" की जाती है। "एंब्रोसिंग" वाले स्थानों पर विशुद्ध सोने का वर्क लगाया जाता है।फिर होती है बेशकीमती नगों की जड़ाई। नगों की जड़ाई पूर्ण होने पर चित्रों में तैल रंगों का कार्य होता है।रंगों, सोने व नगों का काम होने के कारण उनकी चित्रकला त्रिआयामी हो जाती है।साथ ही उसका सौंदर्य व मूल्य अत्यधिक बढ़ जाता है। चित्रकार द्वारिका आनंद की चित्रकला में ब्रज रस दर्शन का साकार स्वरुप एवं ब्रज संस्कृति की सुघड़ छाप है। रस व रंग के इस अद्भुत चितेरे ने श्रीधाम वृन्दावन की रसोपासना के गूढ़तम रहस्यों व उसके सूक्ष्म भागों का चित्रण चित्रकला के इतिहास में सर्वप्रथम किया है।ब्रज के रस सिद्ध रसिकाचार्यों की वाणी को अपने हृदय के अंतरतम में आत्मसात कर अपनी सशक्त तूलिका से चित्रांकित करने वाले द्वारिका आनंद वाणी साहित्य के भी अद्भुत चितेरे हैं। रस सिद्ध संतों के वाणी साहित्य पर आधारित चित्रांकन उनकी चित्रकला का प्रमुख विषय है।क्योंकि वे अपने चित्रों के द्वारा संतों की वाणियों को सुरक्षित रखना चाहते हैं।इनके जो चित्र सर्वाधिक चर्चित रहे हैं, वे हैं: "प्रथम दृष्टया वृन्दावन", "सप्तनिधि वृन्दावन", "लैं स्वतंत्र सबसौं परे, परि भक्तन आधीन", "मन उरझायौ वसन सुरझायौ", "दिव्य वृन्दावन", "निधिवन की निधि", "राधा सब वेदन कौ सार", सजनी करलौं चंद्र लाथन दुरायगौ", "गौरस लोभी ब्रज रसिया", "वीणा करे मधुमति मधुर" आदि आदि।

इन सभी कलाकृतियों का बहुत बड़ी संख्या में कैलेंडरों के रुप मुद्रण भी हुआ है, जो कि देश-विदेश के तमाम मंदिरों की शोभा बढ़ा रहे हैं।इनकी बनाई गई कलाकृति "मन उरझायौ वसन सुरझायौ" वर्तमान में फ्रांस के संग्रहालय में लगी हुई है।इन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता एवं श्रीराधा सुधा निधि के अनेक श्लोकों के

भाव पर भी चित्र-रचना की है। चित्रकार द्वारिका आनंद ने स्वामी हरिदास, भक्तकवि सूरदास, हरिराम व्यास, केशव दास आदि अनेक भक्त कवियों के पदों के आधार पर भी तैल चित्रों की रचना की है।इन्होंने ठाकुर बांके बिहारी, मथुरा की रंगेश्वरी काली देवी, स्वामी हरिदास, सनातन गोस्वामी, रुप गोस्वामी, गोपाल भट्ट गोस्वामी, हरिराम व्यास, मलूक दास, हरिवंश महाप्रभु, निंबार्काचार्य, परमानंद दास, कृष्णानंद, सूरदास बाबा, सुदामा दास महाराज, राधिका चरण दास, ललित किशोर देव जू, बाबा देवपुरी, राम दास महाराज, बालकृष्ण दास महाराज कार्ष्णि श्री हरिनाम दास महाराज, सुग्रीव किलाधीश जगद्गुरु स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य महाराज (अयोध्या) आदि प्रख्यात संतों के पोर्ट्रेट बना कर भी अत्यन्त यश व कीर्ति अर्जित की है।

चित्रकार द्वारिका आनंद के द्वारा बनाए गए चित्र गीता प्रेस, गोरखपुर की पुस्तकों में प्राय: प्रकाशित होते रहते हैं। वे अभी तक हजारों तैल चित्र व स्वर्ण चित्र बना चुके हैं।इनकी सभी कलाकृतियों में उनका आध्यात्मिक चिन्तन परिलक्षित होता है। द्वारिकाजी की चित्रकला इतनी भाव दर्शी है कि उसमें हरेक खो जाता है। लोग-बाग उनके चित्रों को जन्म दिन व विवाह आदि के अवसर पर उपहार में भी देने लग गए हैं।इनके चित्रों को अपने घर व प्रतिष्ठान आदि में लगाया जाना "स्टेट्स सिम्बल" समझा जाता है।साथ ही उनके चित्रों की अपने देश के अलावा ब्रिटेन, अमेरिका, रूस, फिलीपींस, हॉन्गकॉन्ग एवं बैंकॉक आदि देशों में भी जबरदस्त मांग है।श्रीधाम वृन्दावन के हनुमान बाग स्थित उनकी "श्री मुक्तानन्द चित्रवीथि" का अवलोकन कई जगद्गुरु शंकराचार्यों, महामण्डलेश्वरों, राष्ट्रीय संतों, राजनेताओं एवं अनेक प्रबुद्ध व्यक्तियों के द्वारा किया जा चुका है। जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारिका-शारदा पीठाधीश्वर स्वामी स्वरुपानंद सरस्वती महाराज ने चित्रकार द्वारिका आनंद की चित्रकला से प्रभावित होकर उन्हें "चित्रकला कोविद" की उपाधि से अलंकृत किया हुआ है।इनके चित्रों की समूचे देश में अनेक स्थानों पर प्रदर्शनी भी लग चुकी है।जिन्हें अत्यधिक सराहना मिली है।

चित्रकार द्वारिका आनंद के चित्रों में स्निग्ध कोमल भाव, मौलिक सृजनात्मकता एवं दैविक आकर्षण है। इसीलिए वे चित्रकला की दुनियां में अपनी एक अलग पहचान बना चुके हैं। वे अत्यधिक प्रभावशाली व बेहतरीन कलाकार हैं। उनकी चित्रकारी का एक वैचारिक आधार है, जो कि स्वाभाविक व वास्तविक है। उनके कार्य में उनके पूर्ववर्तियों की छाया कहीं पर भी नज़र नहीं आती है।वह अध्ययन तो सबका करते हैं परन्तु प्रेरित किसी से भी नहीं होते हैं।क्योंकि उनकी कला केवल रंगों से ही नहीं अपितु मस्तिष्क से भी संचालित होती है।इन्होंने अपने चित्रों के द्वारा एक बहुरंगी संसार रचा है। उन जैसी आध्यात्मिक चित्रकारी करना किसी चमत्कार से कम नहीं है। इसीलिए उनकी चित्रकारी के हुनर का जादू बेमिसाल है। उनकी चित्रकला रचनात्मकता से सराबोर है। इसीलिए वो चित्रकारों की भीड़ में उन्हें एक अलग पहचान देती है।इन्हें देश के तमाम प्रख्यात संतों व राजनेताओं आदि के द्वारा अनगिनत पुरस्कारों व सम्मानों से नवाजा जा चुका है। पिछले कुछ वर्षों में ही उनकी चित्रकारी का ग्राफ तेजी से ऊपर बढ़ा है और अभी भी निरन्तर बढ़ रहा है।

पूर्व महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल के पति डॉ. देवीसिंह शेखावत ने चित्रकार द्वारिका आनंद की कलाकृतियों का अवलोकन करके कहा है "आनन्दकंद प्रिया-प्रियतम की भक्ति पूर्ण रसमयी लीलाओं का जो चित्रण चित्रकार द्वारिका आनंद ने किया है, वो अनुपम है।इनके द्वारा बनाया गया वृन्दावन सप्तनिधि दर्शन नामक तैल चित्र न केवल एक चित्र अपितु इस सभी के परमाराध्य भगवान श्रीकृष्ण के विभिन्न अलौकिक स्वरूपों के साक्षात दर्शन का एक सुन्दर माध्यम है।"

विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष स्व. अशोक सिंघल ने कहा था "चित्रकार द्वारिका आनंद एक ऐसे चित्रकार हैं, जो किसी विराग से अपनी मुराद पूरी करने के बजाय स्वयं मशाल जलाने में भरोसा रखते हैं।चित्रकारी करना उनके खून में है।इनके लिए लाखों व्यक्तियों का प्यार सबसे बड़ा पुरस्कार है।"

विश्व हिन्दू परिषद के अंतरराष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण तोगड़िया ने कहा है " आज के बदलते परिवेश में भारतीय व ब्रज संस्कृति की गरिमामयी छवि को बनाए रखने के लिए चित्रकार द्वारिका आनंद जैसे चित्रकारों की परम आवश्यकता है।क्योंकि कला का विकास ही जीवन को पूर्णत: प्रदान करता है। उनके द्वारा बनाए गए चित्रों को देखकर ऐसा लगता है जैसे अध्यात्म, धर्म, कला, संस्कृति, उपासना आदि सभी एक स्थान पर एकत्रित हो गए हों।"

चित्रकार द्वारिका आनंद ने अपनी चित्रकारी को धन कमाने का माध्यम न बनाकर शान्ति व संतुष्टि पाने का माध्यम बनाया है। वे अत्यन्त परिश्रमी व अपने कार्य के प्रति पूर्णत: समर्पित हैं। उनके लिए चित्रकला एक करियर नहीं अपितु जिन्दगी जीने का एक अलग तरीका है। वे चित्रकला के द्वारा भारतीय संस्कृति को विश्वव्यापी बनाना चाहते हैं। वे कर्म में विश्वास रखते हुए गीता के कर्मयोगी की भांति अपना जीवन जी रहे हैं। उनकी रहनी करनी अत्यन्त नियम निष्ठ व संयम निष्ठ है। वे अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं करते हैं। वे अविवाहित रहते हुए संतों जैसा जीवन जी रहे हैं।इनके इष्ट श्रीराधा कृष्ण हैं। भगवान श्रीकृष्ण में उनकी सहज वृति है। वे अपनी बाल्यावस्था से ही आत्मनिर्भर रहे हैं। उनका जीवन अत्यंत निस्पृह व असंपृक्त है।इनमें गजब का आत्म विश्वास है।इनका अपनी जिन्दगी जीने का ढंग अत्यन्त शान-ओ-शौकत से परिपूर्ण है। उन्होंने "दास" उपनाम से तमाम भक्ति परख काव्य रचनाएं की हैं।जो कि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई हैं।

चित्रकार द्वारिका आनंद को उनकी मर्मस्पर्शी चित्रकला के लिए जो सम्मान व उपाधियां प्राप्त हुई हैं, उनमें से प्रमुख ये हैं - संसद भवन में प्राप्त "अटल स्मृति सम्मान", "वेद स्मृति सम्मान", "ब्रज निधि सम्मान", "ब्रज शिरोमणि", "ब्रज गौरव सम्मान", "चित्रकला शिरोमणि सम्मान", "ब्रज विभूति सम्मान", "सनातन गौरव सम्मान", "प्रज्ञा रत्न सम्मान","चित्रकला कौविद सम्मान", "राष्ट्रीय गौरव सम्मान ", "न्यूज मेकर्स सम्मान", "एक्सीलेंस सम्मान" ,"भगवान निंबार्क सम्मान" , "कला कौमुदी सम्मान " , "नव चेतन सम्मान" , "अवंतिका सविता स्मृति सम्मान" , "वृंदावन गौरव श्रीवृद्धि सम्मान" , "एक्स्ट्रा आर्डिनरी सर्विस इन फील्ड ऑफ आर्ट सम्मान" , "अतुल स्मृति सम्मान" , "परंपरा रत्न सम्मान" , "अटल चित्रकला शिखर सम्मान" आदि के अलावा कई प्रख्यात संतों, राजनेताओं एवं समाजसेवियों के द्वारा भी प्राय: सम्मानित होते रहते हैं।

चित्रकार द्वारिका आनंद द्वारा संस्थापित श्रीमुक्तानंद चित्र वीथि ब्रज में चित्रकला के शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए वृहद स्तर पर कार्यरत है। जो कि ब्रज वृन्दावन के लिए अत्यन्त गौरव का विषय है।

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

(लेखक वृंदावन के प्रख्यात साहित्यकार और पत्रकार हैं।

डॉ. दलजीत कौर और दविंदर सिंह साहनी जी ने समाज में उत्कृष्ट कार्य कर रही प्रतिष्ठित संस्थाओं को पुरस्कार प्रदान किए।

राजनीति और मित्रता-आदर्श या अवसरवाद ? -अच्छे मित्र का साथ हो तो, बढ़ी से बढ़ी चुनौतियों से आसानी से निपटा जा सकता है

अंतर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस 3 अगस्त 2025 - अंतरराष्ट्रीय समुदाय को आपसी मित्रता बढ़ाने की सख़्त ज़रूरत

मित्रता एक ऐसा भावनात्मक रिश्ता है,जो रक्त संबंधों से परे दिलों की निकटता पर टिका होता है-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया

वैश्विक स्तरपर आज विभिन्न देशों के बीच कटुता बढ़ती जा रही है। विभिन्न समुदायों के बीच नफ़रत का दायरा बढ़ता जा रहा है। आंदोलनों का जाल अनेकों देश में घटित समस्याओं के चलते बढ़ता जा रहा है जो हम भारत- पाकिस्तान, रूस-यूक्रेन, इसराइल - हमास कंबोडिया- थाईलैंड, अमेरिका-ईरान, चीन- ताइवान व अन्य देशों के बीच सहित अनेको देशों में देख रहे हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि इन सब समस्याओं को पाटनें का सबसे सरल सस्ता सटीक उपाय है,मित्रता ! दोस्ती, अपनापन, यदि इस सटीक अस्त्र का उपयोग दुनियां के सभी देश करें तो यूक्रेन-रूस, हमास- इजरायल ईरान- इजरायल के बीच युद्ध व विभिन्न अंतरराष्ट्रीय यूनियनों के बीच कटुता कभी नहीं बढ़ेगी। विश्व के चारों ओर शांति रूपी स्नेह की बारिश होगी तो, खुशहाली को आना ही पड़ेगा। जिसपर हर देश का नागरिक खुशहाल जीवन का लुफ्त उठाएंगे। इसलिए ही संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 27 अप्रैल 2011 को अपने 65 वें सेशन में एजेंडा आइटम नंबर 15 कल्चर ऑफ पीस के अंतर्गत 30 जुलाई को अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस मनाने का निर्णय लिया गया था। जबकि भारत अमेरिका बांग्लादेश सहित अनेकों देश अंतर्राष्ट्रीय फ्रेंडशिप डे अगस्त के पहले रविवार को मनाते आ रहे हैं जो इस वर्ष 2025 के अगस्त का पहला रविवार 3 अगस्त 2025 आया है। वर्तमान परिपेक्ष में अगर मित्रता का वैश्विक परिपेक्ष लेकर, दुनियां के पूरे देशों और नागरिकों द्वारा वर्ष 2025 में अपनाया जाती है तो मेरा मानना है कि आपसी युद्ध की नौबत कभी नहीं आएगी। चूंकि अच्छे मित्र का साथ हो तो बड़ी से बड़ी चुनौतियों सेआसानी से निपटा जा सकता है। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,राजनीति और मित्रता - आदर्श या अवसरवाद ?-अच्छे मित्र का साथ हो तो,बढ़ी से बढ़ी चुनौतियों से आसानी से निपटा जा सकता है।

साथियों बात अगर हम मित्र के महत्व को समझने की करें तो, कोई व्यक्ति जन्म के बाद ख़ुद से अपने बल पर जो पहला रिश्ता बनाता है, उसे दोस्ती कहते हैं। परिवार से बाहर एक दोस्त ही हमारा मार्गदर्शक,सलाहकार, राजदार और शुभचिंतक होता है। इसी दोस्ती के नाम एक खास दिन समर्पित किया गया है,जिसे फ्रेंडशिप डे के तौर पर मनाया जाता है। हालांकि दुनियां भर में साल में दो बार दोस्ती दिवस मनाते हैं। ऐसे में कई लोग असमंजस में हैं कि असली मित्रता दिवस किस दिन मनाएं। आमतौर पर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अंतर्राष्ट्रीय फ्रेंडशिप डे 30 जुलाई को मनाया जाता है, जबकि भारत में हर साल अगस्त माह के पहले रविवार को मनाया जाता है, इस दिन हर कोई अपने दोस्तों के साथ एंजॉय करता है, इस साल भारत में 3 अगस्त को फ्रेंडशिप डे मनाया जा रहा है।व्यक्ति के जीवन में दोस्त जरूर होते हैं। अगर न हों तो एक दोस्त जरूर बनाना चाहिए। दोस्ती कभी भी हो सकती हैं, उसमें उम्र, लिंग या किसी अन्य तरीके का कोई भेद नहीं होता। दोस्त आपका ऐसा समर्थक होता है जो हमारी तरक्की के लिए अच्छी सलाह देता है और हमारी खुशी में खुश होता है। ऐसे में हमारे जीवन को सरल, सुलझा हुआ और अधिक मनोरंजक बनाने के लिए दोस्ती दिवस मनाते हैं और इस मौके पर दोस्त को खास महसूस कराते हैं।दोस्ती जीवन के सबसे अनमोल बंधनों में से एक है।यह रिश्ता खून का न होते हुए भी बढ़-चढ़कर साथ निभाता है।सात अक्षरों का शब्द फ्रैंड्स बेशक बहुत सरल हो, लेकिन जब हम किसी परेशानी में होते हैं तो दोस्त हमारे साथ होते हैं। वैसे तो दोस्ती को सेलिब्रेट करने के लिए किसी खास दिन की जरूरत नहीं है,फिर भी इस दिन को और खास बनाने के लिए हर साल फ्रेंडशिप-डे मनाया जाता है।यह दिन दोस्तों के महत्व और हमारे जीवन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को भी सम्मान और मान्यता देता है। यह दिन प्रशंसा व्यक्त करने, रिश्तों को मजबूत करने और दोस्ती से मिलने वाली खुशी का जश्न मनाने का अवसर है। इस दिन,लोग आम तौर पर उपहारों का आदान-प्रदान करते हैं, संदेश भेजते हैं और एक साथ समय बिताते हैं, ये सभी मजबूत और सहायक दोस्ती के महत्व को मजबूत करने में मदद करते हैं। जबकि विशिष्ट तिथि देश के अनुसार अलग-अलग हो सकती है, मूल विचार एक ही रहता है, यानी हमारे जीवन को समृद्ध करने वाले रिश्तों का जश्न मनाना और उन्हें संजोने को रेखांकित करना जरूरी है।

साथिया बातें अगर हम 3 अगस्त 2025 को अंतर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस के परिपेक्ष में राजनीति और मित्रता एक आदर्श या अवसरवाद के रूप में देखे तो,भारत और अमेरिका की दोस्ती को राजनीति और अवसरवाद दोनों के नजरिए से देखा जा सकता है। जिसका सटीक उदाहरण ट्रंप द्वारा लगाए गए टैरिफ जो 1 अगस्त 2025 से लागू था उसको 7 अगस्त तक एक्सटेंशन कर दिए हैं कुछ विश्लेषकों का मानना है कि यह एक रणनीतिक साझेदारी है जो दोनों देशों के हितों को साधने का काम करती है,जबकि अन्य इसे अवसरवादी संबंधों के रूप में देखते हैं, जहां दोनों देश अपने- अपने फायदे के लिए एक-दूसरे का इस्तेमाल करते हैं। जो रेखांकित करने वाली बात है

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस को मनाने के विचार व उद्देश्यों की करें तो, संयुक्त राष्ट्र ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट पर लिखा,संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 2011 में अंतर्राष्ट्रीय मैत्री दिवस की घोषणा इस विचार के साथ की गई थी कि लोगों, देशों, संस्कृतियों और व्यक्तियों के बीच मित्रता शांति प्रयासों को प्रेरित कर सकती है और समुदायों के बीच सेतु का निर्माण कर सकती है। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य लोगों, देशों, संस्कृतियों और व्यक्तियों के बीच मैत्री को संजोना था, जो शांति प्रयासों को प्रेरित कर सकें और समुदायों के बीच सेतु का निर्माण कर सकें। अंतर्राष्ट्रीय मैत्री दिवस मनाने के लिए,संयुक्त राष्ट्र सरकारों राष्ट्रों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और अन्य सामाजिक समूहों को मित्रता और इसके महत्व के बारे में लोगों के बीच संवाद को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम,प्रतियोगिताएं और अन्यगतिविधियां आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। हमारा विश्व अनेक चुनौतियों, संकटों और विभाजनकारी शक्तियों का सामना कर रहा है,जैसे गरीबी, हिंसा, मानवाधिकारों का हनन,तथा अन्य अनेक जो विश्व के लोगों के बीच शांति, सुरक्षा, विकास और सामाजिक सद्भाव को कमजोर करते हैं।उन संकटों और चुनौतियों का सामना करने के लिए, मानव एकजुटता की साझा भावना को बढ़ावा देने और उसका बचाव करके उनके मूल कारणों का समाधान किया जाना चाहिए, जिसके कई रूप हैं, जिनमें से सबसे सरल है मित्रता।मित्रता के माध्यम से,सौहार्दपूर्ण संबंधों को संचित करके और विश्वास के मजबूत संबंध विकसित करके,हम उन मूलभूत बदलावों में योगदान दे सकते हैं जो स्थायी स्थिरता प्राप्त करने के लिए तत्काल आवश्यक हैं, एक सुरक्षा जाल बुन सकते हैं जो हम सभी की रक्षा करेगा, और एक बेहतर विश्व के लिए जुनून पैदा करेगा जहां सभी लोग व्यापक भलाई के लिए सटीकता से एकजुट होंगे।

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस की पृष्ठभूमि की करें तो,प्रस्ताव में युवा लोगों को भावी नेताओं के रूप में सामुदायिक गतिविधियों में शामिल करने पर जोर दिया गया है, जिसमें विभिन्न संस्कृतियां शामिल हों और अंतर्राष्ट्रीय समझ और विविधता के प्रति सम्मान को बढ़ावा मिले।अंतर्राष्ट्रीय मैत्री दिवस के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र सरकारों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और नागरिक समाज समूहों को ऐसे आयोजन, गतिविधियां और पहल करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो सभ्यताओं के बीच संवाद, एकजुटता, आपसी समझ और सामंजस्य को बढ़ावा देने की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के प्रयासों में योगदान दें।अंतर्राष्ट्रीय मैत्री दिवस एक पहल है जो यूनेस्को द्वारा शांति की संस्कृति को मूल्यों, दृष्टिकोणों और व्यवहारों के एक समूह के रूप में परिभाषित करने के प्रस्ताव पर आधारित है जो हिंसा को अस्वीकार करते हैं और समस्याओं को हल करने के उद्देश्य से उनके मूल कारणों को संबोधित करके संघर्षों को रोकने का प्रयास करते हैं। इसे 1997 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाया गया था।शांति की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कार्य, शिक्षा के माध्यम से शांति की संस्कृति को बढ़ावा देना; सतत आर्थिक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देना;सभी मानव अधिकारों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना;महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता सुनिश्चित करना;लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ावा देना;समझ, सहिष्णुता और एकजुटता को बढ़ावा देना;सहभागी संचार और सूचना और ज्ञान के मुक्त प्रवाह का समर्थन करना;अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को अत्यंत जरूरी बढ़ावा देना।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि राजनीति और मित्रता - आदर्श या अवसरवाद ?-अच्छे मित्र का साथ हो तो,बढ़ी से बढ़ी चुनौतियों से आसानी से निपटा जा सकता है।अंतर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस 3 अगस्त 2025-अंतरराष्ट्रीय समुदाय को आपसी मित्रता बढ़ाने की सख़्त ज़रूरत है।मित्रता एक ऐसा भावनात्मक रिश्ता है,जो रक्त संबंधों से परे दिलों की निकटता पर टिका होता है।

60 लाख की मर्सिडीज जलभराव में फंसकर हुई खराब, मालिक ने नगर निगम से मांगा 5 लाख का मुआवजा

गाजियाबाद में भारी बारिश के कारण वसुंधरा के किशोर की Mercedes GLA 200D जलभराव में फंसकर खराब हो गई। किशोर ने नगर निगम को 5 लाख रुपये के मुआवजे की कानूनी नोटिस भेजी है क्योंकि जल निकासी की व्यवस्था न होने से उनकी 60 लाख की कार को नुकसान हुआ है। नगर आयुक्त ने कहा कि कार मालिक को जलभराव और खराबी का संबंध साबित करना होगा।

नई दिल्ली। गाजियाबाद में हाल ही में हुई भारी बारिश ने ना सिर्फ आम लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी पर असर डाला, बल्कि एक लग्ज़री कार मालिक को भी परेशानी में डाल दिया। वसुंधरा के निवासी किशोर नाम के व्यक्ति ने दावा किया है कि उनकी Mercedes GLA 200D श्याम पार्क एक्सटेंशन इलाके में जलभराव के कारण खराब हो गई। मामला सिर्फ कार खराब होने तक नहीं रुका, उन्होंने नगर निगम को 5 लाख रुपये के मुआवजे की कानूनी नोटिस भी भेज दी है।

क्या है मामला?

किशोर ने बताया कि 23 जुलाई को वो लाजपत नगर जा रहे थे, तभी उनकी मर्सिडीज भारी बारिश के चलते जलमग्न सड़क में फंस गई और इंजन बंद हो गया। उन्होंने कहा कि इलाके में जल निकासी की कोई व्यवस्था नहीं थी, जिसकी वजह से उनकी कार को टो करके नोएडा स्थित एक सर्विस सेंटर तक ले जाना पड़ा। कार की मरम्मत का खर्च लाखों में पहुंच सकता है।

उन्होंने बताया कि साल 2018 में उन्होंने ये कार करीब 60 लाख रुपये में खरीदी थी और अब इसकी हालत देखकर उन्हें भारी नुकसान झेलना पड़ रहा है। इसीलिए, उन्होंने नगर निगम को नोटिस भेजा है कि अगर 15 दिन के भीतर कोई कार्रवाई नहीं हुई, तो वे हाई कोर्ट में जनहित याचिका दाखिल करेंगे।

नगर निगम का पक्ष

नगर आयुक्त विक्रमादित्य मलिक ने इस पर प्रतिक्रिया दी और कहा कि यह साबित करना कार मालिक की जिम्मेदारी है कि जलभराव और कार की खराबी का सीधा संबंध है। उनका यह भी कहना है कि उस दिन कई वाहन उसी रास्ते से गुजरे थे, लेकिन ऐसी कोई और शिकायत नहीं मिली। साथ ही, उन्होंने मौसम विभाग द्वारा पहले से चेतावनी जारी होने का हवाला भी दिया।

किशोर का कहना है कि यह सिर्फ उनका निजी नुकसान नहीं, बल्कि एक बड़े प्रशासनिक मुद्दे का उदाहरण है। उनकी मंशा सिस्टम की जवाबदेही तय करवाने की है, जिससे भविष्य में आम नागरिकों को ऐसी परेशानी ना हो।

इस इलेक्ट्रिक कार ने बनाया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड, सिंगल चार्ज में 1,205km दौड़ने वाली बनी पहली ईवी कार

ल्यूसिड मोटर्स की इलेक्ट्रिक कार Lucid Air Grand Touring ने एक चार्ज में स्विट्जरलैंड से म्यूनिख तक 1205 किमी का सफर तय करके गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। इससे पहले 2024 में भी इस कार ने नौ देशों का सफर किया था। यह कार 831 PS की पावर और 270 किमी/घंटा की टॉप स्पीड देती है। 16 मिनट की चार्जिंग में 400 किमी तक चलती है।

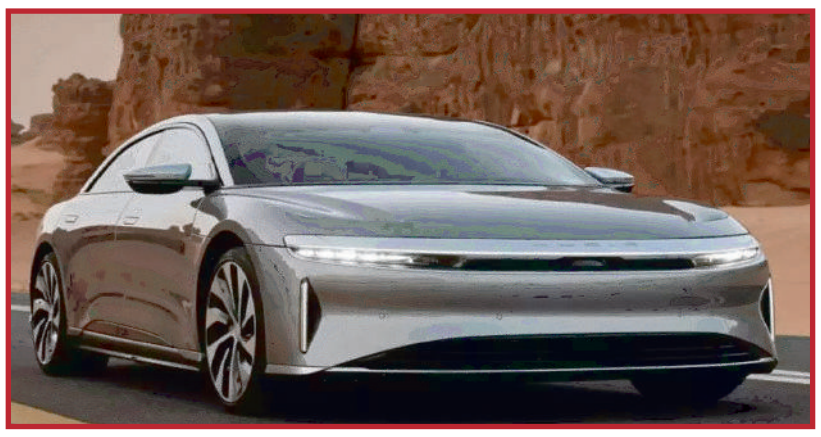

नई दिल्ली। अमेरिकी इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता कंपनी Lucid Motors ने एक बार फिर दुनिया को दिखा दिया है कि EV तकनीक कितनी आगे बढ़ चुकी है। कंपनी ने हाल ही में एक नया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बना डाला है। कंपनी की इलेक्ट्रिक कार Lucid Air Grand Touring ने स्विट्जरलैंड के सेंट मोरिट्ज से लेकर जर्मनी के म्यूनिख तक का सफर एक सिंगल चार्ज में पूरा किया है। इस दूरी को कार ने फुल चार्जिंग में पूरा किया है। इस सफर को पूरा करने में इसे 1,205 किलोमीटर की दूरी तय करनी पड़ी। आइए विस्तार में जानते हैं कि यह इलेक्ट्रिक कार किन बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है?

इससे पहले भी बना चुकी है रिकॉर्ड

इससे पहले भी Lucid Air Grand Touring ने एक रिकॉर्ड बनाया है। साल 2024 में इसने एक चार्ज में नौ देशों का सफर कर इलेक्ट्रिक कारों की दुनिया में तहलका मचा दिया था। इस बार इस कार के जरिए बनाया गया रिकॉर्ड और भी खास है, क्योंकि यह असली सड़क स्थितियों में बनाया गया है, न कि किसी लैब टेस्ट में नहीं किया है। इसके सफर में पहाड़ियों से लेकर जर्मन ऑटोबान तक की रफ्तार और भरेसो को परखा गया है।

Lucid Air Grand Touring के फीचर्स

इसे कई बेहतरीन और एडवांस इलेक्ट्रिक सिस्टम के साथ पेश किया जाता है। कंपनी की तरफ से दावा किया जाता है कि इसकी WLTP रेंज 960 किमी है। यह 831 PS की पावर जनरेट करता है। इसकी टॉप स्पीड 270 किमी/घंटा है। यह 16 मिनट की चार्जिंग में 400 किमी की रेंज देती है। इसका हाई-वोल्टेज आर्किटेक्चर और स्मार्ट बैटरी मैनेजमेंट सिस्टम इसे लंबी दूरी और तेज चार्जिंग के मामले में बाकी सभी EVs से ऊपर खड़ा करता है।

इसका सऊदी अरब का कनेक्शन

Lucid Motors भले ही कैलिफोर्निया आधारित हो, लेकिन इसकी कमान अब सऊदी अरब के पब्लिक इन्वेस्टमेंट फंड (PIF) के हाथ में है, जो कंपनी की करीब 60% हिस्सेदारी रखता है। कंपनी ने किंग अब्दुल्लाह इकोनॉमिक सिटी (KAEC) में अपनी पहली इंटरनेशनल मैन्युफैक्चरिंग यूनिट शुरू की है और सऊदी सरकार के साथ एक समझौते के तहत अगले 10 सालों में 1 लाख गाड़ियां सप्लाई की जाएंगी। यह रिकॉर्ड ना सिर्फ EV इंडस्ट्री की नई दिशा को दिखाता है, बल्कि यह भी बताता है कि अब इलेक्ट्रिक कारें लंबी दूरी तय करने में पेट्रोल कारों को भी पीछे छोड़ सकती हैं।

विवादों के बीच इतिहास से संवाद: क्या कहती है 'द बंगाल फाइल्स'?

पश्चिम बंगाल की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर हमेशा से चर्चा का विषय रही है। इस बार, यह चर्चा एक सिनेमाई रचना, द बंगाल फाइल्स के इर्द-गिर्द केंद्रित है, जो इतिहास के पन्नों को पलटने और सामाजिक संवाद को बढ़ावा देने का वादा करती है। यह फिल्म, जो विवेक रंजन अग्निहोत्री, पल्लवी जोशी और अभिषेक अग्रवाल द्वारा निर्मित है, उनकी फाइल्स ट्रिलॉजी का अंतिम हिस्सा है। यह 1946 के ग्रेट कलकत्ता किलिंग्स और नोआखाली दंगों जैसे ऐतिहासिक त्रासदियों पर आधारित है, जो भारत के विभाजनकाल के काले अध्यायों में से एक हैं। फिल्म का उद्देश्य इन घटनाओं की सच्चाई को सामने लाना है, जो न केवल ऐतिहासिक महत्व रखती हैं, बल्कि आज के समाज में भी गहरे सवाल उठाती हैं।

द बंगाल फाइल्स का आधार 1946 के उन दुखद घटनाओं पर टिका है, जिनमें हजारों लोग मारे गए और लाखों बेघर हुए। इतिहासकारों के अनुसार, ग्रेट कलकत्ता किलिंग्स में लगभग 4,000 लोग मारे गए थे, और नोआखाली दंगों ने सामाजिक ताने-बाने को गहरी चोट पहुंचाई थी। विवेक अग्निहोत्री, जो द ताशकंद फाइल्स और द कश्मीर फाइल्स जैसी फिल्मों के लिए जाने जाते हैं, अपनी रचनाओं में गहन शोध और ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर करने के लिए पहचाने जाते हैं। उनकी पिछली फिल्मों ने न केवल बॉक्स ऑफिस पर सफलता हासिल की, बल्कि समाज में सार्थक बहस को भी जन्म दिया। द बंगाल फाइल्स भी इसी दिशा में एक कदम है, जो इतिहास के उन पहलुओं को सामने लाने का प्रयास करती है, जिन्हें अक्सर भुला दिया जाता है।

फिल्म का टीजर, जिसमें कुछ संवेदनशील दृश्य शामिल हैं, ने पश्चिम बंगाल में बहस छेड़ दी है। विशेष रूप से, एक दृश्य जिसमें दुर्गा मूर्ति को जलते दिखाया गया है, ने कुछ लोगों की भावनाओं को प्रभावित किया है। पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है। इस संदर्भ में, तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने टीजर को सांस्कृतिक संवेदनाओं के खिलाफ माना और इसके खिलाफ कानूनी कदम उठाए। हालांकि, यह महत्वपूर्ण है कि हम इस मुद्दे को संतुलित दृष्टिकोण से देखें। जहां एक ओर सांस्कृतिक संवेदनाओं का सम्मान आवश्यक है, वहीं दूसरी ओर, सिनेमा को ऐतिहासिक तथ्यों को सामने लाने की स्वतंत्रता भी मिलनी चाहिए। भारतीय संविधान (अनुच्छेद 19) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को संरक्षण देता है, और सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन (सीबीएफसी) यह सुनिश्चित करता है कि फिल्में सामाजिक सौहार्द को बनाए रखें।

द बंगाल फाइल्स को लेकर उठा विवाद सिनेमा और समाज के बीच एक सकारात्मक संवाद का अवसर प्रदान करता है। फिल्म निर्माताओं का कहना है कि उनकी रचना गहन शोध पर आधारित है और इसका उद्देश्य नफरत फैलाना नहीं, बल्कि इतिहास के उन पहलुओं को उजागर करना है, जो समाज को एकजुट करने और भविष्य के लिए सबक सिखाने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, द कश्मीर फाइल्स ने जहां कश्मीरी पंडितों के दर्द को सामने लाया, वहीं इसने सामाजिक एकता और संवेदनशीलता पर भी चर्चा छेड़ी। इसी तरह, द बंगाल फाइल्स बंगाल के अतीत को समझने और उससे सीखने का एक मौका दे सकती है। सोशल मीडिया पर इस फिल्म को लेकर समर्थन और आलोचना दोनों देखने को मिल रही हैं। कुछ लोग इसे ऐतिहासिक सत्य को सामने लाने की साहसी कोशिश मानते हैं, जबकि अन्य इसे संवेदनशील मुद्दों को गलत तरीके से पेश करने का प्रयास मानते हैं। यह बहस स्वस्थ लोकतंत्र का हिस्सा है, जहां विचारों का आदान-प्रदान समाज को समृद्ध करता है।

द बंगाल फाइल्स का विश्व प्रीमियर अमेरिका के 11 शहरों में हो रहा है, जो दर्शाता है कि यह फिल्म न केवल भारत, बल्कि वैश्विक दर्शकों तक बंगाल के इतिहास को पहुंचाने का प्रयास कर रही है। यह एक सकारात्मक कदम है, क्योंकि यह भारत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को विश्व मंच पर ले जाता है। द बंगाल फाइल्स केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि एक ऐसा मंच है, जो हमें अपने इतिहास से रू-ब-रू कराता है। यह हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि सिनेमा का काम केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज को विचार करने, सीखने और एकजुट होने का अवसर भी देता है। 5 सितंबर 2025 को रिलीज होने वाली यह फिल्म निश्चित रूप से न केवल बंगाल के अतीत को उजागर करेगी, बल्कि यह भी दिखाएगी कि हम अपने इतिहास से कितना सीखने को तैयार हैं। सांस्कृतिक संवेदनशीलता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाते हुए, यह फिल्म समाज में सकारात्मक संवाद को बढ़ावा दे सकती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

समुदायों के बीच मजबूत सेतु बनाता है मित्रता दिवस

3 अगस्त 2025 को हम 'इंटरनेशनल फ्रेंडशिप डे' (अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस) मनाने जा रहे हैं। यह हर वर्ष अगस्त माह के प्रथम रविवार को मनाया जाता है। पाठकों को बताता चलूं कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, इस उत्सव की शुरुआत हॉलमार्क काड्र्स के संस्थापक जॉयस हॉल से मानी जाती है। हॉल ने 1950 के दशक में दोस्ती के सम्मान के लिए समर्पित एक दिन के विचार को सबसे पहले बढ़ावा दिया था। यह अवधारणा अमेरिका में तेजी से लोकप्रिय हुई और बाद में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैल गई। 2011 में, संयुक्त राष्ट्र ने इसे मान्यता दी। एक अन्य उपलब्ध जानकारी के अनुसार अंतरराष्ट्रीय फ्रेंडशिप डे को मनाने का विचार पहली बार 20वीं सदी की शुरुआत में आया। सबसे पहले यह 1958 में विश्व मैत्री धर्मयुद्ध में प्रस्तावित किया गया। यह एक अंतर्राष्ट्रीय नागरिक संगठन है। यहां यह भी गौरतलब है कि 'अंतरराष्ट्रीय फ्रेंडशिप डे' हर साल 30 जुलाई को मनाया जाता है, जिसकी घोषणा संयुक्त राष्ट्र (यूएन) द्वारा की गई है। वहीं भारत में हर साल अगस्त के पहले रविवार को फ्रेंडशिप डे मनाया जाता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस बार अंतर्राष्ट्रीय मित्रता दिवस 2025 की थीम 'शांति और विविधता के लिए पुलों का निर्माण' रखी गई है। इस थीम का उद्देश्य दोस्ती के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमि के लोगों के बीच समझ और एकता को बढ़ावा देना है। यह दिवस हमें मित्रता को बढ़ावा देने और मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित करता है और साझा मूल्यों के माध्यम से विविध समुदायों के बीच एक मजबूत सेतु का निर्माण करता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि मित्रता हमारे समाज में सहिष्णुता, सम्मान, नैतिकता और सहानुभूति के मूल्यों को बढ़ावा देती है। यह हमारे जीवन में दोस्ती के मूल्यों को पहचानने और उसकी सराहना करने और दुनिया भर में दूसरों की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाने का दिन है।

पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस पीले गुलाब से जुड़ा है, जिसे दोस्ती का प्रतीक माना जाता है। पीला गुलाब खुशी, सकारात्मक का संदेशवाहक, आपसी जुड़ाव (मैत्रीपूर्ण बंधन), गर्मजोशी, आपसी विश्वास, आनंद और नई शुरुआत का भी प्रतीक माना जाता है। यह आमतौर पर किसी को यह बताने के लिए दिया जाता है कि आप उनकी दोस्ती को कितना महत्व देते हैं। वास्तव में, एक मित्र ही होता है, जो मनुष्य के हरेक सुख-दुख में असली साथी होता है। संस्कृत में एक प्रसिद्ध श्लोक है - 'मित्रं व्यसनसम्प्राप्तौ यस्तिष्ठति स मित्रतः। अन्यथा स तु केवलं प्रीतिवचनभूषणम्॥₹, जिसका अर्थ है, 'जो मित्र विपत्ति में साथ खड़ा रहता है, वही सच्चा मित्र है। अन्यथा, जो केवल सुख के समय साथ रहता है, वह केवल मधुर वचन बोलने वाला मित्र है।' कहना ग़लत नहीं होगा कि जो पाप से रोकता है, हित में जोडता है, गुप्त बात गुप्त रखता है, गुणों को प्रकट करता है, आपत्ति आने पर छोडता नहीं, समय आने पर (जो आवश्यक हो) देता है, वहीं असली मित्र है। संस्कृत में ही बड़े खूबसूरत शब्दों में कहा गया है कि-'आपत्सु मित्रं जानीयात' यानी कि सच्चे मित्र की कसौटी आपत्ति में ही पता चलती है कि वह कसौटी पर खरा उतरता है कि नहीं। सच तो यह है कि एक मित्र ही होता है जो हमारे हर सफर को यादगार बनाता है। जरूरत पड़ने पर हमारा हर हाल और परिस्थितियों में साथ देता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार,

अलवाल साई वृन्दावन कॉलोनी स्थित सोयल निवास स्व. श्रीमती मंगी बाई सोयल की श्रद्धांजलि सभा मे पुष्प अर्पित करते हुए नेमाराम, वेनाराम, नारायणलाल, लक्ष्मण, हीरालाल, गणेश भुराराम, प्रकाश सोयल। सीरवी समाज के गणमान्य मोहनलाल हाम्बड़, जसाराम सोलंकी, हुक्माराम सानपुरा, किशनलाल पंवार, मोतीराम, मांगीलाल, विरेन्द्र, सुरेश कुमार सीरवी व समाज बन्धु।

मेडचल एल्मपेट स्थित में बन रहे पंच केदार मंदिर के निर्माण कमेटी के सदस्यों के साथ आज शनिवार को श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर ट्रस्ट के चेयरमैन राजर्षी जयपाल नयाल सनातनी ने बंजारा हिल्स में भाग्यनगर के जाने- माने उद्योगपति और परम शिव भक्त श्री नरेंद्र कुमार गोयल के घर पर मुलाकात की। इस अवसर पर नरेंद्र गोयल ने मंदिर निर्माण में पूर्ण सहयोग का वादा किया। मंदिर निर्माण कमेटी की ओर से बलवीर प्रसाद पैनोली, राजेंद्र नेगी, महेश खाती, राजेंद्र रावत, योगेश तथा दीप्ति रावत, माहेश्वरी बिष्ट ने मंदिर के निर्माण हेतु हो रहे कार्यों की विस्तार से जानकारी दी।

शब्दों में बसता भारत: मैथिलीशरण गुप्त जी की लेखनी का सांस्कृतिक आलोक

[सृजन में समर्पण: खड़ी बोली को गरिमा दिलाने वाला युगपुरुष मैथिलीशरण गुप्त]

जब भारतीय साहित्य का गौरवमयी आलोक हमारे सामने उभरता है, तब एक नाम अनायास ही हृदय को स्पर्श करता है — मैथिलीशरण गुप्त। राष्ट्रकवि की उपाधि से अलंकृत यह युगपुरुष हिंदी साहित्य की वह धड़कन है, जिसने शब्दों के माध्यम से भारत की आत्मा को जीवंत किया। 3 अगस्त 1886 को झांसी के चिरगांव में जन्मे गुप्त जी का काव्य-संसार केवल साहित्यिक रचनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि राष्ट्रीयता, संस्कृति और मानवीय मूल्यों का वह अमर दस्तावेज़ है, जो स्वतंत्रता संग्राम और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक बना। उनकी लेखनी ने हिंदी को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया और उसे जन-जन की भाषा बनाकर अमर कर दिया।

गुप्त जी का साहित्यिक अवदान उस युग में प्रारंभ हुआ, जब भारत ब्रिटिश दासता की जंजीरों में जकड़ा था। देश में स्वतंत्रता की चिंगारी सुलग रही थी, पर सांस्कृतिक और भाषायी अस्मिता को पुनर्जनन की आवश्यकता थी। अंग्रेज़ी प्रभाव और पाश्चात्य विचारों के बीच हिंदी साहित्य अपनी पहचान खोज रहा था। ऐसे में मैथिलीशरण गुप्त ने खड़ी बोली हिंदी को साहित्य की धुरी बनाया। उनकी भाषा की सहजता और सरलता ने हिंदी को वह गरिमा दी, जो पहले ब्रजभाषा और अवधी को प्राप्त थी। उनकी कविताएँ ऐसी थीं कि विद्वान और सामान्य पाठक दोनों ही उसमें अपनी आत्मा का प्रतिबिंब देखते थे। गुप्त जी की लेखनी में भारत की मिट्टी की सौंधी खुशबू थी, जो हर हृदय को अपनी ओर खींचती थी।

उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना 'भारत-भारती' स्वतंत्रता संग्राम में युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। यह काव्य-संग्रह भारत के गौरवशाली अतीत, वर्तमान की त्रासदी और भविष्य की आशा का जीवंत चित्रण है। "हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी" जैसी पंक्तियाँ न केवल उस समय की राष्ट्रीय चेतना को झकझोरती थीं, बल्कि आज भी आत्मचिंतन का आह्वान करती हैं। 'भारत-भारती' केवल कविता नहीं, बल्कि भारतमाता का वह जीवंत स्वर है, जो अंग्रेज़ी शासन के खिलाफ़ साहित्यिक विद्रोह का प्रतीक बना। इस रचना ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी और इसे जन-आंदोलन का हिस्सा बनाया।

गुप्त जी की अन्य रचनाएँ जैसे 'साकेत', 'यशोधरा', और 'पंचवटी' भी हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। 'साकेत' में उन्होंने रामायण को उर्मिला के दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर नारी-स्वर को सशक्त आवाज़ दी। उर्मिला, जो प्राय: रामकथा में उपेक्षित रही, गुप्त जी की लेखनी में एक समर्पित, सहनशील और गहन संवेदनशील नारी के रूप में उभरीं। यह रचना न केवल साहित्यिक नवाचार थी, बल्कि भारतीय समाज में नारी के स्थान को पुनर्परिभाषित करने का प्रयास भी था। इसी तरह 'यशोधरा' में गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा के माध्यम से वैराग्य और पारिवारिक कर्तव्यों के बीच की गहन द्वंद्व को चित्रित किया गया। यह रचना मानवीय संवेदनाओं और दार्शनिक गहराई का अनुपम उदाहरण है।

गुप्त जी का काव्य केवल भावनाओं का खेल नहीं था; उसमें इतिहास, संस्कृति, धर्म और दर्शन का गहरा बोध था। उनकी रचनाएँ पाठकों को आत्ममंथन और नैतिक चिंतन के लिए प्रेरित करती थीं। उनकी भाषा में सादगी थी, पर वह कभी सतही नहीं हुई। अलंकारों की चमक-दमक के बिना, जटिल शब्दावली के बिना, उन्होंने ऐसी काव्यधारा रची, जो हर वर्ग के हृदय में उतर जाए। उनकी कविताएँ भारत की आत्मा को दर्शाती थीं — उसमें ऋषियों का तेज, वीरों का शौर्य और मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम था।

राष्ट्रीय चेतना गुप्त जी के काव्य का सबसे प्रबल पक्ष थी। वे भारत के सच्चे सपूत थे, जिन्होंने अपनी लेखनी को राष्ट्र के प्रति समर्पित किया। उनकी कविताएँ केवल साहित्यिक रचनाएँ नहीं थीं, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा थीं। यही कारण है कि महात्मा गांधी ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' की संज्ञा दी। यह उपाधि उनके साहित्य की उस शक्ति का प्रतीक थी, जो राष्ट्र को एकजुट और प्रेरित करने में सक्षम थी। उनकी रचनाओं में भारत की सांस्कृतिक धरोहर, सामाजिक समस्याएँ और नैतिक मूल्य सहजता से बुने गए थे।

गुप्त जी केवल कवि ही नहीं, बल्कि विचारक, दार्शनिक और समाज सुधारक भी थे। उनकी रचनाओं में स्त्री-पुरुष संबंध, पारिवारिक मूल्यों का महत्व, धर्म का वास्तविक स्वरूप और सामाजिक समस्याएँ जैसे विषय गहनता से उभरे। उनकी लेखनी में वह शक्ति थी, जो पाठक को अपने समाज और स्वयं के प्रति नए दृष्टिकोण से सोचने को बाध्य करती थी। उनकी शैली में गंभीरता थी, पर वह कभी क्लिष्ट नहीं हुई। उनके शब्दों में वह जादू था, जो सामान्य जन को भी गहरे चिंतन की ओर ले जाता था।

उनका जीवन और साहित्य एक-दूसरे का पूरक था। वे जो लिखते थे, उसे जीते भी थे। साहित्य के साथ-साथ वे सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में भी सक्रिय रहे। स्वतंत्र भारत में वे राज्यसभा के सदस्य बने और राष्ट्रनिर्माण में योगदान दिया। उनकी साहित्यिक यात्रा एक सतत साधना थी, जिसने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया और भारतीय संस्कृति को विश्व पटल पर गौरव दिलाया।

12 दिसंबर 1964 को गुप्त जी का देहावसान हुआ, पर उनका साहित्य आज भी जीवित है। उनकी कविताएँ पाठ्यपुस्तकों में, जनमानस के हृदय में और राष्ट्र की चेतना में साँस ले रही हैं। वे हमें हमारे कर्तव्यों का स्मरण कराती हैं, हमारे अतीत से जोड़ती हैं और भविष्य के लिए प्रेरित करती हैं। आज जब नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों की खोज में है, तब गुप्त जी का साहित्य एक दीपस्तंभ की तरह मार्ग दिखाता है।

उनके जन्मदिवस पर उन्हें स्मरण करना केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि स्वयं को और अपनी अस्मिता को पुनर्जनन की प्रक्रिया है। मैथिलीशरण गुप्त ने साहित्य को एक शस्त्र बनाया — अज्ञानता, पराधीनता और सांस्कृतिक विस्मृति के खिलाफ़। उनकी कविताएँ केवल शब्द नहीं, बल्कि संस्कार हैं; केवल काव्य नहीं, बल्कि कर्म हैं। उनके प्रत्येक शब्द में भारत की आत्मा धड़कती है।

मैथिलीशरण गुप्त जी की जयंती पर हमें उनके साहित्य को पुन: पढ़ना चाहिए, उसके संदेशों को आत्मसात करना चाहिए। उनका काव्य हमें सिखाता है कि साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र को दिशा देने का सशक्त माध्यम है। मैथिलीशरण गुप्त का जीवन और साहित्य हमें यही प्रेरणा देता है कि हम अपनी भाषा, संस्कृति और मातृभूमि पर गर्व करें और उसके उत्थान के लिए कटिबद्ध रहें। यही राष्ट्रकवि के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

नीति से अभ्यास तकः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के पांच वर्ष

विजय गर्ग

(एनईपी 2020 ने इसके कार्यान्वयन के पहले पांच वर्षों के भीतर प्रणालीगत शैक्षणिक और प्रशासनिक सुधार पेश किए हैं)

शिक्षा और इससे संबंधित ज्ञान प्रतिमान प्रगतिशील समाजों की नींव रहे हैं। भारतीय छात्रवृत्ति का एक समृद्ध प्राचीन भंडार दुनिया भर में स्वीकार किया गया है और कई को अपने संबंधित शैक्षणिक क्षेत्रों में योगदान करने के लिए प्रेरित किया है।

इस तरह की शानदार ज्ञान विरासत के बावजूद, इस राष्ट्र को वर्ष 2020 में एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अपनाने में 73 साल लगे, जो भारत की ज्ञान परंपराओं और मूल्य प्रणालियों के निर्माण के दौरान 21 वीं शताब्दी की शिक्षा के आकांक्षी लक्ष्यों के साथ गठबंधन किया गया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) 29 जुलाई 2020 को शुरू की गई थी और पांच साल पूरे हो रहे हैं।

यह हमें नीति के कार्यान्वयन का समग्र दृष्टिकोण लेने, अनुकूल परिवर्तनों का आकलन करने, स्कूल में समग्र प्रगति और उच्च शिक्षा के साथ-साथ सुधार की आगे की गुंजाइश की अनुमति देता है।

शिक्षा के माध्यम के रूप में भाषा विषयों की वैचारिक स्पष्टता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षाविदों ने अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से भारतीय भाषाओं में शिक्षा प्रदान करने की वकालत की है। स्वतंत्रता के बाद, डॉ। राधाकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की रिपोर्ट (दिसंबर 1948-अगस्त 1949) में शिक्षा पर शुरुआती सिफारिशों में से एक ने कहा कि अंग्रेजी को भारतीय भाषाओं द्वारा व्यावहारिक रूप से जल्द निर्देश के माध्यम के रूप में प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए।

हालांकि, इस सिफारिश ने केवल उस दिन की रोशनी देखी जब एनईपी 2020 ने सिफारिश की कि 'कम से कम ग्रेड 5 तक शिक्षा का माध्यम, लेकिन अधिमानतः ग्रेड 8 और उससे आगे तक' मूल भाषा में होना चाहिए। भारतीय भाषाओं में पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता पिछले पांच वर्षों में एक सतत अभ्यास रही है।

दो साल पहले, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने एनईपी 2020 के अनुरूप 12 भारतीय भाषाओं में 100 किताबें लॉन्च की थीं। दिशाख (डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग) एक राष्ट्रीय वेब प्लेटफॉर्म है जिसका उपयोग शिक्षा ई-इन्फ्रास्ट्रक्चर के रूप में किया जाता है, जहां 31 भारतीय भाषाओं के लिए ऊर्जावान पुस्तकें (जो एक क्यूआर कोड के साथ आती हैं) और 7 विदेशी भाषाएं तैयार की जा रही हैं।

भारतीय भाषा पुस्ताक योजना के लिए भारतीय भाषा पुस्ताक योजना के लिए 2025-26 बजट आवंटन भारतीय भाषाओं में स्कूल और उच्च शिक्षा के लिए डिजिटल पुस्तकें प्रदान करने के लिए संस्थानों को पाठ्यक्रम में शिक्षा के माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करेगा। 2011 की जनगणना रिपोर्ट में कहा गया है कि 96.71 प्रतिशत में अपनी मातृभाषा के रूप में बाईस अनुसूचित भाषाओं में से एक है, जबकि केवल 10.6 प्रतिशत ने कहा कि वे अंग्रेजी बोल सकते हैं।

एक माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओं में शिक्षा शिक्षा को अधिक समावेशी बनाएगी और आने वाले वर्षों में सीखने के परिणामों को बढ़ाएगी। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र में स्थित पिंपरी चिंचवाड़ कॉलेज में, बी। टेक छात्रों को पूरी तरह से मराठी में कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग सिखाया गया था। उन्होंने शीर्ष कंपनियों में प्लेसमेंट हासिल किया, यह प्रदर्शित करते हुए कि भाषा तकनीकी शिक्षा में सफलता के लिए एक बाधा नहीं है।

हमारी पाठ्यपुस्तकों में औपनिवेशिक हैंगओवर के बोझ को अंततः भारतीय योगदान द्वारा बदल दिया गया है।

भारतीय भाषाओं में शिक्षा प्रदान करना एनईपी 2020 की प्राथमिक चिंताओं में से एक है, यह एक सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान बनाने पर जोर देता है। नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग ने हिंदी, अंग्रेजी और उर्दू में कक्षा पांच और आठ के लिए दस नई पाठ्यपुस्तकें शुरू की हैं, जो भाषाओं, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और कला शिक्षा को कवर करती हैं। अधिक वैचारिक समझ, शैक्षणिक दृष्टिकोण और अनुभवात्मक सीखने पर जोर देने के साथ अपमानजनक हैं। एनईपी के तहत, हमारी विरासत में पाठ्यपुस्तकों को जड़ देना एक मार्गदर्शक सिद्धांत रहा है जिसका उद्देश्य हमारी राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करना है।

एनईपी 2020 ने पाठ्यक्रम में 21 वीं शताब्दी के हाथों के अनुभव और कौशल आवश्यकताओं के समावेश की भी परिकल्पना की है। राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क द्वारा अकादमिक और कौशल-आधारित सीखने की समानता और एकीकरण सुनिश्चित करने वाले नियामक ढांचे को औपचारिक रूप दिया गया है। यह समानता और शैक्षणिक कार्यक्रमों में समानता, विशेष रूप से तृतीयक शिक्षा में, एक एकीकृत क्रेडिट प्रणाली में निर्बाध हस्तांतरण में सहायता करेगा।

उच्च शिक्षा में एक कार्यक्रम में एक छात्र के लिए कई प्रवेश-निकास विकल्पों ने शैक्षणिक लचीलापन पेश किया है। देशव्यापी छात्रों की शैक्षणिक साख को सुव्यवस्थित करने के लिए, स्वचालित स्थायी शैक्षणिक खाता रजिस्ट्री नामक छात्रों के लिए एक अद्वितीय 12-अंकीय आईडी उत्पन्न की जा रही है जो डिजिटल रूप से शैक्षणिक रिकॉर्ड का प्रबंधन करती है और उन्हें अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट में संग्रहीत करती है। यह प्रौद्योगिकी-सहायता प्राप्त रिकॉर्ड प्रबंधन पूरे देश में पहुंच और निरंतरता सुनिश्चित करते हुए, 'वन नेशन, वन स्टूडेंट आईडी' अभियान का समर्थन करता है।

एनईपी 2020 के पांच साल ने देश में शिक्षा प्रणाली में एक कट्टरपंथी परिवर्तन लाया है। अगले पांच वर्षों में इसके कार्यान्वयन में छलांग लेने का एक महत्वपूर्ण पहलू संकाय का क्षमता निर्माण होगा। वर्तमान में, निशंक (स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल) और (मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम) क्रमशः स्कूलों और उच्च शिक्षा में शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू कर रहे हैं। शिक्षकों को अनुभवात्मक सीखने और योग्यता-आधारित आकलन जैसे नए शैक्षणिक तरीकों से सुसज्जित होने की आवश्यकता है। भौतिक मोड में मजबूत पेशेवर विकास कार्यक्रम एनईपी 2020 की निष्पादन गति को कैस्केड कर सकते हैं। देश में विभिन्न शिक्षा नीतियों में एक निरंतर विशेषता, कोठारी आयोग से 1965 में एनईपी 2020 तक, शिक्षा के लिए जीडीपी का 6 प्रतिशत का बजटीय प्रावधान रहा है।

शिक्षा मंत्रालय की 2023-24 की वार्षिक रिपोर्ट में कहा गया है कि केंद्र और राज्य शिक्षा क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश बढ़ाने के लिए मिलकर जल्द से जल्द जीडीपी के 6 प्रतिशत तक पहुंच जाएंगे। शिक्षा, संविधान में एक समवर्ती विषय होने के नाते, केंद्र सरकार के साथ-साथ राज्य सरकारों से भी हाथ मिलाने की आवश्यकता है।

केंद्र द्वारा समग्र शिक्षा अभियान जैसी पहल का उद्देश्य मौजूदा प्रणालियों, स्तर के प्रदर्शन, सीखने के परिणामों और स्कूल स्तर पर लिंग अंतराल को बेहतर बनाना है। हालांकि, राज्य सरकारें महत्वपूर्ण हितधारक हैं, और उनकी राजनीतिक कमी से लक्ष्यों तक पहुंचने में संभावित अंतराल हो सकता है।

एक मानकीकृत निगरानी तंत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी मूल्यांकन और कार्यान्वयन में मदद कर सकता है, विशेष रूप से बुनियादी ढांचे और मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक (एफएलएन) और बचपन की देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) में। राज्यों द्वारा नीति के साथ जुड़ाव का अलग-अलग स्तर और कई बार देश का सरासर आकार, एनईपी 2020 की वर्दी और प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक चिंता का विषय है।

एनईपी 2020 ने इसके कार्यान्वयन के पहले पांच वर्षों के भीतर प्रणालीगत शैक्षणिक और प्रशासनिक सुधार पेश किए हैं। 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की तैयारी करने वाले राष्ट्र के रूप में, शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण प्रोत्साहन भारत की बौद्धिक और कौशल पूंजी और आर्थिक शक्ति को आकार देने में महत्वएनईपीपूर्ण भूमिका निभाएगा।

पत्र और भावना में देश भर में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का कार्यान्वयन उन नागरिकों को तैयार करेगा जो भारतीय होने पर गर्व करते हैं, ईंधन नवाचार करते हैं, एक ज्ञान अर्थव्यवस्था विकसित करते हैं, इक्विटी, सतत विकास और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देते हैं और आत्मविश्वास से दुनिया के साथ जुड़ने के लिए सुसज्जित होंगे।

बढ़ते तापमान से महिलाओं में बढ़ रहा कैंसर का खतरा

विजय गर्ग

जलवायु परिवर्तन और बढ़ती गर्मी का महिलाओं के स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ रहा है। एक नए अध्ययन में वैज्ञानिकों ने पाया है कि तापमान बढ़ने के साथ महिलाओं में स्तन, अंडाशय (ओवरी), गर्भाशय और सर्वाइकल कैंसर के मामले और मौतें दोनों बढ़ रही हैं।

जलवायु परिवर्तन का महिलाओं में कैंसर के खतरे पर क्या असर पड़ता है, यह जानने के लिए शोधकताओं ने मध्य पूर्व और उत्तर अफ्रीका के 17 देशों को चुना है। इनमें शामिल अल्जीरिया, बहरीन, मिस्त्र, ईरान, इराक, जार्डन, कुवैत, लेबनान, लीबिया, मोरक्को, ओमान, कतर, सऊदी अरब, सीरिया, ट्यूनीशिया, संयुक्त अरब अमीरात और फिलिस्तीन शामिल थे। ये सभी देश जलवायु परिवर्तन के प्रति बेहद संवेदनशील हैं और पहले ही तापमान में तेजी से होती वृद्धि का सामना कर रहे हैं। वहीं आशंका है कि इस क्षेत्र में 2050 तक तापमान के चार डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है।1

इसके साथ ही अपने अध्ययन में शोधकर्ताओं ने इन देशों में स्तन, अंडाशय, गर्भाशय और सर्वाइकल कैंसर के मामलों और मौतों से जुड़े आंकड़ों को भी जुटाया है और उनकी तुलना 1998 से 2019 के बीच बढ़ते तापमान से की है।

शोध के नतीजे दर्शाते हैं कि तापमान में वृद्धि के साथ मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में स्तन, अंडाशय, सर्वाइकल और गर्भाशय कैंसर के मामले भी बढ़े हैं। वहीं कतर, बहरीन, जार्डन, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और सीरिया जैसे देशों में यह बढ़ोतरी सबसे अधिक देखी गई। यह वो देश हैं जो साल दर साल भीषण

गर्मी का सामना करते हैं। शोधकर्ताओं के मुताबिक, तापमान में हर एक डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ ये चारों तरह के कैंसर कहीं ज्यादा आम और घातक हो रहे हैं। इस अध्ययन के नतीजे अंतरराष्ट्रीय जर्नल फ्रंटियर्स इन पब्लिक हेल्थ में प्रकाशित हुए हैं। अध्ययन से पता चला है कि तापमान में हर एक डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ महिलाओं में कैंसर के मामलों में प्रति लाख लोगों पर 173 से 280 x मामलों तक की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। इसमें अंडाशय (ओवरी) का कैंसर सबसे ज्यादा, जबकि स्तन कैंसर सबसे कम बढ़ा है।

बढ़ते तापमान की वजह से सिर्फ कैंसर के मामले ही नहीं बढ़ रहे, इनसे होने वाली मौतों में भी इजाफा दर्ज किया गया है। आंकड़ों से पता चला है कि तापमान में हर डिग्री की बढ़ोतरी के साथ प्रति लाख लोगों पर होने वाली मौतों में 171 से 332 तक की बढ़ोतरी दर्ज की गई। अध्ययन में यह भी सामने आया है कि कैंसर के मामलों और मौतों में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी कतर, बहरीन, जार्डन, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और सीरिया में दर्ज की गई है। हालांकि, साथ ही अध्ययन में यह भी सामने आया है कि यह वृद्धि सभी देशों में एक समान नहीं थी । उदाहरण के लिए कतर में हर डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ स्तन कैंसर के मामले प्रति लाख लोगों पर 560 तक बढ़े, जबकि बहरीन में यह बढ़ोतरी 330 रेकार्ड की गई। वैज्ञानिकों के मुताबिक, यह अध्ययन दिखाता है कि बढ़ता तापमान इन कैंसरों की एक वजह हो सकता है। हालांकि हर देश में इसका प्रभाव अलग-अलग देखा गया। इसका मतलब है कि तापमान के अलावा भी कुछ और कारण कैंसर के खतरे को बढ़ा सकते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ जगहों पर बढ़ती गर्मी के साथ हानिकारक वायु प्रदूषण भी बढ़ता है, जो कैंसर को फैलने में मदद कर सकता है।

संख्याओं से परेः भारत के शिक्षा सुधार को केवल एक्सेस नहीं, लर्निंग पर ध्यान क्यों देना चाहिए

विजय गर्ग

भारत का शिक्षा सुधार, मुख्य रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 द्वारा संचालित, गुणवत्ता सीखने के परिणामों को सुनिश्चित करने के लिए केवल शिक्षा तक पहुंच प्रदान करने से एक बदलाव पर काफी जोर देता है। इस नीति का उद्देश्य समग्र, शिक्षार्थी केंद्रित और बहु-विषयक दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करके शिक्षा प्रणाली को बदलना है। सीखने पर ध्यान केंद्रित करने के मुख्य पहलुओं में शामिल हैंः

समग्र और शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षाः एनईपी 2020 पहुंच, इक्विटी, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही को प्राथमिकता देकर शिक्षा को फिर से परिभाषित करना चाहता है। इसकी दृष्टि एक ऐसी प्रणाली का निर्माण करना है जो शिक्षार्थी केंद्रित और बहु-विषयक है, कठोर संरचनाओं से दूर जा रही है।

बियॉन्ड रोट लर्निंगः सुधार का एक मुख्य सिद्धांत रटने की याद से दूर जाना है। इसके बजाय, यह महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और समस्या को सुलझाने

के कौशल को बढ़ावा देता है, छात्रों को 21 वीं सदी की जरूरतों के लिए तैयार करता है।

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक (FLN): बचपन की देखभाल और शिक्षा (ECCE) और FLN स्कूल सुधारों के लिए केंद्रीय हैं। निपुन भारत मिशन जैसी पहल का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे ग्रेड 3 द्वारा मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करें।

पाठ्यक्रम और शैक्षणिक नवाचारः नीति योग्यता-आधारित और बहु-विषयक शिक्षा को प्रोत्साहित करती है। यह नई पाठ्यपुस्तकों का परिचय देता है जो सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं और गहरी सगाई को बढ़ावा देते हैं। व्यावसायिक शिक्षा ग्रेड 6 से शुरू होने वाले पाठ्यक्रम में एकीकृत है।

परिणाम-आधारित मूल्यांकनः सुधार का उद्देश्य मूल्यांकन विधियों को बदलना है, केवल तथ्यों को याद करने की उनकी क्षमता के बजाय छात्रों की समझ और ज्ञान के अनुप्रयोग का मूल्यांकन करने पर ध्यान केंद्रित करना है। आउटकम-आधारित शिक्षा (ओबीई) इसके लिए एक महत्वपूर्ण ढांचा है।

लचीलापन और विशिष्टताः एनईपी कई प्रवेश और निकास विकल्पों के साथ लचीले स्नातक कार्यक्रमों का परिचय देता है, जो छात्रों को उनके सीखने के रास्ते पर अधिक नियंत्रण प्रदान करता है। यह समावेशी शिक्षा, विकलांग बच्चों के लिए समर्थन की पेशकश और भारतीय सांकेतिक भाषा को बढ़ावा देने पर भी जोर देता है।

शिक्षक विकासः शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानते हुए, नीति उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों के महत्व पर जोर देती है और उनके पेशेवर विकास में निवेश करती है।

डिजिटल प्रौद्योगिकी का लाभः सुधार DIKSHA और PM e-VIDYA जैसे प्लेटफार्मों के माध्यम से सीखने में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करता है, गुणवत्ता डिजिटल शैक्षिक सामग्री तक पहुंच का विस्तार करता है।

लर्निंग गैप्स को संबोधित करते हुएः एनईपी 2020 सक्रिय रूप से मौजूदा असमानताओं और कम सीखने के परिणामों को संबोधित करता है, जिसमें सभी चरणों में शिक्षा की गुणवत्ता में लगातार सुधार करने की प्रतिबद्धता है। इन सुधारों का उद्देश्य एक सीखने के माहौल को विकसित करना है जो आकर्षक, प्रासंगिक और प्रभावी है, यह सुनिश्चित करता है कि छात्रों के पास न केवल शिक्षा तक पहुंच हो, बल्कि सार्थक और लागू ज्ञान और कौशल भी प्राप्त हो।

स्रोत

रूस में जापान जैसी सुनामी का कहर

कथित विकासवादी अवधारणा कुछ और नहीं, प्राकृतिक संपदा का अंधाधुंध दोहन कर, पृथ्वी को खोखला करने के ऐसे उपाय हैं, जो ब्रह्मांड में फैले अवयवों में असंतुलन बढ़ा रहे हैं

तीन साल से भी अधिक समय से यूक्रेन से युद्ध लड़ रहे रूस में 8.8 तीव्रता के भीषण भूकंप ने नई त्रासदी खड़ी कर दी है। रूस के पूरब में स्थित कामचटका प्रायद्वीप में 30 जुलाई 2025 को आए भूकंप के झटकों से कामचटका और उसके आसपास कुरील द्वीप समूह के भूखंड हिल गए। इसे विश्व में आए सबसे तीव्र भूकंपों में दर्ज किया गया है। इस प्राकृतिक आपदा से भारी नुकसान और अनेक लोगों के घायल होने की सूचनाएं हैं, इसके असर से प्रायद्वीप के समुद्र तटों से 16 फीट ऊंची सुनामी जैसी लहरें टकराईं, जिससे तटीय इलाकों में भारी नुकसान हुआ है। इसकी तुलना मार्च 2011 में जापान में आए 9.0 तीव्रता के भूकंप से की जा रही है। इसे समुद्री सुनामी कहा गया था। इस सुनामी से जापान के फुकुशिमा, दाइची परमाणु ऊर्जा संयंत्र का कूलिंग सिस्टम निश्क्रिय करना पड़ा था। कामचटका में चार नवंबर 1992 को आए 9.0 तीव्रता के भूकंप के कारण भारी क्षति हुई थी। इस भूकंप से जनहानि इसलिए नहीं होने पाई, क्योंकि भूकंप क्षेत्र से रूस का बड़ा शहर पेत्रोपावलोव्स्क-कामचत्सकी लगभग 119 किमी की दूरी पर है। यहां की आबादी 18 लाख है। भूकंप के बाद आने वाली सुनामी के खतरे से जापान, चीन, फिलीपींस, इंडोनेशिया, अमेरिका और प्रशांत महासागर के तटवर्ती देशों को सतर्क रहने के लिए कहा गया है। जापानी और अमेरिकी भूकंप वैज्ञानिकों ने बताया कि इस भूकंप की आरंभिक तीव्रता 8.0 थी, किंतु अमेरिकी भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण ने इस तीव्रता का आकलन 8.8 किया और इसे 20.7 किमी भूगर्भ से आना बताया है।

अलास्का स्थित राष्ट्रीय सुनामी चेतावनी केन्द्र के समन्वयक डेव स्नाइडर का कहना है कि सुनामी जैसी लहरों का प्रभाव कई घंटों या एक दिन से भी अधिक समय तक रह सकता है। सुनामी केवल एक लहर नहीं होती, बल्कि यह लंबे समय तक चलने वाली शक्तिशाली लहरों की एक श्रृंखला होती है। सुनामी एक विमान की गति से सैंकड़ों मील प्रति घंटे की रफ्तार से समुद्र पार करती है। किंतु जब लहरें किनारे के निकट पहुंचती हैं, तब उनकी गति धीमी पड़ जाती है। किंतु किनारे पर इनके एकत्रीकरण से जल प्रलावन की आशंका बढ़ जाती है। इस कारण पानी की ये लहरें धरती पर पहुंचती हैं और आगे-पीछे होती रहती हैं। दुनिया में अब तक 8.6 तीव्रता से लेकर 9.5 तीव्रता के भूकंप चिली, अलास्का, सुमात्रा, तोहोकू, कामचटका (1952), चिली (2010), इक्वाडोर, अलास्का (1965), अरुणाचल प्रदेश भारत और सुमात्रा (2012) आए हैं। इन भूकंपों में जान और माल का भारी नुकसान हुआ है। दरअसल दुनिया के नामचीन विशेषज्ञों व पर्यावरणविदों की मानें तो सभी भूकंप प्राकृतिक नहीं होते, बल्कि उन्हें विकराल बनाने में हमारा भी हाथ होता है। प्राकृतिक संसाधनों के अकूत दोहन से छोटे स्तर के भूकंपों की पृष्ठभूमि तैयार हो रही है। भविष्य में इन्हीं भूकंपों की व्यापकता और विकरालता बढ़ जाती है। यही कारण है कि भूकंपों की आवृत्ति बढ़ रही है। पहले 13 सालों में एक बार भूकंप आने की आशंका बनी रहती थी, लेकिन अब यह घटकर 4 साल हो गई है। अमेरिका में 1973 से 2008 के बीच प्रति वर्ष औसतन 21 भूकंप आए, वहीं 2009 से 2013 के बीच यह संख्या बढकर 99 प्रति वर्ष हो गई। यही नहीं, आए भूकंपों का वैज्ञानिक आकलन करने से यह भी पता चला है कि भूकंपीय विस्फोट में जो ऊर्जा निकलती है, उसकी मात्रा भी पहले की तुलना में ज्यादा शक्तिशाली हुई है। 25 अप्रैल 2015 को नेपाल में जो भूकंप आया था, उनसे 20 थर्मान्यूक्लियर हाइड्रोजन बमों के बराबर ऊर्जा निकली थी। यहां हुआ प्रत्येक विस्फोट हिरोशिमा-नागाशाकी में गिराए गए परमाणु बमों से भी कई गुना ज्यादा ताकतवर था। 2011 में जापान और फिर क्वोटो में आए सिलसिलेवार भूकंपों से पता चलता है कि धरती के गर्भ में अंगड़ाई ले रही भूकंपीय हलचलें महानगरीय आधुनिक विकास और आबादी के लिए अधिक खतरनाक साबित हो रही हैं। ये हलचलें भारत, पाकिस्तान, चीन और बांग्लादेश की धरती के नीचे भी अंगड़ाई ले रही हैं। इसलिए इन देशों के महानगर भी भूकंप के मुहाने पर हैं। भूकंप आना कोई नई बात नहीं है। जापान, इक्वाडोर और नेपाल समेत पूरी दुनिया इस अभिशाप को झेलने के लिए जब-तब विवश होती रही है। बावजूद हैरानी इस बात पर है कि विज्ञान की आश्चर्यजनक तरक्की के बाद भी वैज्ञानिक आज तक ऐसी तकनीक ईजाद करने में असफल रहे हैं, जिससे भूकंप की जानकारी आने से पहले मिल जाए।

भूकंप के लिए जरूरी ऊर्जा के एकत्रित होने की प्रक्रिया को धरती की विभिन्न परतों के आपस में टकराने के सिद्धांत से आसानी से समझा जा सकता है। ऐसी वैज्ञानिक मान्यता है कि करीब साढ़े पांच करोड़ साल पहले भारत और आस्ट्रेलिया को जोड़े रखने वाली भूगर्भीय परतें एक-दूसरे से अलग हो गईं और वे यूरेशिया परत से जा टकराईं। इस टक्कर के फलस्वरूप हिमालय पर्वतमाला अस्तित्व में आई और धरती की विभिन्न परतों के बीच वर्तमान में मौजूद दरारें बनीं। हिमालय पर्वत उस स्थल पर अब तक अटल खड़ा है, जहां पृथ्वी की दो अलग-अलग परतें परस्पर टकराकर एक-दूसरे के भीतर घुस गई थीं। परतों के टकराव की इस प्रक्रिया की वजह से हिमालय और उसके प्रायद्वीपीय क्षेत्र में भूकंप आते रहते हैं। इसी प्रायद्वीप में ज्यादातर एशियाई देश बसे हुए हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि रासायनिक क्रियाओं के कारण भी भूकंप आते हैं। भूकंपों की उत्पत्ति धरती की सतह से 30 से 100 किमी भीतर होती है। जापान के कुमामोतो में आया भूकंप जमीन से 20 किमी और क्वोटो का 10 किमी नीचे था। जबकि नेपाल में जो भूकंप आया था, वह जमीन से महज 15 किमी नीचे था। इससे यह वैज्ञानिक धारणा भी बदल रही है कि भूकंप की विनाशकारी तरंगें जमीन से कम से कम 30 किमी नीचे से चलती हैं। ये तरंगें जितनी कम गहराई से उठेंगी, उतनी तबाही भी ज्यादा होगी और भूकंप का प्रभाव भी कहीं अधिक बड़े क्षेत्र में दिखाई देगा। लगता है अब कम गहराई के भूकंपों का दौर चल पड़ा है। दरअसल सतह के नीचे धरती की परत ठंडी होने व कम दबाव के कारण कमजोर पड़ जाती है। ऐसी स्थिति में जब चट्टानें दरकती हैं तो भूकंप आता है। कुछ भूकंप धरती की सतह से 100 से 650 किमी के नीचे भी आते हैं, लेकिन तीव्रता धरती की सतह पर आते-आते कम हो जाती है, इसलिए बड़े रूप में त्रासदी नहीं झेलनी पड़ती है।

दरअसल इतनी गहराई में धरती इतनी गर्म होती है कि एक तरह से वह द्रव रूप में बदल जाती है। इसलिए इसके झटकों का असर धरती पर कम ही दिखाई देता है। बावजूद इन भूकंपों से ऊर्जा बड़ी मात्रा में निकलती है। धरती की इतनी गहराई से प्रकट हुआ सबसे बड़ा भूकंप 1994 में बोलिविया में रिकॉर्ड किया गया है। पृथ्वी की सतह से 600 किमी भीतर दर्ज इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 8.3 मापी गई थी। इसीलिए यह मान्यता बनी है कि इतनी गहराई से चले भूकंप धरती पर तबाही मचाने में कामयाब नहीं हो सकते हैं, क्योंकि चट्टानें तरल द्रव्य के रूप में बदल जाती हैं। प्राकृतिक आपदाएं अब व्यापक व विनाशकारी साबित हो रही हैं, क्योंकि धरती के बढ़ते तापमान के कारण वायुमंडल भी परिवर्तित हो रहा है। अमेरिका व ब्रिटेन समेत यूरोपीय देशों में दो शताब्दियों के भीतर बेतहाशा अमीरी बढ़ी है। औद्योगिकीकरण और शहरीकरण इसी अमीरी की उपज है। यह कथित विकासवादी अवधारणा कुछ और नहीं, प्राकृतिक संपदा का अंधाधुंध दोहन कर, पृथ्वी को खोखला करने के ऐसे उपाय हैं, जो ब्रह्मांड में फैले अवयवों में असंतुलन बढ़ा रहे हैं। इस विकास के लिए पानी, गैस, खनिज, इस्पात, ईंधन और लकड़ी जरूरी हैं। नतीजतन जो कॉर्बन गैसें बेहद न्यूनतम मात्रा में बनती थीं, वे अब अधिकतम मात्रा में बनने लगी हैं। बहरहाल, धरती का तापमान बढने से प्राकृतिक आपदाएं भी बढ़ गई हैं।

विवाह परंपराएं : इतिहास से आधुनिकता तक

चाहे वह बहुपत्नी विवाह हो या बहुपति विवाह, दोनों ही व्यवस्थाओं को समझने के लिए ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दृष्टिकोणों की गहराई में जाना जरूरी है

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, यह सार्वभौमिक एवं सर्वमान्य सत्य है। समाज विभिन्न प्रकार के सामाजिक संबंधों की एक जटिल संरचना है जिसमें परिवार को एक मूलभूत एवं महत्वपूर्ण संस्था के रूप में समाजशास्त्रियों ने परिभाषित किया है। परिवार को संस्था के रूप में स्वीकार करना, एक बेहतर, सशक्त और सभ्य समाज के निर्माण में इसकी भूमिका को रेखांकित करता है। मनुष्य अपनी प्रारंभिक सामाजिक शिक्षा परिवार से ही प्राप्त करता है और इसी कारण मां को प्रथम गुरु की संज्ञा दी गई है। इस सामाजिक संरचना में विवाह को भी एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में देखा गया है, जो व्यक्ति को सामाजिक जीवन में प्रवेश का माध्यम प्रदान करती है। विवाह का मूल उद्देश्य संतान-उत्पति और परिवार की स्थापना होता है। इस प्रकार, विवाह समाज की एक अनिवार्य इकाई है जो परिवार रूपी संस्था की नींव रखता है। समय, काल और परिस्थितियों के अनुसार विवाह और परिवार की अवधारणाओं में निरंतर परिवर्तन होता रहा है। एक समय में प्रचलित संयुक्त और संगठित परिवार की परंपरा अब धीरे-धीरे एकल परिवार में परिवर्तित हो गई है।

यह बदलाव केवल परिवार तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि समग्र सामाजिक ढांचा भी परिवर्तन की इस धारा से प्रभावित हुआ है। वास्तव में, परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है, जो शाश्वत सत्य है। हमारे समाज में विवाह की विभिन्न प्रणालियां प्राचीन काल से विद्यमान रही हैं। समय के साथ इनमें भी अनेक बदलाव आए हैं। एक समय में बहुपति तथा बहुपत्नी विवाह की प्रथा समाज में व्यापक रूप से प्रचलित थी, किंतु धीरे-धीरे सामाजिक चेतना, धार्मिक मूल्यों तथा कानूनी व्यवस्थाओं के प्रभाव से यह स्वरूप बदलता गया और वर्तमान में एक पत्नी तथा एक पति विवाह प्रणाली को ही सामाजिक रूप से मान्यता प्राप्त है। वहीं, पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण आज 'लिव इन रिलेशनशिप' जैसी अवधारणाएं भी सामने आई हैं। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें बिना विवाह के दो व्यक्ति एक साथ सहजीवन व्यतीत करते हैं। हालांकि, इसमें भावनात्मक व शारीरिक सहभागिता तो होती है, किंतु वैवाहिक प्रतिबद्धता और सामाजिक मान्यता का अभाव रहता है। ऐसे में यह विचारणीय प्रश्न है कि क्या लिव इन जैसी व्यवस्थाएं विवाह संस्था के मूल उद्देश्य- सदैव के लिए प्रतिबद्धता, सामाजिक उत्तरदायित्व, परिवार की स्थापना तथा भावनात्मक स्थायित्व इत्यादि को पूर्ण कर पाने में सक्षम हैं? यह एक गूढ़ और जटिल प्रश्न है जिस पर समाज को गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। यदि हम इतिहास के पन्नों को पलटें तो बहुपत्नी विवाह (एक पुरुष की अनेक पत्नियां) के कई उदाहरण सामने आते हैं। जहां एक तरफ पटियाला के राजा भूपिंदर सिंह की 10 शादियां होने का उल्लेख मिलता है, वहीं रामायण में राजा दशरथ की तीन पत्नियां थीं, जबकि महाभारत में पांडु की दो पत्नियों- कुंती और माद्री का वर्णन मिलता है। यह विवाह की वह प्राचीन परंपरा थी, जो विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक कारणों से उस काल में प्रचलित रही।

हालांकि समय के साथ समाज और कानून दोनों में बदलाव आए। 1955 में लागू हुए हिंदू विवाह अधिनियम के तहत बहुविवाह एवं बहुपत्नी विवाह को अवैध घोषित कर दिया गया। अब एक समय में एक ही वैध पत्नी को मान्यता दी जाती है। यदि किसी विवाहित व्यक्ति ने दूसरा विवाह किया, तो केवल पहली पत्नी को ही कानूनी अधिकार प्राप्त होते हैं। संबंध विच्छेद (तलाक) के उपरांत पुनर्विवाह की स्वतंत्रता भी दी गई है। यह अधिनियम हिंदू, बौद्ध, जैन और सिख धर्म के अनुयायियों पर लागू होता है, लेकिन मुस्लिम, ईसाई या अन्य धर्मावलंबियों पर इसकी बाध्यता नहीं है। जहां एक ओर बहुपत्नी विवाह का इतिहास व्यापक है, वहीं बहुपति विवाह (एक महिला के अनेक पति) भी कुछ क्षेत्रों में प्राचीन परंपरा का हिस्सा रहा है। हाल के दिनों में हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के शिलाई क्षेत्र में इस प्रथा की चर्चा फिर से सामने आई है जिसमें एक महिला ने स्वेच्छा से दो सगे भाइयों के साथ सहर्ष विवाह किया है। यह वाकया हमें पुराने रीति-रिवाजों की तरफ ले जाता है, जबकि नई पीढ़ी के लिए यह हैरत में डालकर सोचने पर विवश करता है। यद्यपि आज इसका प्रचलन सीमित रह गया है, परंतु यह प्रथा पहले उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों जैसे कि उत्तराखंड का जौनसार बावर, हिमाचल का शिलाई, किन्नौर और शिमला सहित अन्य इलाकों में सामान्य मानी जाती थी। महाभारत में द्रौपदी का विवाह पांच पांडवों से होना इस परंपरा का प्राचीन उदाहरण है। पांडवों के वनवास काल में इन क्षेत्रों में उनके निवास के संकेत मिलते हैं, जिससे माना जाता है कि बहुपति विवाह की परंपरा वहीं से प्रभावित हो सकती है। आज बहुपति विवाह लगभग विलुप्त हो चुका है, किंतु इस प्रथा के समर्थक और विरोधी दोनों ही अपने-अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं। समर्थकों का मानना है कि यह प्रथा नारी को आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा देती है। कई महिलाएं इसे एक वरदान मानती हैं, वे कहती हैं कि वे 'अक्षय सुहागिन' हैं, उन्हें विधवा होने का डर नहीं रहता, और उनके बच्चों के सिर से पिता का साया नहीं उठता। वहीं इसके विरोधी इसे नारी की स्वतंत्रता, सम्मान और मानसिक स्वास्थ्य के विरुद्ध मानते हैं। उनका मानना है कि यह प्रथा आधुनिक समाज में महिलाओं की गरिमा और समानता के सिद्धांतों के अनुकूल नहीं है। दिलचस्प बात यह है कि न केवल भारत के कुछ पर्वतीय क्षेत्रों में, बल्कि चीन के सिचुआन प्रांत में रहने वाली गियांग जनजाति में भी यह प्रथा आज भी प्रचलन में है।

वहां की महिलाएं इसे अपनी संस्कृति का गौरव मानती हैं और इसे स्वेच्छा से अपनाती हैं। विवाह की प्रथा समय, स्थान और सामाजिक संदर्भ के अनुसार बदलती रही है। चाहे वह बहुपत्नी विवाह हो या बहुपति विवाह, दोनों ही व्यवस्थाओं को समझने के लिए ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों की गहराई में जाना आवश्यक है। आज के समय में जहां व्यक्तिगत अधिकार और समानता की बात की जाती है, वहां इन परंपराओं पर पुन: विचार करना एक बौद्धिक विमर्श का विषय बन गया है, क्योंकि कभी-कभी रूढ़िवादी विचार व कार्य भावी पीढ़ी के लिए परंपरा का रूप ले लेती है, जिसको न चाहते हुए भी कभी-कभार निभाना भी पड़ता है। रूढ़िवादी धारणा नहीं, अपितु तार्किक दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है।

-प्रो. सतपाल

जब बच्चों की शिक्षा पर भारी पड़ता है पाखंड

भारत में बच्चों की शिक्षा को लेकर सबसे बड़ा संकट केवल गरीबी या संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि धार्मिक पाखंड है। कुछ स्वयंभू बाबाओं द्वारा शिक्षा को अपवित्र, स्त्रियों के लिए अनुपयुक्त और समाज विरोधी बताकर बच्चों को स्कूल से दूर रखा जाता है। यह प्रवृत्ति न केवल संविधान के विरुद्ध है, बल्कि समाज की जड़ों को खोखला कर रही है। लेख में तर्क दिया गया है कि जब तक शिक्षा को पाखंड से मुक्त नहीं किया जाएगा, तब तक सशक्त समाज की कल्पना भी अधूरी रहेगी।

–डॉ. प्रियंका सौरभ

भारत में एक ओर जब हम विज्ञान, तकनीक और अंतरिक्ष अनुसंधान में नित नई ऊंचाइयों को छूने का दावा करते हैं, वहीं दूसरी ओर आज भी देश के कोने-कोने में ऐसे दृश्य मिल जाते हैं जहाँ बच्चे शिक्षा से वंचित हैं। यह विडंबना तब और पीड़ादायक हो जाती है जब शिक्षा का मार्ग केवल गरीबी या संसाधनों की कमी से नहीं, बल्कि अंधविश्वास और पाखंड से बाधित होता है।

पाखंड केवल किसी झूठे बाबा का चमत्कार दिखाना नहीं होता, यह वह सामाजिक जाल है जिसमें बच्चों की सोच, सवाल, और सपनों को जकड़ लिया जाता है। ऐसे लोग जिनका उद्देश्य समाज में अपना वर्चस्व बनाना होता है, वे शिक्षा को सबसे बड़ा खतरा मानते हैं। क्योंकि शिक्षा सवाल करना सिखाती है, सोचने का विवेक देती है और व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है। यही वह शक्ति है जिससे पाखंडियों की दुकानें बंद हो सकती हैं।

आज भी देश के अनेक गांवों, कस्बों और पिछड़े क्षेत्रों में ऐसे कथित साधु, संत और धर्मगुरु मौजूद हैं जो मंच से प्रवचन देते हुए कहते हैं, "लड़कियों को ज्यादा पढ़ाओगे तो वे घर नहीं संभालेंगी", "पुत्री की विद्या उसके विवाह में बाधा बनती है", "अत्यधिक शिक्षित कन्या अशुभ होती है।" ऐसे वक्तव्य केवल मजाक नहीं होते, ये समाज की सोच को दिशा देते हैं और माता-पिता को बच्चों को स्कूल भेजने से रोकते हैं।

सरकारी प्रयासों के बावजूद शिक्षा का प्रसार तब तक नहीं हो सकता जब तक समाज की मानसिकता नहीं बदले। एक ओर सरकार बच्चों को स्कूल लाने के लिए पोषण आहार, छात्रवृत्ति और मुफ्त किताबों जैसी योजनाएं चला रही है, वहीं दूसरी ओर समाज के स्वयंभू ठेकेदार शिक्षा को तिरस्कार की दृष्टि से देख रहे हैं।

शिक्षा का विरोध करने वाला हर स्वर दरअसल उस भय का प्रतीक है जो पाखंडियों को सता रहा है — कि यदि बच्चा शिक्षित हो गया तो वह जात-पात, भेदभाव, मंदिर में भेद, महिलाओं की स्थिति, शोषण और अन्याय जैसे मुद्दों पर सवाल पूछेगा। यही डर उन्हें किताबों से दूर रखता है।

आज भी कई जगहों पर यह कहा जाता है कि "बेटियों को ज्यादा पढ़ा दोगे तो उनका विवाह मुश्किल हो जाएगा।" कहीं-कहीं पर यह भी कहा जाता है कि "शिक्षित लड़की संस्कारहीन हो जाती है।" यह सोच केवल पिछड़ेपन की नहीं, बल्कि उस पाखंडी सोच की देन है जो धर्म और संस्कृति के नाम पर अज्ञान को बढ़ावा देती है।

यहां गौर करने वाली बात यह है कि वे स्वयंभू धर्मगुरु जो शिक्षा को व्यर्थ बताते हैं, वे स्वयं उच्च शिक्षित होते हैं। उनके बच्चे विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ते हैं, लेकिन वे गांव के बच्चों को 'गुरुकुल संस्कृति' का पाठ पढ़ाते हैं जहाँ तर्क का स्थान नहीं होता। यह दोहरा मापदंड इस देश की सबसे बड़ी त्रासदी है।

आस्था और अंधविश्वास के बीच की सीमा रेखा तब धुंधली हो जाती है जब कोई बाबा कहता है कि "बच्चों को स्कूल नहीं, सत्संग में भेजो" और समाज उसका आंख मूंदकर पालन करता है। यही वह क्षण होता है जब शिक्षा पर पाखंड भारी पड़ता है।

एक शिक्षित समाज ही एक प्रगतिशील राष्ट्र की नींव होता है। परंतु जब शिक्षा को ही शंका की दृष्टि से देखा जाए, तो देश का भविष्य अंधकारमय हो जाता है। स्कूलों को पूजा स्थलों से कमतर आंकना, शिक्षकों को समाज में द्वितीय दर्जा देना और ज्ञान की जगह मंत्रों को प्राथमिकता देना — यह सब उसी मानसिकता का परिणाम है।

ध्यान देने की बात यह भी है कि कई बार राजनीतिक शक्ति और धार्मिक पाखंड का गठबंधन हो जाता है। वोट बैंक की राजनीति में तथाकथित साधुओं को मंच मिल जाता है और वे बच्चों की शिक्षा को भ्रम और पाप बताकर उनका मानसिक दोहन करते हैं। कई बार तो ऐसे प्रचारकों को सरकारी मंच, सुरक्षा और सुविधाएं भी मिलती हैं।

बच्चे जब स्कूल जाते हैं, तो वे केवल गणित, विज्ञान या भाषा नहीं सीखते। वे स्वतंत्रता, समानता, तर्क, और अधिकारों की भी शिक्षा प्राप्त करते हैं। यही वह बात है जो पाखंडियों को असहज कर देती है।

वे नहीं चाहते कि कोई बच्चा पूछे कि —

"यदि हम सब ईश्वर की संतान हैं, तो जातियाँ क्यों हैं?"

"स्त्रियों को मंदिरों में प्रवेश क्यों नहीं मिलता?"

"गरीबों को अच्छे स्कूल क्यों नहीं मिलते?"

ये सवाल ही पाखंड की जड़ें हिला सकते हैं, इसलिए ऐसे लोगों का पहला हमला हमेशा शिक्षा पर होता है।

अफसोस की बात यह है कि शिक्षा विभाग तक कई बार इन प्रवृत्तियों के आगे कमजोर पड़ जाता है। स्कूलों में धार्मिक रस्में सिखाना, बाबाओं के नाम पर छुट्टियाँ देना, या भजन प्रतियोगिताएं करवाना अब सामान्य हो चला है।

ऐसे में एक बच्चा जिसे सोचने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए, उसे अनुकरण का पाठ पढ़ाया जाता है।

लड़कियों की स्थिति तो और भी दयनीय है। उन्हें 'कन्या दान' के नाम पर चुप कराना, 'पवित्रता' के नाम पर घर में बंद रखना, और 'संस्कार' के नाम पर शिक्षा से वंचित रखना — यह सब उस समाज की असल तस्वीर है जो बाहर से चमकता है लेकिन भीतर से सड़ रहा है।

हम अक्सर कहते हैं कि एक पढ़ी-लिखी माँ पूरे परिवार को शिक्षित करती है। लेकिन जब समाज उस माँ को ही स्कूल से बाहर कर देता है, तो पीढ़ियाँ अंधकार में ही पनपती हैं।

हमें यह समझना होगा कि शिक्षा कोई वैकल्पिक साधन नहीं, यह मौलिक अधिकार है। बच्चों की आंखों में जो चमक होती है, वह तब और बढ़ती है जब उनके हाथों में किताबें होती हैं, जब उन्हें प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता होती है और जब शिक्षक उनका मार्गदर्शक होता है, कोई बाबा नहीं।

यदि हमें एक ऐसा समाज चाहिए जो तर्कशील, न्यायप्रिय और समतावादी हो, तो हमें बच्चों को शिक्षा से जोड़ना ही होगा। इसके लिए केवल योजनाओं की नहीं, मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है।

हमें बाबाओं और पाखंडियों से यह सीधा सवाल पूछना होगा —

"अगर शिक्षा पाप है, तो आप अपने बच्चों को क्यों पढ़ाते हैं?"

"अगर लड़कियों को स्कूल जाना अनुचित है, तो आपके घर की बेटियाँ क्यों कॉलेज जा रही हैं?"

सवाल पूछना ही पहला कदम है पाखंड के खिलाफ संघर्ष का।

शिक्षकों को भी चाहिए कि वे न केवल पाठ्यक्रम पढ़ाएं, बल्कि बच्चों को विवेकशील बनाएं। उन्हें यह बताएं कि श्रद्धा और समझ में क्या अंतर होता है। विद्यालयों को ऐसे केंद्र बनाना होगा जहाँ स्वतंत्र विचारों का आदर हो, न कि केवल अनुकरण की शिक्षा दी जाए।

सरकारों को चाहिए कि वे शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी प्रकार के धार्मिक हस्तक्षेप को रोकें। संविधाननिष्ठ नागरिकों को चाहिए कि वे धर्म के नाम पर बच्चों के अधिकारों का हनन न होने दें। और सबसे बढ़कर, समाज को चाहिए कि वह बच्चों की शिक्षा को 'धर्म' नहीं, 'कर्तव्य' माने।

बच्चों के भविष्य से बड़ा कोई धर्म नहीं हो सकता।

किसी भी चमत्कार से ज्यादा जरूरी है उनका सवाल पूछने का साहस।

पाखंड की दीवारों को केवल किताबें ही गिरा सकती हैं। और उस किताब के पहले पन्ने पर लिखा होना चाहिए — "मैं सोच सकता हूँ, इसलिए मैं आज़ाद हूँ।"

अंततः यह हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम अपने बच्चों को ऐसे समाज में बड़ा करें जहाँ वे विवेक से जी सकें, स्वतंत्र रूप से सोच सकें और हर प्रकार के पाखंड से ऊपर उठकर अपना भविष्य गढ़ सकें।

कैसे बनी झारखंड की शमा परवीन अलकायदा मॉड्यूल की 'लास्ट बॉस': इंस्टाग्राम से आतंक का जाल तक

अशोक कुमार झा

हिंदुस्तान की धरती पर आतंकवाद का चेहरा तेजी से बदल रहा है। अब यह केवल सीमाओं से पार कर हथियार और बारूद के ज़रिए नहीं बल्कि स्मार्टफोन और सोशल मीडिया की स्क्रीन से युवाओं के दिल-दिमाग तक पहुँच रहा है। झारखंड की ३० वर्षीय शमा परवीन की गिरफ्तारी इसी बदलते आतंकवादी तंत्र का जीवंत उदाहरण है। गुजरात एटीएस द्वारा बेंगलुरु से गिरफ्तार की गई यह महिला अल-कायदा इन द इंडियन सबकॉन्टिनेंट (AQIS) के भारत में ऑनलाइन मॉड्यूल की 'लास्ट बॉस' बताई जा रही है।

यह घटना केवल एक व्यक्ति की गिरफ्तारी नहीं बल्कि एक गहरी सच्चाई का खुलासा है—हिंदुस्तान का युवा वर्ग अब सोशल मीडिया के जरिये कट्टरपंथी संगठनों के सबसे आसान निशाने पर है। आतंकवाद की यह नई परत समाज और सुरक्षा तंत्र दोनों के लिए अभूतपूर्व चुनौती लेकर आई है।

सोशल मीडिया: आतंक का नया हथियार

एक दौर था जब आतंकवादी संगठन अपने एजेंडे को फैलाने के लिए गुप्त ठिकानों, हथियारों की तस्करी और सीमा पार से भेजे गए प्रशिक्षित लड़ाकों पर निर्भर रहते थे लेकिन आज हालात बदल चुके हैं। अब आतंकवादियों के हाथ में बंदूक से ज्यादा ताकतवर हथियार है— सोशल मीडिया।

इंस्टाग्राम, फेसबुक, टेलीग्राम और व्हाट्सऐप जैसे मंचों के जरिये आतंकी संगठन युवाओं तक सीधी पहुँच बना रहे हैं। धार्मिक कहानियाँ, भड़काऊ पोस्ट्स, वीडियो और कथित जिहाद की कहानियाँ उनके हथियार हैं।

शमा परवीन इसी डिजिटल जिहाद की प्रमुख कड़ी साबित हुई। उसने इंस्टाग्राम अकाउंट्स से युवाओं के साथ भावनात्मक जुड़ाव बनाया, उन्हें कथित धार्मिक आख्यान सुनाए और धीरे-धीरे कट्टरपंथ के गहरे दलदल में खींच लिया।

सोचिए, जब एक क्लिक से हजारों युवाओं तक पहुँच संभव हो, तो आतंकियों के लिए यह रास्ता कितना आसान हो जाता है। अब उन्हें न तो सीमा पार करनी पड़ती है और न ही हथियारों का जखीरा भेजने की जरूरत होती है।

झारखंड से बेंगलुरु तक: एक खतरनाक सफर

शमा परवीन की कहानी चौंकाने वाली है। झारखंड के एक सामान्य परिवार की यह महिला पढ़ाई और रोजगार की तलाश में बेंगलुरु पहुँची। शुरुआत में उसका जीवन साधारण था लेकिन धीरे-धीरे वह AQIS के संपर्क में आई।

जांच एजेंसियों का कहना है कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान में बैठे आकाओं ने उसे योजनाबद्ध तरीके से रेडिकलाइज किया। उसे ऑनलाइन धार्मिक तालीम के नाम पर भड़काऊ सामग्री दी गई और धीरे-धीरे संगठन के एजेंडे को फैलाने का जिम्मा सौंपा गया।

महिला होने के कारण उस पर संदेह कम हुआ और उसने इस कमजोरी को ताकत में बदलते हुए युवाओं से गहरे संवाद स्थापित किए।

बेंगलुरु जैसे महानगर में जहाँ तकनीकी विकास और शिक्षा के अवसर बहुत हैं, वहाँ शमा जैसी महिला का AQIS की "डिजिटल कमांडर" बन जाना सुरक्षा एजेंसियों के लिए बड़ा सबक है।

महिलाएं क्यों बन रही हैं आतंक की नई ताकत

विशेषज्ञों का मानना है कि महिलाएं आतंकी संगठनों के लिए खास महत्व रखती हैं क्योंकि समाज में उन पर सामान्यत: संदेह कम किया जाता है। वे भावनात्मक संवाद और सहानुभूति का सहारा लेकर युवाओं को अधिक प्रभावी ढंग से प्रभावित कर सकती हैं।

शमा परवीन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। वह केवल सहायक नहीं बल्कि पूरे ऑनलाइन मॉड्यूल की संचालिका थी। उसने युवाओं को धार्मिक कर्तव्यों, जन्नत और शहादत के झूठे वादों से प्रभावित किया और उन्हें संगठन के लिए तैयार किया।

यह स्पष्ट है कि आतंक का चेहरा अब केवल पुरुषों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि महिलाएं भी उतनी ही खतरनाक भूमिका निभा सकती हैं।

AQIS और हिंदुस्तान की चुनौती

अलकायदा इन द इंडियन सबकॉन्टिनेंट (AQIS) की स्थापना 2014 में हुई थी। इसका घोषित उद्देश्य भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान और म्यांमार में इस्लामी शासन स्थापित करना है। यह संगठन केवल हिंसक हमलों से ही नहीं बल्कि सोशल मीडिया और शिक्षा संस्थानों में घुसपैठ करके धीरे-धीरे लोकतांत्रिक ढांचे को कमजोर करना चाहता है।

हिंदुस्तान आज जब वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है, ऐसे में AQIS जैसे संगठनों की साजिशें न केवल हमारी सुरक्षा बल्कि हमारी सामाजिक संरचना को भी खतरे में डाल रही हैं।

शमा परवीन का मामला इस साजिश की गंभीरता को उजागर करता है।

डिजिटल जिहाद: आधुनिक आतंक का सबसे बड़ा खतरा

आज आतंकवाद की सबसे बड़ी ताकत उसका डिजिटल चेहरा है।

एक स्मार्टफोन से हजारों युवाओं तक पहुँच

धार्मिक आख्यानों और भ्रामक वीडियो का प्रयोग

जन्नत और शहादत की झूठी कहानियों से मानसिक ब्रेनवॉश

एन्क्रिप्टेड चैट्स और गुप्त ग्रुप्स के जरिए नेटवर्किंग

वर्चुअल ट्रेनिंग और ऑनलाइन हथियार-तकनीक का प्रशिक्षण

यह सब पारंपरिक सुरक्षा उपायों से कहीं अधिक खतरनाक है क्योंकि यह युद्ध हमारे घरों और दिमागों के अंदर लड़ा जा रहा है।

समाज और सुरक्षा तंत्र की जिम्मेदारी

शमा परवीन की गिरफ्तारी केवल पुलिस और एटीएस की जीत नहीं है, बल्कि समाज के लिए चेतावनी है। इस लड़ाई को जीतने के लिए केवल कानून-व्यवस्था पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होगा।

1. परिवार की जिम्मेदारी: माता-पिता को सतर्क रहना होगा कि उनके बच्चे सोशल मीडिया पर क्या देख रहे हैं और किससे जुड़ रहे हैं।

२. शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका: स्कूल-कॉलेजों में जागरूकता अभियान चलाए जाएं ताकि युवा कट्टरपंथ के जाल में न फँसें।

३. सरकार और सुरक्षा एजेंसियों की रणनीति: साइबर मॉनिटरिंग और तकनीकी संसाधनों को मजबूत करना ज़रूरी है। आतंक से जुड़े अकाउंट्स की पहचान और उन्हें ब्लॉक करने की प्रक्रिया तेज होनी चाहिए।

4. धार्मिक और सामाजिक संगठनों की भागीदारी: समाज में सही धार्मिक शिक्षाएं और मानवता के संदेश फैलाने के लिए धार्मिक नेताओं को आगे आना होगा।

५. मीडिया की जिम्मेदारी: समाचार संस्थानों को ऐसे मामलों को सनसनीखेज न बनाकर जिम्मेदारी से प्रस्तुत करना होगा ताकि समाज में सही जागरूकता फैले।

कल की चेतावनी, आज की जिम्मेदारी

झारखंड की शमा परवीन की गिरफ्तारी हिंदुस्तान के लिए गहरी चेतावनी है। यह साबित करता है कि आतंकवाद अब सीमाओं से पार होकर नहीं, बल्कि हमारे मोबाइल स्क्रीन से हमारी जिंदगी में प्रवेश कर चुका है।

यदि हम आज सचेत नहीं हुए तो कल हमारे युवाओं को कट्टरपंथ की अंधेरी खाई में धकेल दिया जाएगा।

यह लड़ाई अब केवल हथियारों से नहीं, बल्कि विचारों और तकनीक के स्तर पर भी लड़ी जानी है और यह जिम्मेदारी केवल सरकार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की है।

शमा परवीन का केस हमें सिखाता है कि आतंक का यह डिजिटल चेहरा हिंदुस्तान की सबसे बड़ी राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौती है। यदि समय रहते समाज और सुरक्षा तंत्र ने मिलकर ठोस कदम नहीं उठाए, तो कल यह खतरा और गहरा हो सकता है।

मालेगांव बम विस्फोट कांड का निर्णय - भगवा आतंकवाद का नैरेटिव ध्वस्त

डॉ घनश्याम बादल

आखिरकार 29 सितंबर 2008 को हुए मालेगांव बम ब्लास्ट केस का फैसला सामने आ गया है और बावजूद सारे प्रयासों, जांच एवं सबूत पेश करने के महाराष्ट्र पुलिस, एटीएस और एनआईए के सारे प्रयास असफल साबित हुए तथा इस केस के सातों आरोपियों को एनआईए की अदालत में बाइज्जत बरी कर दिया है।

इसके साथ ही भगवा आतंकवाद का जो शगूफा तत्कालीन कालखंड में खड़ा किया गया था, उसको भी अदालत ने यह कहते हुए खारिज कर दिया कि दहशतगर्दी का कोई धर्म नहीं होता है ।

सरसरी दृष्टि से देखने पर ये छोटी-छोटी सी बातें हैं मगर राजनीति के गहरे अर्थों को रेखांकित करती हैं। राजनीतिक विचारधाराओं का अलग होना कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन जब सत्ता पक्ष में रहने वाला दल एक खास नजरिए के साथ घटनाओं को देखने या प्रस्तुत करने लग जाता है तो फिर यह मतभेद मनभेद में बदल जाता है और भारी अंतर डाल देता है।

सन 2006 से 2011 तक का एक ऐसा दौर देश में आया था जब जगह-जगह दहशतगर्दी नंगा नाच दिखा रही थी। बम विस्फोटों की एक ऐसी श्रृंखला शुरू हो गई थी जिसका कोई ओर छोर दिखाई नहीं दे रहा था ।ऐसे ही बम विस्फोटों में। मालेगांव में एक बम ब्लास्ट 1 8 सितंबर 2006 को कब्रिस्तान के पास मालेगांव में हुआ इसमें 37 लोग मारे गए और 100 से ज्यादा घायल हुए । बम विस्फोट का शक मुस्लिम युवकों पर गया ।

11 अक्टूबर 2007 को भी अजमेर दरगाह में ब्लास्ट हुआ जिसमें कई लोगों की मृत्यु हुई. इस केस की जांच पड़ताल के बाद देवेंद्र गुप्ता और भावेश पटेल को उम्रकैद सजा हुई।

18 फरवरी 2007 को समझौता एक्सप्रेस में भी विस्फोट हुआ और 250 से ज्यादा लोग मारे गए .घायलों की संख्या भी काफी अधिक रही । 18 मई 2007 को हैदराबाद मक्का मस्जिद में भी ब्लास्ट हुआ।

29 सितंबर 2008 को महाराष्ट्र के नासिक जिले के मालेगांव में भीकू चौक पर मस्जिद के पास जो भीषण बम विस्फोट हुआ, उसके कारण मस्जिद की घड़ियां 9:35 पर घड़ियां रुक गई थीं . छह लोग मारे गए और 100 से ज्यादा घायल हुए. अदालत में 95 घायलों की सूची पेश की गई। जांच एजेंसियों के अनुसार आरोपी साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर की बाइक पर रखा बम फटा था। इस घटना का संदेह अभिनव भारत नाम के एक हिन्दू संगठन पर किया गया और इसी को केंद्र में रखते हुए जांच को आगे बढ़ाया गया।

एटीएस और और एनआईए ने अदालत में अभियुक्तों के रूप में साध्वी प्रज्ञा सिंह, कर्नल श्रीकांत पुरोहित, रमेश उपाध्याय, समीर कुलकर्णी, सुधाकर द्विवेदी उर्फ शंकराचार्य और सुधाकर चतुर्वेदी उर्फ पंडित अमृतानंद तथा अजय राहेलकर को पेश किया । इस केस के मुख्य अधिकारी के रूप में एटीएस के हेमंत करकरे ने काफी जांच पड़ताल की . करकरे बाद में मुंबई में 26 11 2011 के मुंबई के बम विस्फोट में शहीद हुए।

पहले जांच एटीएस यानी एंटी टेरेरिस्ट स्क्वाड को दी गई थी जो बाद में एन आई ए को सौंप दी गई। एटीएस के तत्कालीन जांच अधिकारी महबूब मुजावर का रहस्य उद्घाटन चौंकाने वाला है कि उन्हें आर एस एस के तत्कालीन सर कार्यवाह मोहन भागवत को भी गिरफ्तार करने के लिए कहा गया था । उस समय के सुदर्शन आर एस एस मुखिया थे ।

तब महाराष्ट्र में कांग्रेस की सरकार थी और मुख्यमंत्री थे बिलास राव देशमुख .बाद में 2008 में अशोक राव चहाण बने यानी इस केस की जांच के दौरान दो मुख्यमंत्री रहे। उस समय पहले तो मुस्लिम आतंकवादी संगठनों पर शक जाहिर किया गया था लेकिन बाद में जांच एजेंसियों ने इसे भगवा आतंकवाद से जोड़कर पेश किया. तब संसद में पी चिदंबरम ने भगवा आतंकवाद को इसका दोषी ठहराया था यानी उस समय कांग्रेस की सरकार द्वारा हिंदू आतंकवाद का एक नया नैरेटिव गढ़ने की कोशिश की गई ।

17 साल मुकदमा चला और 31 जुलाई 2025 को सुनाए गए निर्णय में सभी सातों आरोपी बरी कर दिए गए हैं । अदालत ने इसका कारण भी बताया है कि इस कांड में जांच एजेंसियां कोई भी पुख्ता सबूत पेश करने में पूरी तरह नाकाम रहीं । यहां तक कि घटना स्थल को भी सुरक्षित नहीं रख पाई तथा न ही यह सिद्ध कर पाई कि कर्नल श्रीकांत पुरोहित ने बम दिया या बम बनाने में कोई तकनीकी जानकारी अथवा सहयोग किया। इसी तरह साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर पर भी षड्यंत्र रचने का आरोप सिद्ध नहीं हो पाया है। हालांकि 31 जुलाई 2025 को एनआईए कोर्ट के निर्णय के खिलाफ दूसरा पक्ष उच्चतर न्यायालय में जाएगा। इसलिए इस निर्णय को अभी अंतिम निर्णय नहीं मानना चाहिए।

गौरतलब है कि केस में जांच एजेंसियों ने आतंकवाद निरोधी कानून और विस्फोटक अधिनियम लागू किया और धारा 120 बी एवं 302 में केस दर्ज किए गए। यद्यपि फैसला तो आ चुका है लेकिन अपने पीछे यह अनेक सवाल खड़े कर रहा है और इस बात पर गहमा गहमी जारी है कि आखिर न्याय प्रक्रिया इतनी लंबी प्रक्रिया क्यों बन गई कि इसका निर्णय देने में 17 साल लग गए? न्याय में देरी का मतलब न्याय न देना होता है इस नजरिए से देखें तो अदालत का यह निर्णय न्याय देता नहीं लगता।

यहां यह पूछना भी समीचीन होगा कि जब कोई भी दोषी नहीं तो बम कैसे आया ? कौन लाया ? किसने सपोर्ट किया, किसने योजना बनाई ?

विरपोस: रिश्तों की आत्मा को छूने वाला पर्व

[विरपोस : समय की धूल में छिपे रिश्तों की रूहानी चमक]

रक्षाबंधन से ठीक पहले आने वाला रविवार, जिसे हम विरपोस या वीरफुली पर्व के नाम से जानते हैं, हमारे सांस्कृतिक और भावनात्मक जीवन का एक अनमोल रंग है। यह पर्व केवल एक रस्म नहीं, बल्कि भाई-बहन के पवित्र रिश्ते की गहराई को उजागर करने वाला एक हृदयस्पर्शी उत्सव है। इस दिन भाई अपनी बहन के घर कदम रखता है, न केवल शगुन की भेंट लेकर, बल्कि अपने हृदय में स्नेह, विश्वास और अपनत्व का वह अनमोल खजाना लिए, जो इस बंधन को अमर बनाता है। यह पर्व उन अनकहे वादों, साझा स्मृतियों और अटूट प्रेम का उत्सव है, जो समय और दूरी की हर दीवार को पार कर चमकता है। यह वह पल है जब भाई की उपस्थिति और बहन की मुस्कान एक-दूसरे के लिए सबसे अनमोल उपहार बन जाती है।

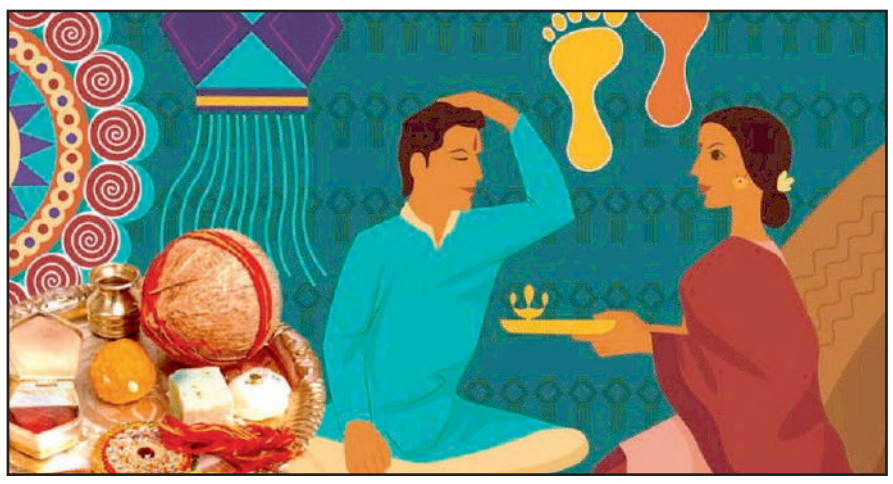

विरपोस की सुबह एक अनूठे उत्साह और उमंग का संचार करती है। जब भाई घर से निकलता है, उसकी टोकरी में न केवल मिठाइयाँ, नारियल, वस्त्र या शगुन की वस्तुएँ होती हैं, बल्कि उसमें समाया होता है एक पूरा संसार—बचपन की शरारतें, साथ में बिताए हँसी-खुशी के लम्हे, छोटी-मोटी नोकझोंक और फिर प्रेम भरी सुलह। यह वह दिन है जब भाई अपनी तमाम व्यस्तताओं को ठेंगा दिखाकर, चाहे कितनी भी दूरी क्यों न हो, अपनी बहन के पास पहुँचता है। बहनें इस दिन द्वार पर नजरें गड़ाए अपने भाई का इंतज़ार करती हैं। भाई के आगमन पर तिलक, आरती, मिठाई और मुस्कान से उसका स्वागत होता है—यह स्वागत महज औपचारिकता नहीं, बल्कि दिल से दिल तक का एक अनमोल संवाद है। तिलक की हर बूँद, अक्षत का हर दाना और मिठाई का हर निवाला उस अटूट प्रेम का प्रतीक है, जो इस रिश्ते को सदा के लिए अमर बनाता है।

इस पर्व की असली खूबसूरती इसकी सादगी और गहराई में बसती है। आज के भागदौड़ भरे जीवन में, जब रिश्तों को समय देना किसी चुनौती से कम नहीं, विरपोस हमें हमारी जड़ों से जोड़ने का एक अनमोल मौका देता है। यह पर्व सिखाता है कि रिश्ते निभाने का मतलब उन्हें जीना है, न कि दिखावे के लिए। इसके लिए भव्य आयोजनों की जरूरत नहीं, बस एक सच्ची उपस्थिति और निश्छल भावनाएँ ही काफी हैं। इस दिन बहन अपने भाई के माथे पर तिलक लगाकर न केवल उसकी मंगल कामना करती है, बल्कि उसे अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा मानती है। वहीं, भाई अपनी बहन की मुस्कान में अपने दिल का सुकून पाता है और उसकी झोली में रखी भेंट के साथ अपना प्रेम, जिम्मेदारी और अपनत्व सौंपता है। यह आदान-प्रदान केवल भौतिक वस्तुओं का नहीं, बल्कि हृदय से हृदय तक बहने वाली भावनाओं का है, जो इस पर्व को और भी अर्थपूर्ण बनाता है।

विरपोस रक्षाबंधन की महज प्रस्तावना नहीं, बल्कि भाई-बहन के रिश्ते की भावनात्मक नींव को और सशक्त करने वाला उत्सव है। यह वह अवसर है जो उन्हें एक-दूसरे के प्रति अपनी जिम्मेदारियों और अनकहे वादों को दोहराने का मौका देता है। यह पर्व कहता है, "मैं हूँ तेरा साथी—तेरे हर सुख-दुख में, तेरे हर डर के सामने ढाल बनकर।" यह भारतीय संस्कृति की उस अनमोल विशेषता को उजागर करता है, जहाँ त्योहार केवल तारीखें या रीति-रिवाज नहीं, बल्कि जीवंत भावनाओं की अमर परंपराएँ हैं। इन्हें निभाना नहीं, बल्कि आत्मा में उतारना होता है। विरपोस हमें याद दिलाता है कि रिश्तों की मिठास को कायम रखने के लिए बस छोटे-छोटे प्रयास ही काफी हैं—एक हार्दिक मुलाकात, एक आत्मीय मुस्कान, या एक गर्मजोशी भरा आलिंगन।

विरपोस का महत्व एक दिन की सीमा में नहीं बंधता; यह एक ऐसी भावना है जो साल भर हमारे रिश्तों को पोषित करती है। यह उन बहनों की प्रतीक्षा का सम्मान है, जो साल भर अपने भाई के कदमों की आहट सुनने को बेताब रहती हैं। यह उन भाइयों की यात्रा का उत्सव है, जो सैकड़ों किलोमीटर की दूरी को पलक झपकते पार कर अपनी बहन की एक मुस्कान के लिए हाजिर हो जाते हैं। यह पर्व उन स्मृतियों को फिर से जागृत करता है, जो समय की धूल में धुंधलाने लगती हैं। यह हमें याद दिलाता है कि रिश्ते केवल खून के नहीं, बल्कि दिल से दिल तक बंधे उन भावनात्मक धागों के हैं, जो हर तूफान में हमें एक-दूसरे से जोड़े रखते हैं। आज के यांत्रिक और भागमभाग भरे जीवन में, जब रिश्ते औपचारिकताओं की भेंट चढ़ रहे हैं, विरपोस हमें एक गहरा सबक देता है—रिश्तों को जीवंत रखने के लिए भौतिक उपहारों से कहीं अधिक कीमती है एक-दूसरे के लिए समय निकालना। यह पर्व हमें सिखाता है कि सच्चा स्नेह वह है, जो बिना किसी अपेक्षा के दिल से दिल तक बहता है। एक भाई का अपनी बहन के लिए समय निकालना, उसकी खुशियों में शरीक होना, और उसकी चिंताओं को सहानुभूति से सुनना—यही इस पर्व का सच्चा सार है।

विरपोस हमें यह भी बताता है कि रिश्तों की असली ताकत विश्वास और अपनत्व की उस अटूट डोर में है, जो हमें हर परिस्थिति में जोड़े रखती है। यह पर्व उन भाई-बहनों के लिए है, जो एक-दूसरे के लिए ढाल और सहारा बनते हैं। यह उन स्मृतियों का उत्सव है, जो समय की रेत में कहीं दब जाती हैं, मगर इस दिन फिर से जीवंत हो उठती हैं। यह हमें याद दिलाता है कि रिश्तों को पोषित करने के लिए भव्य वादों की नहीं, बल्कि छोटे-छोटे, सच्चे प्रयासों की जरूरत होती है। इस विरपोस पर्व को महज एक रस्म न बनाएँ, बल्कि इसे पूरे दिल और आत्मा से जिएँ। अपनी बहन के द्वार पर जाएँ, उसे बताएँ कि वह आज भी उतनी ही अनमोल है, जितनी बचपन की शरारतों भरे दिनों में थी। उसकी झोली में न केवल भेंट रखें, बल्कि अपना स्नेह, विश्वास और अपनत्व का वह अनमोल खजाना सौंपें, जो समय की हर कसौटी पर खरा उतरे। यही है विरपोस का असली मूल्य, यही हमारी संस्कृति का गहन सौंदर्य, और यही वह बंधन है, जो हर युग, हर दूरी और हर परिस्थिति में हमें अटूट रखता है।

–प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

झारखंड के शिक्षा मंत्री बाथरूम में गिरने से माथे पर गंभीर चोट, एयरलिफ्ट कर दिल्ली भेजे गये

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

जमशेदपुर , शनिवार सुबह उदय होने वाला सुरज झारखंड मंत्रिमंडल समेत जनमानस के लिये चिंता का खबर लेकर आया ।झारखंड सरकार के स्कूली शिक्षा, साक्षरता एवं निबंधन विभाग के मंत्री सह घाटशिला विधानसभा क्षेत्र के विधायक रामदास सोरेन घोड़ाबांधा स्थित अपने आवास के बाथरूम में शनिवार भोर फिसलकर गिर गए । उनके सिर में गंभीर चोटें आई तथा प्रवाहित रक्त थमने से थक्का होना बताया गया । तत्काल उन्हें टाटा मोटर्स अस्पताल, जमशेदपुर में लेजाया गया जहां से एयर एंबुलेंस के माध्यम से बेहतर इलाज के लिए दिल्ली भेज दिया गया । सुबह-सुबह पांच बजे से साढ़े नौ बजे के बीच कर लिया गया ।जमशेदपुर अस्पताल में सीटी स्कैन से पता चला मंत्री रामदास सोरेन के मस्तिष्क के बीच खून का थक्का जम चुका था । जो आगे चलकर ब्रेन हेमरेज का कारण हो सकता है ।जांच के दौरान उनका ब्लड प्रेशर 170/120 मापा गया, जो सामान्य से काफी अधिक था ।

बताया जाता है कि तब मंत्री होश में थे । रामदास सोरेन के ब्रेन में ब्लड क्लाट होने के कारण बढ़िया इलाज हेतु दिल्ली भेजा गया है । मंत्री के संग उनके बड़े पुत्र सोमेश सोरेन, बहरागोड़ा के पूर्व विधायक सह झामुमो के प्रवक्ता कुणाल षाडगी दिल्ली गए हुए हैं। इसके अलावा जमशेदपुर से डॉक्टर की एक टीम मंत्री रामदास सोरेन के साथ है ।

झारखंड सरकार के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने अपने X पेज पर इस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे सहयोगी, गरीबों के सच्चे हितैषी और आदिवासी समाज की सशक्त आवाज़, झारखंड के शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन जी की तबीयत अचानक बिगड़ गई है।

महाराजा संपादक: जब चौपाल बंद हो जाए और दरबार लगने लगे "जनता की बात नहीं सुनते संपादक, फिर किसके लिए हैं अखबार?"

जब लोकतंत्र का प्रहरी—संपादक—जनता से संवाद बंद कर दे और सत्ता का दरबारी बन जाए, तब पत्रकारिता दम तोड़ने लगती है। आज बड़े संपादक आम आदमी से कट चुके हैं, गाँव-कस्बों की आवाज़ें अखबारों में गुम हैं। संवाद की जगह प्रचार ने ले ली है। सत्ता और पूँजी के एजेंडे चलाए जा रहे हैं। अब वक्त है संपादकों को चौपाल में वापस लाने का—जहाँ हर नागरिक का सवाल सुना जाए और जवाबदेही तय हो। वरना लोकतंत्र महज़ एक सजावटी तमाशा बनकर रह जाएगा।

– डॉ सत्यवान सौरभ

भारत एक लोकतांत्रिक गणराज्य है। संविधान के पहले शब्द ही कहते हैं—₹हम भारत के लोग...₹। यानी इस देश में हर पद, हर संस्था, हर कानून की जड़ें जनता में हैं। लेकिन जब लोकतंत्र के सबसे ज़रूरी स्तंभ—मीडिया—और उसमें भी सबसे असरदार वर्ग—संपादक—ही जनता से मुंह मोड़ ले, तो सवाल उठाना लाज़मी हो जाता है।

आजकल बड़े-बड़े अखबारों के कई संपादक आम आदमी से बात तक नहीं करते। कॉल रिसीव करना तो दूर, उनका अंदाज़ ऐसा होता है जैसे जनता से बात करना उनकी शान के ख़िलाफ़ है। जिनका काम था जनता की आवाज़ को सत्ता के गलियारों तक ले जाना, वो खुद सत्ता की चुप्पी के दरबारी बन बैठे हैं। ऐसे में ये पूछना ज़रूरी है कि इन 'महाराजा संपादकों' की हमारे लोकतंत्र में भूमिका क्या है?

कभी पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता था। लेकिन अब यह स्तंभ कॉरपोरेट की छत पर खड़ा नज़र आता है। गाँव का किसान, छोटी दुकान चलाने वाला, दिहाड़ी मज़दूर, बेरोज़गार युवा—इनकी खबरें अब ना टीवी के प्राइम टाइम में आती हैं, ना अखबारों के कॉलम में। क्योंकि ये न टीआरपी लाते हैं, न विज्ञापन। आज का संपादक जनता की नब्ज़ नहीं, सत्ता और पूँजी की धड़कन देख रहा है—इस डर से कि कहीं विज्ञापन की सांसें न थम जाएं।

संपादक अब संवाद नहीं करते, वो आदेश देते हैं। वे खुद तय करते हैं कि कौन सी खबर छपेगी, कौन सा मुद्दा दिखेगा और कौन सा दबा दिया जाएगा। हरियाणा से बंगाल तक, मध्यप्रदेश से महाराष्ट्र तक हज़ारों आंदोलन सड़कों पर होते हैं, लेकिन बड़े अखबारों में उनकी एक लाइन नहीं छपती। संपादक अब यह नहीं सोचते कि जनता क्या जानना चाहती है, वे ये सोचते हैं कि सरकार और उद्योगपतियों को क्या दिखाना है।

ये कैसी विडंबना है कि जिस देश में राष्ट्रपति तक को कोई भी नागरिक पत्र लिख सकता है, प्रधानमंत्री 'मन की बात' के ज़रिए जनता से सीधे संवाद करता है, वहां एक अखबार का संपादक आम आदमी के ईमेल को भी समय की बर्बादी समझता है? जब संवाद का माध्यम ही 'selective hearing' करने लगे, तो लोकतंत्र बहरा होने लगता है।

जब संपादक जनता की बात नहीं सुनते, तो फिर वे किसके लिए लिखते हैं? उत्तर साफ़ है—सरकार और पूँजी के लिए। अब

अखबार सूचना का माध्यम नहीं रहे, वे इमेज मैनेजमेंट के औज़ार बन चुके हैं। हर दिन पहले से तय होता है कि किन नेताओं की छवि चमकानी है, किस उद्योगपति को हीरो बनाना है, और किन जन आंदोलनों को अनदेखा करना है।

अब पत्रकारिता नहीं, प्रचार है। कुछ संपादक अब पत्रकार नहीं, बल्कि सत्ताधारी दलों के प्रवक्ता लगते हैं। उनकी भाषा, उनकी हेडलाइंस, उनका विश्लेषण—सबमें एक खास 'झुकाव' झलकता है। और ये झुकाव विचारधारा का नहीं, विज्ञापन और पहुंच का है। वो कहावत थी ना—"इतना मत डराओ कि कोई सच बोलना ही छोड़ दे।" पर आज तो संपादक खुद ही सत्ता से डरते हैं और जनता से कतराते हैं।

देश की आधी आबादी अब भी गाँवों में रहती है। लेकिन गाँवों की समस्याएं—बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, दलितों पर अत्याचार, खेती का संकट—बड़े अखबारों के लिए मानो अस्तित्वहीन हैं। जब तक कोई हादसा आत्महत्या या गैंगरेप न बन जाए, तब तक उसकी खबर नहीं बनती। क्या मीडिया ने तय कर लिया है कि बस महानगरों की संवेदनाएं ही 'खबर' हैं?

इस पूरे परिदृश्य में एक बात बहुत स्पष्ट है—अगर पत्रकारिता को ज़िंदा रखना है, तो संपादकों को 'महाराजा' बनना छोड़ना होगा। उन्हें फिर से जनता का सेवक बनना होगा। दरबार नहीं, चौपाल सजानी होगी। संपादक अगर आम आदमी की बात नहीं सुनेंगे, तो फिर सुनेगा कौन? अगर मीडिया ही गूंगा हो जाए, तो लोकतंत्र खुद बहरा हो जाता है।

अब ज़रूरी है कुछ बुनियादी सवाल उठाना—

क्या बड़े मीडिया घरानों को RTI के दायरे में लाया जाए?

क्या संपादकों की जवाबदेही तय की जाए?

क्या संपादकों को भी जनसुनवाई के लिए बाध्य किया जाए?

क्या स्वतंत्र पत्रकारों और छोटे अखबारों को विज्ञापन में प्राथमिकता दी जाए?

जब तक इन सवालों के उत्तर नहीं मिलते, तब तक ₹संपादक₹ नामक पद लोकतंत्र के भीतर बैठा एक लघु तानाशाह ही रहेगा।

संपादक कौन होता है? जनता का प्रतिनिधि। उसकी कलम, जनता के आंसुओं से स्याही खींचती है। अगर वह कलम अब सत्ता की जेब में रखी रहने लगी है, तो समझिए कि शब्द बिक चुके हैं, विचार गिरवी रखे जा चुके हैं, और जनता अब सिर्फ पाठक नहीं, बल्कि शोषित बन चुकी है।

आज ज़रूरत है इन 'महाराजा संपादकों' का पर्दाफाश करने की। पत्रकारिता को फिर से चौपाल में लाने की। हर आम नागरिक को यह हक़ होना चाहिए कि वो सवाल पूछ सके, और उसे जवाब मिले। वरना लोकतंत्र एक रंगमंच बनकर रह जाएगा—जहाँ नायक भी बिके हुए होंगे, और संवाद भी पहले से लिखे हुए।

सच्चा लोकतंत्र वही होता है, जहाँ एक किसान भी संपादक को चिट्ठी लिख सके, और उसे उत्तर मिले।

झारखंड के सरायकेला जिले में पुनः ऐमोनियम नाइट्रेट बरामद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला, सरायकेला-खरसावॉ में पुनः विस्फोटक सामग्री बरामद हुई है । एसपी मुकेश लुनायत का तंत्र इस दिशा में सक्रीय रहने के कारण शनिवार 2अगस्त को उन्हें सूचना मिली कि प्रतिबंधित भा0क0पा0 (माओ0) नक्सली संगठन के उग्रवादियों द्वारा उसी सरायकेला खरसावां जिले के कुचाई थाना के दलभंगा ओ0पी0 अन्तर्गत ग्राम-सिकरम्बा के समीप पहाड़ी क्षेत्र में गोला-बारूद छिपाकर रखा गया है. जिसे सुरक्षा बलों के विरूद्ध इस्तेमाल करने और उनका अभियान रोकने तथा लक्षित कर क्षति पहुंचाने के प्लान है. जिसके आलोक में सरायकेला-खरसावॉ पुलिस के साथ चाईबासा पुलिस, झारखण्ड जगुआर, सी0आर0पी0एफ0 एवं एस0एस0बी0 का एक संयुक्त अभियान का गठन करते हुए दिनांक-02.08.2025 को कुचाई थाना के दलभंगा ओ0पी0 अन्तर्गत ग्राम-सिकरम्बा के आस-पास जंगली/पहाड़ी क्षेत्रों में सर्च अभियान चलाया गया।

संयुक्त पुलिस व सुरक्षा दल द्वारा अग्रतर सर्च अभियान के दौरान दिनांक-02.08.2025 को कुचाई थाना के दलभंगा ओ0पी0 अन्तर्गत ग्राम-सिकरम्बा के समीप पहाड़ी क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा पूर्व में छिपाकर रखे गये स्टील के कन्टेनर में रखा हुआ चावल का प्लास्टिक 05 पैकेट (बैग) में अमोनिया नाईट्रेट पाउडर-125 कि0ग्रा0 (प्रत्येक पैकेट 25 कि0ग्रा0) बरामद कर सुरक्षा के दृष्टिकोण से उसी स्थान पर बम निरोधक दस्ता के सहायता से विनिष्ट किया गया है. इस संदर्भ में विधि-सम्मत अग्रतर कार्रवाई की जा रही है.

उत्कल विश्वविद्यालय में महिला कर्मचारी का उत्पीड़न

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : उत्कल विश्वविद्यालय में एक महिला कर्मचारी के साथ छेड़छाड़ का मामला सामने आया है। एक महिला कर्मचारी ने शिकायत दर्ज कराई है कि एक वरिष्ठ महिला अधिकारी उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित कर रही हैं। महिला ने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर यज्ञेश्वर दंडपत से संपर्क कर शिकायत दर्ज कराई है।इसके अलावा, विश्वविद्यालय ने आंतरिक शिकायत समिति (आईसीसी) और उच्च शिक्षा विभाग को भी ईमेल के माध्यम से सूचित किया है। शिकायत के बाद, विश्वविद्यालय प्रशासन ने भी अपनी तत्परता व्यक्त की है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर दंडपत ने घटना की जाँच के लिए एक समिति गठित की है। यह भी ज्ञात है कि आईसीसी ने भी जाँच शुरू कर दी है।

शिकायत दर्ज कराने वाली महिला ने कहा है कि कार्यस्थल पर उत्पीड़न असहनीय होने के कारण उसे अपनी बात कहने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। वह लगभग पाँच वर्षों से विश्वविद्यालय में एक निष्ठावान और समर्पित कर्मचारी के रूप में कार्यरत है। विश्वविद्यालय में एक उच्च पद पर आसीन महिला अधिकारी लगातार अस्वीकार्य व्यवहार कर रही है।

एक महीने पहले विश्वविद्यालय में

कार्यभार ग्रहण करने के बाद से ही महिला अधिकारी उसे परेशान कर रही है। उसकी टिप्पणियों और कार्यों ने एक शत्रुतापूर्ण माहौल पैदा कर दिया है, जिसका उसके मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। उसने आगे आरोप लगाया कि उसे कल शाम लगभग 6:30 बजे कार्यालय समय के बाद कुलपति कार्यालय बुलाया गया था।

फ़ाइल की स्थिति पर चर्चा की गई और समाधान का आदेश दिया गया। इसके बजाय, महिला अधिकारी का व्यवहार खराब था। कुलपति और अन्य अधीनस्थों के सामने मेरा अपमान किया गया। अपमानित और अनादरित महसूस करते हुए, मैं वहाँ शांत रहने के लिए संघर्ष कर रहा था। कुलपति के कक्ष से बाहर निकलते समय, मैं यह सवाल पूछे बिना नहीं रह सका कि हमारे संस्थान की संस्कृति और पेशेवर माहौल में इस तरह का व्यवहार कैसे बर्दाश्त किया जा सकता है।

मैं हर दिन कुलपति कार्यालय की मानसिक पीड़ा से गुज़र रहा हूँ। अपने 15 साल के करियर में, मैंने इतने वरिष्ठ अधिकारियों के अधीन काम किया है, लेकिन मुझे ऐसी उदासीनता का सामना कभी नहीं करना पड़ा। कल की घटना इतनी दर्दनाक थी कि मैं उसे आज भी नहीं भूल सकता। एक आदिवासी समुदाय से होने के नाते, मैं आम लोगों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ प्रदान कर रहा हूँ।

मैं ये मुद्दे आपके ध्यान में इसलिए ला रहा हूँ ताकि आप इस घटना की जाँच कर सकें और न्याय दिला सकें। अगर ऐसा अनैतिक व्यवहार जारी रहा, तो मुझे उत्कल विश्वविद्यालय से बर्खास्त कर दिया जाएगा। क्योंकि मैं यहाँ प्रतिनियुक्ति पर हूँ, न कि उत्कल विश्वविद्यालय का नियमित कर्मचारी। महिला कर्मचारी ने कुलपति को पत्र लिखकर समस्या को दूर करने और बेहतर माहौल बनाने के लिए कदम उठाने का अनुरोध किया है। शिकायत के संबंध में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर दंडपत ने कहा कि शिकायत की जाँच के लिए आज एक विशेष समिति गठित की गई है। समिति के सदस्यों द्वारा जाँच कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सामाजिक कार्यकर्ता लड़की का यौन उत्पीड़न करने के आरोप में पुलिस ने सीडब्ल्यूसी सदस्य को गिरफ्तार किया

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर : राज्य में महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों को लेकर जहाँ देशभर में आक्रोश है, वहीं जगतसिंहपुर ज़िले में हुई एक संवेदनशील घटना ने पूरी व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। जगतसिंहपुर पुलिस ने बाल कल्याण समिति (सीडब्ल्यूसी) के एक सदस्य को गिरफ़्तार किया है, जो पिछले छह महीनों से बाल विवाह, बाल श्रम, यौन शोषण और बाल अधिकारों के ख़िलाफ़ लड़ने वाली सामाजिक संस्था रुचिका चाइल्ड लाइन की एक महिला सदस्य के साथ यौन उत्पीड़न, यौन उत्पीड़न, दुर्व्यवहार और दुर्व्यवहार जैसे अपराध कर रहा था।पुलिस और प्रशासन ने इस घटना को बेहद गंभीरता से लिया है। चूँकि युवती ने पहले भी डीसीपीओ और सीडब्ल्यूसी अध्यक्ष से बार-बार शिकायत की थी, लेकिन उन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की, इसलिए पीड़िता ने ज़िला कलेक्टर से शिकायत की और पुलिस को सूचित किया। बालासोर एफएम कॉलेज की तरह पीड़िता की शिकायत को अहमियत क्यों नहीं दी गई और डीसीपीओ और सीडब्ल्यूसी अध्यक्ष ने कोई कार्रवाई क्यों नहीं की,

इसने एक बार फिर व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं।प्राप्त जानकारी के अनुसार गिरफ्तार आरोपी सीडब्ल्यूसी सदस्य विवेकानंद बाला है। जब शिकायतकर्ता कटक निवासी थी, तब वह जगतसिंहपुर सिटी सीपी में रुचिका चाइल्डलाइन के कार्यालय में काम करता था। वह वहीं रहता भी था। रुचिका चाइल्डलाइन बाल श्रम या बाल विवाह के मामलों में बचाए गए पीड़ितों/पीड़ितों को सीडब्ल्यूसी के पास लाती है। सीडब्ल्यूसी सदस्य विवेकानंद बाला उस समय पीड़िता को जानते थे। इसी तरह डीसीपीओ कार्यालय भी इसी विभाग के साथ मिलकर काम करता है। आरोपी विवेकानंद पिछले फरवरी से पीड़िता के कार्यालय से सटे घर में जा रहा था। वहां उसने उसके साथ दुर्व्यवहार किया। पीड़िता ने उस पर बलात्कार का प्रयास करने का भी आरोप लगाया है। पीड़िता ने उस समय की तस्वीरें भी अपने मोबाइल पर ली हैं जब वह यौन उत्पीड़न के लिए पीड़िता के शरीर पर मार रहा था। कुछ वीडियो भी हैं। इसे सबूत के तौर पर पुलिस को सौंप दिया गया है। आरोप है कि वह न केवल कार्यालय में बल्कि सड़कों पर भी दुर्व्यवहार और बदसलूकी करने की कोशिश कर रहा है लेकिन उन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की और आज उसने जिलाधिकारी और एसपी से मिलकर उन्हें मामले की जानकारी दी। जिलाधिकारी और एसपी द्वारा पीड़िता को थाने जाने की सलाह देने के बाद उसने शिकायत दर्ज कराई। सूचना मिलने पर भुवनेश्वर से रुचिका चाइल्ड लाइन की अधिकारी जगतसिंहपुर थाने पहुँचीं। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है। बताया गया है कि गिरफ्तार सीडब्ल्यूसी सदस्य विवेकानंद बल के खिलाफ जल्द ही विभागीय कार्रवाई की जाएगी।

खण्डवा वाले किशोर दा के गाएं गीत आज भी दिलों के करीब है।

स्वतंत्र लेखक - हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

'खण्डवा वाले किशोर दा का मध्य-प्रदेश से जो नाता रहा है । वह सभी को मालूम है, गीत संगीत कला की इस धरा जहां की महान कलाकारों ने यहां जन्म लिया। यहां से एक से बढ़कर एक कलाकार सिनेमा और मनोरंजन की दुनिया में समय-समय पर शीर्ष हस्ताक्षर हुए। इस बात का हमें गर्व होना चाहिए कि सलीम खान, जानी वाकर, ज़ावेद अख्तर, जया बच्चन, गोविन्द नामदेव, पंडित रघुनाथ सेठ, सनमान खान, व भारत रत्न लता मंगेशकर और हरफनमौला कलाकार किशोर कुमार आदि ।कितने ही कलाकारों ने अपनी सृजनात्मकता में मध्यप्रदेश समहित है । क्योंकि मालवा निमाड़ ही नहीं पूरे मध्यप्रदेश की माटी की महक ने इन सभी रत्नों को शिखर पर पहुंचाया है। गीत संगीत के लिए हमेशा से सार्थक प्रयासों के जरिए भारत का नाम रोशन किया। हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री के पार्श्वगायक व सदाबहार अभिनेता जो हमेशा से अपनी गायकी में यही कहते रहे कि ज़िन्दगी के सफर में गुज़र जाते वहां मुकाम वह फिर नहीं आते...। वो जाने वाले जरूर वापस नहीं आते पर उनकी यादें संस्मरण हमेशा स्मृतियों में यूं ही याद आ ही जाती हैं। ऐसे ही हरफनमौला कलाकार थे किशोर कुमार जिनके जन्म दिवस पर उनकी याद आ गई है।

फिर वही रात है फिर वहीं रात है ख्वाबों की , रात भर ख्बाबों में देखा करेंगे। ऐसी आवाज के मसिहा वहां फंटूश चल पढा मंजिल की तालाश में जिद्दी बनकर । वहां प्रसिद्ध गायक के एल सहगल जी से कभी प्रभावित थे । तभी तो उन्होंने एक गीत ऐसा भी गया जिसके बोल थे , दुःखी मन मेरे सुन मेरा कहना ।ऐसे गाने गाते हुए आगे बढ़ते रहे और उसके बाद अपना सर्वक्षेष्ठ देने की पूरी कोशिश उन्होंने योडंलिग और अपनी विभिन्न आवाजों के मध्यम से गीतों में जान डाल देते थे। निर्माता खेमचंद प्रकाश जी ने उन्हें पहला मौका दिया वह गाना था , मरने की दुआं क्यों मांगू गया। वह दौर फिल्म जगत के लिए स्वर्णिम वर्षों में रहा था । सफलता के लिए जब एक से एक महान व मशहूर नामचीन कलाकारों व दिग्गज अभिनेताओं के बीच दादा मुनि यानि अशोक कुमार जी ने अपने छोटे भाई अभास कुमार गांगुली यानि किशोर कुमार को वह फिल्मों में अभिनेता बनना चाहते थे। वहीं किशोर दा ने गायन में कुछ ऐसा कमाल दिखाया कि सब चक्रित रह गये ।अभिनेता के रूप में उन्होंने बहुत सी हिन्दी फिल्मों में काम जरूर किया पर फिल्म हाफ टिकट जिसमें वह कभी छोटा बच्चा बन दशकों को हंसता थे और कई चेहरों पर चहेरा लगते थे वह किरदार अंतरंगी था । किशोर कुमार हमेशा से नायक नहीं बनना चाह थी ।पर अपने बड़े भाई का मान सम्मान करते हुए उन्होंने फिल्म अभिनेता बनना स्वीकार किया। वहीं अपने बड़े भाई अभिनेता अशोक कुमार के साथ वह चलती का नाम गाड़ी में लोगों को अपने भाईयों के साथ बम्बई (मुंबई) की सड़कों पर निकलते हुए कहते , कि बाबू समझों इशारें होर्नर पुकारें पम पम पम..। खण्डवा मध्यप्रदेश में 4 अगस्त 1929 में जन्मे पिता कुंजीलाल गांगुली की चोथे नम्बर की संतान वह थे। सबसे बड़े भाई अभिनेता अशोक कुमार मुंबई नगरी में फिल्मों के स्टार कलाकार बन चुकें थें। वहीं किशोर दा खण्डवा की दुध जलेबी खाते खाते बड़े हो रहे थे। पिता खण्डवा मध्यप्रदेश के मशहूर वकील थे । उन्होंने उन्होंने अपने बेटे अभास को यानि किशोर दा को उच्च शिक्षा के लिए इन्दौर भेज दिया। इन्दौर के क्रिश्चियन कॉलेज में वह वर्ष 1946 में बीए प्रथम वर्ष के छात्र के रूप में पढ़ाई कर रहे थे। वह अपनी मस्ती में मस्तमौला देश दुनिया से बेखबर कालेज लाइफ का आनंद ले रहे थे। पढ़ाई के प्रति उनकी ऐसी कोई खास रुचि नहीं थी। वह गीत संगीत , गाना बजाना और मित्र मण्डली को इकट्ठा कर शुरू हो जातें थें। कालेज के होस्टल में रुम नम्बर चार में वह रहते थे। इन्दौर क्रिश्चियन कॉलेज का होस्टल में वह रुम भी संगीत की प्रेरणा से ओतप्रोत संस्मरणों में हमेशा से ही रहा ।क्योंकि वह किताबें बहुत कम वह हरमोनियम व तबला पेंटी के संगीत के वह सात सुरों के सजो समान में ही वह सुरों को किशोर दा वहीं तलाशते रहते थे। उस समय उनकी वह मंजिल दूर गगन की छांव में ही थी , पर वह यहां जानते थे तभी तो वह कालेज में पढ़ाई के बाद कालेज परिसर के मैदान में स्थित इमली के पेड़ के नीचे बैठ कर सुर ताल व संगीत की लहरियों में वह अपनी जिंदगी में मंजिल की तालाश में उंमगता के साथ आनंद लेते रहे। तभी तो ताउम्र कालेज के संस्मरणों को कभी भी भूला नहीं पाये ।वहीं कालेज की कैंटीन में जा कर जलेबी पोहे समोसे कचोरी खुद भी खाते और दोस्तों को भी खिलाते थे। वहां क्रिश्चियन कॉलेज इन्दौर में काका की कैंटीन जो इतनी ज्यादा मशहूर हों गई थी कि किशोर कुमार हमेशा उसे याद किया करते थे ।उन्हीं पुरानी यादों में काका जब किशोर से बोलते अरे मेरी उधारी के पैसे दे दो। उस समय 10 -20 पैसे की उधारी भी बहुत बड़ी होती थी। उधारी के लिए काका बार बार उन्हें बोलते ला मेरे पैसे किशोर , उसी केन्ट्रीन में टेबल गिलास व चम्मच लेकर बजा बजाकर गाते पांच रुपया बरहा आना की धुन निकलते। आगे चलकर इस गीत व संगीत को अपनी फिल्म में भी उन्होंने परदे पर दिखाया। जो बहुत ही सुपरहिट गीत बना और मशहूर भी हुआ। उस समय कालेज की पढ़ाई कों अधूरी छोड़ कर वह माया नगरी बम्बई चले गए ।जहां वह शुरुआत में उन्होंने 81 से ज्यादा फिल्मों में भी अभिनय किया। उसमें लोकप्रिय अभिनेत्री मधुबाला के साथ झुमरू व हाफ टिकिट में काम किया उन्होंने निर्देशन भी किया था। पर उनका असली पढ़ाव अभिनय नहीं था वह तो संगीत गायन के क्षेत्र में आगे आना चाहते थे। एस डी बर्मन दा ने उन्हें जब मोका दिया तो उनके मार्गदर्शन में ही कभी हिट गाने गाए और उसके बाद उनके सुपुत्र आर डी बर्मन (पंचम दा) के साथ भी लगातार वर्षों तक हिट पे हिट देते रहे थे ।हिन्दी फ़िल्मों व उनके गाने लिक से हट कर थे , जिसकी लम्बी फेहरिस्त है। जिसमें उन्होंने 110 से ज्यादा संगीतकारों के साथ काम किया और सन 1940 से 1987 के बीच में अपने केरियर के दौरान 2700 से भी अधिक गाने गाए जो एक रिकॉर्ड ही है ।

कई भारतीय भाषाओं में उन्होंने गाने गाए और 8 फिल्म फेयर पुरस्कार जीतें। ऐसा माना जाता है कि कुछ हरफनमौला कलाकारों का जीवन उनकी कहानी सतरंगी के साथ अतरंगी भी होती है। सब कुछ होने के बाद भी कभी कभी जिंदगी में कुछ जगह ख़ाली पन की रहे हीं जाती है। गायन अभिनय निर्देशक गीतकार किशोर कुमार ने चार शादियां की थी रुमा घोष , मधुबाला, योगिता बाली, लीला चंदावरकर से शादी की , बच्चें अमित कुमार व सुमित कुमार ।जब किशोर दा की चोथी शादी हुई थी तब उनका बड़ा बेटा अमित व लीला चंद्रावरकर की उम्र में दो साल का फर्क था। किशोर कुमार ने अपने बच्चों की परवरिश में कोई कोताही नहीं बरती तभी तो अमित कुमार भी स्थापित गायक बने। क्योंकि किशोर दा की उंगली पकड़कर अपने बाबा ने साथ चलते हुए उन्होंने कहा आ चल के तुझे में लेके चलूं एक ऐसे गगन के तले जहां गम भी ना हो आंसू भी ना हो बस प्यार ही प्यार पले.... ।गहरी बातों को उन्होंने अपने बच्चों को बताया था। लता आशा व किशोर की सदाबहार जोड़ी उस समय बहुत हिंट हुआ करती थी। जो आज भी वह गीत सदाबहार व कर्णप्रिय है जिसे आज भी उन गीतों को सुनकर तबीयत खुश हो जातीं हैं। दर्द भरें गाने में दिल ऐसा किसी ने मेरा तोड़ा... हो या फिर मेरा जीवन कोरा कागज कोरा ही रहे गया। यह फिर शराबी फिल्म का गीत मंजिलें अपनी जगह है रास्ते अपनी जगह...। इन गानों में बहुत सारी बातें कही। ऐसे तो किशोर दा ने आपात काल का वह प्रतिबंध झेला था जब तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री विद्याचरण शुक्ला ने किशोर कुमार के गीतों को आकाशवाणी में प्रतिबंधित कर दिया था। उनकी फिल्में भी आयकार विभाग ने जब्त कर रखीं थीं। पर उस हरफनमौला कलाकार ने इसकी परवाह नहीं कि ओर आगे बढ़ते रहे ।यहां कहते रहे कि दीए जलते हैं फूल खिलते हैं बड़ी मुश्किलों से दुनिया में दोस्त मिलते हैं। लगातार गायकी के क्षेत्र में बिना सीखें सिर्फ आत्मचिंतन से कुछ नया करने का अंदाज ही उन्हें महान कलाकार बना दिया । गाइड में शानदार प्रदर्शन के बाद अराधना में राजेश खन्ना व उनके बाद एंग्री यंगमैन अमिताभ बच्चन के लिए भी किशोर दा बहुमूल्य रत्न के समान थे। तभी तो मुकद्दर का सिकंदर में वह गाना गाते हुए कहते थे , रोते हुए आते हैं सब हंसता हुआ जो जाएगा वह मुकद्दर का सिकंदर जाने-माने कहलायेगा। आज उन्हीं हरदिल अजीज कलाकार की 96 वी जन्म जंयती है । इसलिए सिर्फ एक बात याद आ रही है कि अब दुनिया में कोई और किशोर कुमार नहीं आयेगा। जो अपनी जन्मभूमि का प्यारा होगा, हर समय हर कार्यक्रम में जो खण्डवा वाले किशोर कुमार का नाम जपेगा। जो अपनी शिक्षा स्थली से प्रभावित होगा और गानों में वहां के काका की बातों शेयर करेगा यहां इमली के पेड़ के नीचे अपनी संगीत साधना की बात करेगा , जो अपनी कर्मभूमि पर सात सुरों के जादू को बिखेरेगा। वह सतरंगी सुरों के मसीहा बन आसमान में सितारों की तरह हमेशा से चमकते रहेंगे। ऐसे बिरले व्यक्ति बहुत कम होते हैं जो गीत संगीत व गायकी में अपना अलग अंदाज छोड़ जाये ऐसे किशोर दा को सुरों के चाहने वाले कभी भी नहीं भूला पायेंगे। उनके जन्मदिन पर हम सभी उनके गाने सुनें और गुनगुनाएं यही उन्हें हम सभी का जन्मदिन पर तोहफा होगा । किशोर दा का जीवन सतरंगी सुरों के ईर्द-गिर्द ही रहा। फ़िल्म गाईड का गाना 'गाता रहे मेरा दिल या फ़िल्म सौतन का ' ज़िन्दगी प्यार का गीत है यह फिल्म अंधा कानून का वह गाना रोते रोते हंसना सीखो हंसते हंसते रोना जितना चाबी भरीं राम ने उतना चलें खिलोना। किशोर कुमार के बारे में जितना लिखा जाए कम है। उनके गाएं गानों में गहन अर्थ होते है। किशोर दा ने ऐसे कई गाने गाए हैं जो जीवन के कुछ घटित होने वाले अहसासों को जन्म देता है। सही में वह फिल्मी दुनिया के एक मसीहा ही थें। पड़ोसन फिल्म में सुनील दत्त के साथ अभिनय करके हास्य फिल्म में एक अलग मुकाम क़ायम किया था। मन्नाडे व किशोर कुमार की जुगलबंदी एक चतुर नार बड़ी होशियार मेरे मन द्वार जैसें गाने कभी भी भूलें ना भूलाया जायेगा ।किशोर दा के सभी गीत उनकी आवाज हमेशा से हमारे दिलों के करीब रहेंगी। वहां आवाज की दुनिया के जादूगर ही थे जो हमारे बीच गीत संगीत के जरिए हमेशा से हम संगीत प्रेमियों के पास रहेंगे ।।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023